ॐ

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।

उठो अर्जुन - 1

राम मंदिर तुम्हें पुकारता

03_07

मानोज रखित

मेरा नाम **मा** से प्रारंभ होता है, जो है नारायणी माँ भवतारिणी के प्रति समर्पण का प्रतीक। इसे मनोज का अपभ्रंश न समझें, जो होता है कामदेव का प्रतीक।

© मानोज रखित 2003

प्रथम हिंदी संस्करण विजया दशमी 2003
प्रथम अँग्रेज़ी संस्करण नवम्बर 2003

अंतर्राष्ट्रीय मानक पुस्तक क्रमांक
ISBN 81-89746-03-0

हिंदी में प्रकाशित
पहली पुस्तक

संस्करण
प्रथम संस्करण में आवश्यक परिवर्तन एवं परिवर्धन के साथ प्रस्तुत सप्तम संस्करण, प्रतियाँ 2000, नवम्बर 2006 - 5 संस्करण मुम्बई से एवं 2 संस्करण पूर्णियाँ (बिहार) से प्रकाशित।

मूल्य

लेखक, प्रकाशक, वितरक, तथा
परिकल्पना, शोधकर्म, संकलन, लेखन-टाइपिंग, संपादन, डी-टी-पी, प्रूफ रीडिंग, मुद्रण व्यवस्था, वित्त प्रबंध, पैकिंग, प्रेषण, अभिलेखन, वेबसाइट विकास, ब्लॉगस्पॉट विकास
मानोज रखित, 8-604 डिस्कवरी, दत्तपाड़ा मार्ग, बोरीवली पूर्व, मुम्बई 400 066
मोबाइल फोन +98 69 80 90 12
वायरलेस फोन (022) 64 51 30 51
ईमेल maanojrakhit@gmail.com
वेब-साइट http://www.maanojrakhit.com
ब्लॉग-स्पॉट http://maanojrakhit.blogspot.com

उत्तर एवं मध्य भारत में संपर्क-सूत्र
श्री रवि कान्त खरे (बाबाजी), DS-13 निराला नगर, लखनऊ 226 020, फोन 0522-2787083
श्री महेश चन्द्र लखनऊ +9235552983 सुश्री शची रैरिकर इन्दौर +9893567122
डॉ मनीष परिहार उन्नाव +9415934778 श्री मुरारी पचलंगिया गुड़गाव (0124) 5578665

मुद्रण
देवेन्द्र वारंग, आइडियल प्रेस, अम्बावाडी, दहिसर पूर्व, मुम्बई 400 068, मो 98 92 07 54 31

विषय-वस्तु

मेरी चेष्टायें आपको अर्पित 4
श्रीकृष्ण बोले - हाँ, आज मैंने शस्त्र उठाया है 14
आपका प्रथम युद्ध क्या और किससे है? 16
वह हिन्दू, जो तटस्थ ही रहना चाहता है, क्योंकि 17
कहाँ से आरम्भ हुई यह कहानी 20
ललकार 21
1 - इतिहास साक्षी है 23
2 - अयोध्या में खुदाई के प्रमाण साक्षी हैं 31
3 - न्यायालयों की अकर्मण्यता साक्षी है 35
4 - ग्यारहवीं शताब्दी का श्री विष्णु-हरि का शिलालेख 39
5 - क्या था सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय? 40
6 - धर्मनिरपेक्षता की आड़ में 43
7 - इस सारे समस्या की जड़ कहाँ है? 50
8 - आपको आश्चर्य तो होगा जानकर 58
उपसंहार 63
आज का अर्जुन 64
परिशिष्ट 65
किस दृष्टि से देखा मैंने अन्य धर्मों को 67
संदर्भ सूची 70
अन्य प्रकाशन 71

कॉपीराइट में सीमित छूट

बिना किसी परिवर्तन के -

1) पत्र-पत्रिकाओं में 'धारावाहिक' रूप से प्रकाशित कर सकते हैं, जन-जागरण के उद्देश्य से। प्रकाशन की एक प्रति मुझे भेजना नहीं भूलेंगे।

2) फोटोकॉपी निकाल कर वितरित कर सकते हैं, जन-जागरण के उद्देश्य से।

3) स्थानीय भाषाओं में 'अनुवाद' कर, स्थानीय भाषाओं की पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित कर सकते हैं, जन-जागरण के उद्देश्य से। प्रकाशन की एक प्रति मुझे भेजना नहीं भूलेंगे।

4) टाइपिंग एवं प्रूफ-रीडिंग के समय तारीखों एवं संख्याओं पर विशेष ध्यान दें ताकि गलतियाँ न रह जायें।

वन्दना त्रयी

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।

प्रथम पूजा के अधिकारी एवं ज्ञान के देवता श्री गणेश की स्तुति में

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता या
वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर् देवैस्सदा पूजिता
सा माम् पातु सरस्वती भगवती निश्शेषजाड्यापहा।।

कला एवं विद्या की देवी माँ सरस्वती की स्तुति में

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुस्साक्षात परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

गुरुओं के गुरु, अंतिम गुरू ब्रह्मा-विष्णु-महेश की स्तुति में

समर्पण

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैवा, बुध्यात्मना वा प्रकृते स्वभावात।
करोमि यद्यद् सकलं परस्मै, नारायणायेति समर्पयामि।।

शरीर, वचन, मन, इन्द्रिय, बुद्धि, आत्मा, प्रकृति, स्वभाव से मेरा सम्पूर्ण अस्तित्व
श्रीनारायण के चरणों में समर्पित है

मेरी चेष्टायें आपको अर्पित

14-12-2005 "आपकी पुस्तकें 'राम मंदिर तुम्हें पुकारता' एवं 'उठो अर्जुन भाग-1' भी प्राप्त हुई थीं। उनका अध्ययन करने से मन गद्‌गद हो गया। सही है कि बिना अपने अन्दर तेजस्विता लाये कुछ नहीं हो सकता। सत्य को आत्मसात करना वांछित है। यथार्थ एवं वास्तविकताओं को नज़रअन्दाज़ नहीं किया जा सकता। सामान्य जनता बहुत सी बातों से अनभिज्ञ है। उस तक ऐसा साहित्य पहुँचना चाहिए। मैं गाँवों का भ्रमण करना और वहाँ इस प्रकार का साहित्य वितरित करना जरूरी समझता हूँ। विशेषकर नवयुवकों एवं नवयुवतियों को इस प्रकार के साहित्य से परिचित कराना आवश्यक है। 'राम मंदिर तुम्हें पुकारता' की तीन पुस्तकों (संस्करण 1, 2, 3) के आवरण पृष्ठ पर अंकित सन्देश/अभिव्यक्ति को मैं अपनी पुस्तक 'दोषी कौन? उपचार क्या?' में छाप रहा हूँ।

मैं आपकी भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूँ, आपकी कर्मठता का आदर करता हूँ और आपकी लेखनी का समादर करता हूँ। चाहता हूँ कि इसी प्रकार निर्भिकता से लिखते रहें। प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु आपको स्वस्थ रखें और दीर्घायु करें।

ISBN 81-89746-03-0 पुस्तक क्रमांक 03 संस्करण 07

देश व समाज के लिए आप द्वारा सृजित साहित्य की बड़ी उपादेयता है। सौभाग्यवश ही मैं आपके साहित्य से परिचित हुआ। मै आप द्वारा प्रेषित पुस्तकों के लिए आभारी हूँ। अंग्रेजी में लिखी पुस्तकें भी देखना चाहूँगा।

न मैं बन्दा न खुदा था मुझे मालूम न था।
दोनों इल्लत से जुदा था मुझे मालूम न था।।

29-1-2006 "थोड़ा ठीक महसूस करने पर आपकी पुस्तक 'राम मंदिर तुम्हें पुकारता' पढ़ी। इस शोधपूर्ण उत्तम पुस्तक की प्रस्तुति के लिए साधुवाद। पुस्तक तथ्यपूर्ण होने साथ ही रुचिकर एवं प्रेरक है। इसे पढ़ कर मन उद्वेलित हुआ। काश, हिंदू जागें और अपने आप को पहचानें! उन्हें सचेत करने के लिए यह एक ही पुस्तक काफी है। परन्तु जो जागना ही न चाहे, सचेत होना ही न चाहे, अपने को जानना ही न चाहे और अपने को पहचानना ही न चाहे तथा सत्य से परिचित ही न होना चाहे, उसके लिए ऐसी हजारों लाखों पुस्तकें भी बेकार हैं। फिर भी लिखना और जगाना हमारा धर्म है, कर्तव्य है और काम है जिसे हम जारी रखेंगे चाहे कोई चेते या न चेते।

जानकारियाँ तो बहुत इकट्ठा हो जाती हैं, किन्तु जानने वाले को ही हम नहीं जान पाते, क्योंकि उसे जानने की हमारे अन्दर प्रबल जिज्ञासा पैदा नहीं होती और हम कोई प्रयास भी नहीं करते। दृढ़ता से बस इतना ही मानना है कि ईश्वर है, वह कैसा है इसका विचार छोड़कर। निर्भीकता से, निश्चय पूर्वक एवं संशयरहित होकर मानना व कहना पड़ेगा कि हम हिन्दू हैं, जैसे कि मुस्लिम मानते हैं कि पहले वे मुसलमान हैं, फिर और कुछ। राम मंदिर निर्माण के बीच जान बूझ कर विवाद खड़ा किया गया है। बाबरी मस्जिद के लिए आँसू बहाने का कोई औचित्य नहीं है, फिर भी स्वार्थवश कतिपय हिन्दू भी मुस्लिमों के साथ मातम मनाते हैं। राम मंदिर का पक्षधर होने का पूरा पूरा औचित्य है, किन्तु उधर कतिपय हिन्दू संवेदनशील नहीं हैं। उन्हें सत्य से कुछ लेना-देना नहीं है। फिर भी हमें वास्तविकता प्रस्तुत करते रहना है। आप यह पुनीत कार्य निःस्वार्थ भाव से कर रहे हैं, यह बहुत बड़ी बात है। ऐसा काम बिना प्रभु की प्रेरणा के कोई कर ही नहीं सकता। आपकी कलम प्रभु की प्रेरणा से चल रही है। इस कार्य के लिए प्रभु ने आपको माध्यम के रूप में चुना है। मेरी प्रसन्नता इसी में असीमित रूप से निहित है। हम एक ही रास्ते के राही हैं। प्रभु ने ही हमें मिलाया है। जब लोग बुरे काम कर रहे हैं और गुरेज नहीं कर रहे हैं, तो हम अच्छे काम क्यों न करें और उससे गुरेज क्यों करें! हम अपना काम बन्द नहीं करेंगे come what may! बस! यही हमारा संकल्प हो!

श्री रवि कान्त खरे (बाबाजी) (आयु 72), डी एस 13, निराला नगर, लखनऊ, उ प्र 226 020

11-3-2006 "आपकी अनुपम सर्जना 'राम मंदिर तुम्हें पुकारता' श्री खरे (रविकान्त जी) बाबाजी द्वारा प्राप्त हुई। राममन्दिर आन्दोलन आज राममन्दिर तक ही नहीं रहा, यह राष्ट्र की संस्कृति का स्वाभिमान और अस्मिता को लिए हुए प्रत्येक देशभक्त युवा को उठकर खड़े हो जाने का आन्दोलन था।

आपकी कृति बहुत ही प्रेरणा वाली है। अलग-2 सन्दर्भों सप्रमाण तथ्यों से सुसज्जित पुस्तक पाकर हार्दिक खुशी हुई, खरेजी - लखनऊ - इनका स्नेह सतत मिलता आ रहा है। राम मन्दिर आन्दोलन में आगरा का सेन्ट्रल जेल सात दिनों तक निवास रहा - राजस्थान के प्रमुख

आन्दोलनकारी भी वहीं थे। राजनीतिक दाँव-पेचों में पड़कर यह राममन्दिर आन्दोलन शिथिल सा होता नजर आ रहा है।

राममन्दिर सुदीर्घ लम्बे संघर्ष की गाथा का प्रतीक स्तम्भ है। 'क्या कहती सरयूधारा' शीर्षक से पुस्तक प्राप्त की थी, विशद-संघर्ष गाथा तथ्यों सहित अनथक श्रम से सृजित की गयी है।

अपने देश की अस्मिता संस्कृति और राष्ट्रीयता को कहीं बाहर से खतरा नहीं है, अपने ही तथाकथित नामधारी हिन्दुओं से ही है, जो मात्र धन इकट्ठा करने में अन्धे हो चुके हैं। राष्ट्र समाज संस्कृति ऐसों के लिए कुछ भी मायने नहीं रखती। ऐसों की संख्या इस वैश्वीकरण के दौर मे सतत बढ़ती जा रही है।

आप जैसे हृदयवान राष्ट्रीयता की ऊर्जा से भरपूर सतत राष्ट्र की अस्मिता को लेकर चिंतित हैं, अतएव यह राष्ट्र पुनः उठ खड़ा होगा।

वैदिक आध्यात्मिक उन्नति एवं विश्व-शान्ति हेतु हम भी यथा सामर्थ्य पूर्वक कृत संकल्प होकर क्रियाशील हैं। हमारी अन्य गतिविधियों का संक्षिप्त मिशन पत्रक साथ संलग्न है। आपकी अनुपम सर्जना हेतु पुनः हार्दिक साधुवाद।

आचार्य (श्री अवस्थी) जी की अनुमति से, मिशन के वास्ते, कृते कार्यालय सचिव, पत्रांक 387/06, वैदिक अध्यात्म चेतना मिशन, पिपराली रोड, सीकर, राजस्थान 332 001, फोन (01572) 242 914

पाठकों से अनुरोध है कि यदि किसी के पास *'क्या कहती सरयूधारा'* नामक पुस्तक उपलब्ध हो तो एक प्रति मुझे भेजने की कृपा करें।

मानोज रखित, डिस्कवरी 7-11-2006

9-2-2006 "राम मंदिर के संदर्भ में आपने जो सत्य उद्घाटित किया है, वही एकमात्र सत्य है। सरकार, न्यायपालिका इच्छा शक्ति के अभाव में इस विषय को लटकाये रखकर केवल राजनीति करना चाहती है। इन्हें हिन्दू जनता की भावनाओं का आदर नहीं करना है। आजादी के बाद तो कई मुद्दों पर हिन्दुओं की भावनाओं को ठेस पहुँचायी जाती रही है।

आपकी पुस्तक की विषय-वस्तु से मैं भी विगत दशकों से जुड़ा रहा हूँ। वस्तुतः राम मंदिर हम सबको पुकार रहा है। राम जन्मभूमि का उद्धार नये भारतीय इतिहास का सृजन करेगा और हमारी आस्था में चार चाँद लगायेगा। पुस्तक के रूप में विषय-वस्तु को समायोजित करने के लिए हार्दिक धन्यवाद।

17-8-2006 "राम मंदिर तुम्हें पुकारता की मूल रूप प्रति (जुलाई 2006 संस्करण) प्राप्त। हार्दिक धन्यवाद। राम मंदिर का पुनर्निर्माण हमार आस्था का प्रश्न बन गया है। इस आस्था को तोड़ने की साजिश रची गई है, सैंकड़ों वर्षों से - जिसका आपने अपने पुस्तक के माध्यम से पर्दाफ़ाश किया है। छद्म धर्म निरपेक्षता का राग अलापने वाले सारे माध्यम वास्तविकता को झुठलाने में संलग्न हैं और जनता तक सही बातें पहुँचने नहीं देते। ऐसे में आपकी पुस्तक की उपादेयता बढ़ गई है। ऐसी बातों को जानकर जनता आश्चर्य चकित रह जायेंगी कि हमारी प्रजातांत्रिक सरकारें किस प्रकार राम मंदिर के निर्माण की जनभावना का निरादर कर रही है। धार्मिक जनास्था को

ISBN 81-89746-03-0 पुस्तक क्रमांक 03 संस्करण 07

राजनीतिक जनास्था क रूप देने के कारण ऐसा हो रहा है। राम हमारे राष्ट्रीय महापुरुष भी हैं। राम मंदिर की पुकार आज के समय का कटु सत्य है। इसे सबको स्वीकार करते हुए मंदिर निर्माण के सद्प्रयास में जुट जाना चाहिए।

डॉ जनार्दन यादव, लेखक एवं पत्रकार, ग्राम + पोस्ट नरपतगंज, जिला अररिया, बिहार 854335

25-3-2006 "आपकी पुस्तक 'राम मंदिर तुम्हें पुकारता' श्री रविकान्त खरे (बाबाजी) से मिली। पुस्तक को मैंने गम्भीरता से आद्योपान्त पढ़ा। मैं चकित हूँ पुस्तक में दिए गए प्रमाण एवं संदर्भों से। साथ ही आपकी प्रतिभा, निर्भयता एवं भारतीय संस्कारिता ने मुझे गद्गद् कर दिया है। सर्व समर्थ दयालु प्रभु ने प्रेरणा देकर आपको राम क्रान्ति का अग्रदूत बनाकर इसके निमित्त अपना संकल्प पूरा करने का उद्घोष किया है। सफलता निश्चित है। मैं अभी तो औपचारिक रूप से सद्भावपूर्ण ये पंक्तियाँ ही लिख रहा हूँ। विशेष आपका पत्र आने पर विचार विमर्श हो सकेगा।

डॉ ब्रजमोहन शर्मा, 20 ए, प्रताप नगर 2, टोंक फाटक, जयपुर, राजस्थान 302 015

14-3-2006 "आपकी पुस्तक 'राम मंदिर तुम्हें पुकारता' मिली। पूरी पुस्तक पढ़कर तुम्हारे हृदय की पुकार तथा मन की पीड़ा का आभास मिला। श्रीमद्भगवदगीता के उद्धरणों को अपनी चेतना के अनुसार आपने समझा है। प्रेरणा दायक हैं।

हिन्दू समाज तथा ईसाई व इस्लाम में बुनियादी अन्तर है। ये दोनों सम्प्रदाय बुनियाद में ही व्यवसाय तथा भौतिक भोग के आधार पर खड़े हैं। इनकी व्यक्तिगत या सामाजिक जीवन की आचार संहिताओं का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। दोनों सम्प्रदायों में राज्य तन्त्र और अर्थ तत्व ही प्रभावी है। दोनों सम्प्रदायों में धर्म तत्व दूसरे स्थान पर है।

हिन्दू समाज की सभी आचार संहितायें धर्म तत्व पर आधारित हैं। राज्य तन्त्र और अर्थ तत्व को धर्म तत्व के नियन्त्रण में रखने की विधा का विकास हो रहा था। इस विधा को प्रभावी बनाने के लिए समाज में वर्णाश्रम के क्रमिक विकास की प्रक्रिया को अपनाया गया था। वर्णाश्रम की विधा को देश काल पात्र के संदर्भ में विकसित नहीं किया। व्यक्ति के लिए ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास के क्रमिक विकास को अपनाया गया था। इसका अर्थ यह होता है कि अध्ययन अध्यापन के बाद व्यवसाय में लगें, उत्तम संतान समाज को दें, इसके बाद पारिवारिक दायित्व से मुक्त होकर अपना व्यवसाय सन्तान को सौंप कर अथवा सन्तान को स्वावलम्बी बनाकर अपने अनुभव का लाभ वानप्रस्थ अवस्था में समाज को दें। वानप्रस्थ के सामाजिक दायित्व से मुक्त होकर निर्भय, निर्वैर और निष्पक्ष भाव से सन्यास आश्रम में प्रवेश करके, राज्य तन्त्र व अर्थ तत्व को देश-काल-पात्र के सन्दर्भ में व्यक्ति, समाज व प्रकृति के मध्य धर्म तत्व के आधार पर संतुलित बनाये रखने का मार्ग दर्शन, दिशा दर्शन एवं नियन्त्रण करें।

वर्तमान समय में हिन्दू समाज ने उपरोक्त विधा का परित्याग कर दिया है। इस्लाम व ईसाई सम्प्रदायों की तर्ज पर हिन्दू समज के धर्म पुरुष, सन्त महात्मा, धर्माचार्यों ने भी पूरी तरह से व्यवसायिक और भौतिक भोग का रास्ता पकड़ लिया है। हिन्दू जमात के साधारण नागरिकों ने ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास की विधा को छोड़ दिया है। परिणाम स्वरूप धर्म क्षेत्र में बेरोजगार, कुण्ठाग्रस्त, उपेक्षित और अवसरवादी व्यक्ति हावी हो गये हैं। समाज और राज्यतन्त्र

का दिशा दर्शन करने की इनकी शक्ति कुंठित हो गई है। ज्ञान और वैराग्य का उपदेश देकर अपनी गुरुडम स्थापित करके धर्म तत्व को व्यवसाय तथा भोग साधन प्राप्त करने का माध्यम बना लिया है। इस परिस्थिति ने हिन्दू समाज की जड़ों को खोखला बना दिया है। हिन्दू राष्ट्र की बात करने वाले जितने भी संगठन हैं वे राज्य सत्ता और धन सत्ता पर आधिकार प्राप्त करने के लिए हिन्दू समाज का तथा हिन्दू नाम का शोषण करते हैं। हिन्दू कोड बिल, तथा हिन्दू टैम्पिल एक्ट ने हिन्दू समाज को पूरी तरह से तोड़ दिया है। हिन्दू समाज का शोषण करने वाले समुदायों ने इस विषय में कभी सोचा भी नहीं। अब एक कानून बन रहा है कि अग्नि को साक्षी मानकर सात फेरों द्वारा हुए विवाह को तब तक वैधानिक नहीं माना जायेगा जब तक उसका कोर्ट में रजिस्ट्रेशन न हो।

मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि हिन्दू समाज का समस्त व्यवहार ईसाई और इस्लाम की तर्ज पर परिवर्तित होता जा रहा है। इस्लाम का प्रतीक चिह्न 'सूनत' तथा ईसाई का प्रतीक चिह्न 'क्रास' है। हिन्दू समाज का प्रतीक चिह्न 'शिखा' गायब हो चुका है।

हिन्दू समाज को संगठित और शक्तिशाली बनाने के लिए प्रबुद्ध गृहस्थों को सन्यास की दीक्षा लेकर धर्म तत्व को प्रभावी बनाने का काम करना होगा।

रामलला की जन्मभूमि पर बने नापाक ढाँचे को गिराने की जिम्मेदारी लेने में सब बगले झांक रहे हैं। मैने 1992 में ही सरेआम घोषणा की थी कि ढाँचा हमने गिराया है। तब मैं अखिल भारतीय सन्त समिति का राष्ट्रीय महा मन्त्री था - विश्व हिन्दू परिषद तथा राष्ट्रीय सेवक संघ की सभी संस्थाओं को हिम्मत से कहना चाहिए था कि ढाँचा हमने गिराया है। साथ ही यह भी कहना चाहिए कि उस ढाँचे को गिरा कर रामलला का मन्दिर हम बना रहे हैं। क्योंकि अनेक वर्षों से वहाँ रामलला की पूजा हो रही थी।

मुसलमान-संगठन आतंकी हमले करके उस हमले की जिम्मेवारी लेने की घोषणा स्वयं करते हैं।

मानोज जी, अयोध्या का ढाँचा गिराने की योजना तीन साल से बनायी जा रही थी, अखिल भारतीय सन्त समिति की पहल पर यह कार्य सम्पन्न हुआ था। विश्व हिन्दू परिषद ने पूरी शक्ति लगाकर अखिल भारतीय सन्त समिति को ही अपने राजनीतिक चालों से विखंडित कर दिया।

इस देश का दुर्भाग्य है कि अपने को हिन्दू कहने वाली जमाट हिन्दू विचार को व्यवहार में लाने से कतराती है। साधारण सी बात हिन्दू समाज में 'शिखा' को त्याग दिया है। अपने बच्चों को शिक्षा के लिए ईसाई स्कूलों में पढ़ाने में शान समझते हैं। सभी प्रमुख धर्माचार्य, सन्त-महात्मा विदेशी यात्रायें करके धन कमाने के उपक्रम में लगे हैं।

हिन्दू समाज की विचार-धारा को सारा संसार [1] प्रयत्नशील है परन्तु भारत का रहने वाला हिन्दू उस विचारधारा को अपनाने में अपने को हीन समझता है।

अ) विवाह से लेकर मृत्यु तक के संस्कारों को हिन्दू समाज छोड़ता जा रहा है, परिणाम स्वरूप भावी सन्तान संस्कारहीन होकर ईसाई और मुसलमानों की जीवन पद्धति कि ओर मुड़ जाता है।

ब) हिन्दू समाज में शाकाहार के प्रति उपेक्षा भाव पैदा हो गया है। अंडा का व्यवहार बढ़ रहा है

 ISBN 81-89746-03-0 पुस्तक क्रमांक 03 संस्करण 07

- मुर्गी, मछली, खरगोश पालन के धन्धे में हिन्दू समाज अग्रणी भूमिका निभाकर मांसाहार को बढ़ा रहा है।

स) जीविकोपार्जन के व्यवसाय को धनोपार्जन की दिशा में मोड़ देने से जीवन की सारी मर्यादायें समाप्त प्राय हो गईं हैं। भारत के प्रमुख एक हजार उद्योगपतियों में अधिकांश हिन्दू ही हैं परन्तु ये हिन्दुत्व की विचारधारा से कोसों दूर हैं। हिन्दू समाज के साधु, सन्त, धर्माचार्य आदि इस विषय में जाग्रत नहीं हैं, सभी में धनार्जन की स्पर्धा ने पारस्परिकता की उपेक्षा की है।

एक बात और लिख कर पत्र पूरा कर रहा हूँ। हिन्दू समाज को यशस्वी बनाने की आकांक्षा रखने वालों को गृहस्थ जीवन के बाद वानप्रस्थ और सन्यास की दिशा में बढ़ना चाहिए, क्योंकि आज जो साधु, सन्त, सन्यासी जगत में लाखों व्यक्ति हैं उनमें नैतिक बल सांस्कृतिक अस्मिता के नाम पर शून्य है। सभी साधारण व्यक्ति की तरह धन और यश प्राप्ति की प्रतिस्पर्धा में अपने कर्तव्य को भूले हुए हैं। राम जन्म भूमि के नाम पर जो धन संग्रह हुआ था उसका आज भी हिन्दू समाज के हित में उपयोग नहीं हो रहा है। जो सन्त महात्मा तथा हिन्दू जमात के प्रतिनिधि बन कर राज्य सत्ता में गये वे सभी भ्रष्ट हो गये हैं। इसलिए हिन्दू समाज के उत्थान की आकांक्षा रखने वालों को ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास की आश्रम व्यवस्था को पुनः जागृत करके सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों के लिए जीवन अर्पित करना होगा। विचारपूर्वक इस दिशा में सक्रिय होकर यदि एक-सौ व्यक्ति भी सामने आ जावें तो हिन्दू समाज की वैचारिक शक्ति के सामने सारे संसार को घुटने टेकने पड़ेंगे [2]। क्योंकि भौतिक विज्ञान के विकास ने जो प्रदूषण की समस्यायें पैदा कर दी हैं उनका समाधान केवल हिन्दू जीवन दर्शन के पास है, क्योंकि इस जीवन दर्शन में देश, काल, पात्र के सन्दर्भ में व्यक्ति, समाज और प्रकृति के मध्य सन्तुलन बनाने के अद्‌भुत और सामयिक सूत्र आज भी मौजूद है। इस पत्र के साथ एक पुस्तक भेज रहा हूँ, अध्ययन करके अपने विचार लिखना।

स्वामी मुक्तानन्द सरस्वती, युगा धरम पीठ, राष्ट्रीय सन्त समिति, सर्वोदय सतसंग आश्रम, सप्त सरोवर मार्ग, हरिद्वार, उत्तरांचल, 249 410, फोन 01334-261121, मोबाइल +93 19 03 58 60

[1] "सारा संसार" शब्द का प्रयोग, इस संदर्भ में, केवल अतिशयोक्ति ही नहीं बल्कि वास्तविकता से परे है। इसका खण्डन करना मैने आवश्यक समझा क्योंकि यह बात मैंने अनेकों से सुनी और अनेकों जगह पढ़ी। मुझे लगता है कि एक कहता है, दूसरा सुनता है, वह तीसरे को बताता है, जो फिर चौथे को वही बात दोहराता है, और इस प्रकार से अनगिनत लोग इस भ्रम में जीते हैं। चूँकि यह भ्रम बड़ा प्यारा-सा भ्रम है, कोई भी इस बात की चेष्टा नहीं करता कि अपनी कही या सुनी बात को जाँच ले। विशेषकर जब यह बात किसी जाने-माने व्यक्ति की जबान से निकलती है तो उसे जाँचने का प्रश्न ही नहीं उठता। जब मैं ये बातें कह रहा हूँ तो मेरे मन में स्वामी जी के प्रति किसी प्रकार की निरादर की भावना नहीं है।

इन पंक्तियों को लिखते समय (अ) विश्व की जनसंख्या थी 6,55,56,83,049 (ब)। हिन्दू धर्म को मानने वालों की संख्या 90,00,00,000 (स) आँकी जाती है। एक अन्य आँकड़े के अनुसार यही संख्या 83,70,00,000 (द) है।

अब विश्व की जनसंख्या 6,55,56,83,049 में से हिन्दुओं की संख्या 83,70,00,000 को घटा

देते हैं। हमारे पास बचते हैं 5,71,86,83,049 जो होती है अन्य धर्मों को मानने वालों की संख्या। इन 5,71,86,83,049 में से मान लेते हैं कि "एक लाख" व्यक्ति हिन्दू धर्म की विचार धारा के बारे में पर्याप्त मात्रा में जानकारी रखते हैं एवं हिन्दू धर्म के प्रति गभीर श्रद्धा भाव रखते हैं।

अब इस एक लाख को 5,71,86,83,049 से भाग देते हैं। हम पाते हैं 0.0017%। इसका अर्थ हुआ एक प्रतिशत से भी बहुत-बहुत-बहुत कम। यह तो "सारा संसार" नहीं हुआ। अतः ऐसी भ्रांतियों को फैला कर हम केवल अपने को ही धोखे में रखा करते हैं। और ऐसा करना कोई बुद्धिमानी तो नहीं है। अतः ऐसी भ्रांतियों को न फैलायें, क्योंकि अपने को धोखे में रख कर हम केवल अपना ही नुकसान करते हैं। इससे, न दूसरों का कोई भला होता है, न हमारा।

स्वामी जी ने अपने पत्र में अनेक महत्वपूर्ण बातें लिखी हैं, जिनका महत्व किसी प्रकार से क्षीण नहीं होता, मेरे उपरोक्त टिप्पणी से; अतः इसे मेरे मन में स्वामीजी के प्रति श्रद्धा भाव, का अभाव न समझा जाना चाहिए।

[अ] 21:22 GMT (EST+5) Nov 08, 2006 [ब] Source: U.S. Census Bureau, Population Division/International Programs Center, World 6,555,686,826, http://www.census.gov/ipc/www/world.html [स] Major Religions of the World, Ranked by Number of Adherents, http://www.adherents.com/Religions_By_Adherents.html [द] Ontario Consultants on Religious Tolerance, HINDUISM, The world's third largest religion, http://www.religioustolerance.org/hinduism.htm [2] समस्या इतनी सहज नहीं कि "यदि एक-सौ व्यक्ति भी सामने आ जावें तो हिन्दू समाज की वैचारिक शक्ति के सामने सारे संसार को घुटने टेकने पड़ेंगे"। एक जटिल समस्या को अति सहज समस्या के रूप में प्रस्तुत करना, समस्या की जटिलता की प्रतीति न होने का सांकेतिक है।

मानोज रखित, डिस्कवरी 9-11-2006

20-3-2006 "राम मंदिर तुम्हें पुकारता, आपकी लिखि पुस्तक श्री रवि कांत खरे बाबाजी द्वारा प्रेषित मिली। रखित जी, आप हिन्दू, हिन्दुत्व, व हिन्दू राष्ट्र की चेतना जगाने के लिए परिश्रम ही नहीं किया वस्तुतः स्वयं चेतना बन गये हैं तभी ऐसा सम्भव है। रात-दिन कितनी मेहनत के पश्चात यह सफल हुई होगी, परन्तु यह सफलता तो तभी होगी, जब जन-जन तक यह आवाज पहुँचेगी, परन्तु यह अवश्य हिन्दू तक पहुँच कर रहेगी।

यहाँ के आदिवासी कुछ तो ईसाई बन गये हैं। कुछ तो कट्टर ईसाई हैं। कुछ हैं जो अपने धर्म के लिए लौटना चाहते हैं, परन्तु उन्हें आर्थिक कमजोरी है। इसलिए विवश होकर द्वंद में जी रहे हैं। कुछ हैं जो उन लोगों में भी धर्मगुरु हैं, वे लोग उन्हें अपने हिन्दू धर्म से जोड़ रखे हैं और ईसाई होने से वंचित रखते हैं। क्या आप इस क्षेत्र में कोई कार्य योजना रख सकते हैं, जैसे भिक्षा, चिकित्सा, अथवा अनाथ व गरीबों के सहायतार्थ कुछ योजनायें। कभी इच्छा हो तो स्वयं आकर भी यहाँ अवलोकन करें। मेरी ओर से श्री माँ के चरणों में प्रणाम, जिस माँ की कृपा से आप इतने महान कार्य कर रहें हैं।

सुश्री सुलक्षणा 'व्यथित' (वय 57), द्वारी चक,पथरगामा, गाड्डा, झारखण्ड 814 147

 ISBN 81-89746-03-0 पुस्तक क्रमांक 03 संस्करण 07

सुलक्षणा जी, आपने दो महत्वपूर्ण बातों की ओर ईशारा किया है। एक यह कि "जो उन लोगों में भी धर्मगुरु हैं, वे लोग उन्हें अपने हिन्दू धर्म से जोड़ रखे हैं"।

यह सत्य है। मैं अपने चारों ओर मुम्बई शहर में भी ऐसे अनेकों छोटे-छोटे धर्मगुरुओं की ओर देखता हूँ तो मुझे इस बात की प्रतीति होती है कि ये सभी अपनी-अपनी सामान्य योग्यता के अनुसार अपना-अपना कर्म कर रहे हैं। लोग उनके यहाँ जाते हैं, प्रवचन सुनते हैं, रामायण का पाठ सुनते हैं, गीता की व्याख्या सुनते हैं, और यह सब छोटी-छोटी बातें उन्हें अपने धर्म से जोड़े रखती हैं। इस प्रकार वे ईसाई बनने से बचे रहते हैं, चाहे उन्हें यह न मालूम हो कि ईसाई धर्म की 'प्रेम और सेवा' की छवि एक बहुत बड़ा ढकोसला है, जो व्यापक रूप से धन खर्च कर, लगातार किये गए प्रचार के द्वारा, खड़ी की गई मिथ्या आवरण है (पढ़ें पुस्तक 12, 15, 16, 22, इत्यादि)। चाहे हमारे हिन्दू भाई, बहन, मातायें ईसाई धर्म के असली चेहरे से परिचित न हों, पर कम से कम अपने धर्म से तो जुड़े रहते हैं, इन छोटे-2 धर्म गुरुओं के माध्यम से। इसी बात की पुष्टि करते हुए आपने अपने अनुभव से भी यह लिखा है, जो आपने अपने चारों ओर ग्रामीण स्तर पर देखा है, कि ये धर्मगुरु, चाहे इनका बड़ा नाम न हो पर ये सभी अपने-2 छोटे-2 क्षेत्र में एक बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं, और वह यह कि आदिवासियों को ईसाई बनने से बचा कर रखे हैं। यद्यपि मैं मानता हूँ कि इनकी क्षमता एवं इनकी पहुँच बहुत दूर तक नहीं है, पर इससे कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि यही काफी है कि वे अपने-2 क्षेत्र में प्रभावी हैं, अपने-2 सामर्थ्य एवं साधनों के अनुसार।

इसी प्रकार से 'राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ' भी अपनी संकुचित दायरे में, परंतु व्यापक स्तर पर, बहुत ही महत्व पूर्ण कार्य कर रहा है, 'एकल-विद्यालयों' एवं अन्य अनेक योजनाओं के द्वारा। इस संदर्भ में मैने 'संकुचित' शब्द का प्रयोग किया है क्योंकि मेरी दृष्टि में उनकी सोच और समझ की परिधि बहुत सीमित है। यद्यपि वे अपने नाम में 'राष्ट्रीय' शब्द का प्रयोग करते हैं, पर न तो 'राष्ट्र की आत्मा' में 'वे' बसे हैं, न 'उनकी आत्मा' में 'राष्ट्र' बसा है। राष्ट्र उनके लिए एक भौतिक अभिव्यक्ति है। संकुचित के साथ ही, मैंने 'व्यापक स्तर' शब्द का भी प्रयोग किया है क्योंकि जिस भी दिशा में, वे जो भी कार्य कर रहे हैं, वह भौगोलिक रूप से अत्यन्त व्यापक स्तर पर है, और उनकी पहुँच देश के बहुत बड़े भौगोलिक क्षेत्र में है। उनके पास जनबल है एवं पर्याप्त अर्थबल भी। यह उनका दुर्भाग्य है कि वे इस व्यापक जनबल को राष्ट्र की आत्मा में सन्निहित नहीं कर पा रहे हैं (यहाँ मैं उसके कारणों के विश्लेशण में नहीं जाऊँगा)।

दूसरी महत्वपूर्ण बात जो आपने पूछी है कि क्या मैं स्वयं किसी योजना में योगदान कर सकता हूँ, जैसे भिक्षा, चिकित्सा, अथवा अनाथ व गरीबों के सहायतार्थ योजनायें। मेरा उत्तर है नहीं, और उसके दो कारण हैं। एक यह कि अनेक बड़ी-2 हिन्दू संस्थायें इस दिशा में कार्यरत हैं एवं उनके पास जनबल भी है और अर्थबल भी। कुछ नाम मेरे सामने यकायक आते हैं जैसे राम कृष्ण मिशन जो पूर्वोत्तर-भारत में काफी सक्रिय हैं क्योंकि वहाँ ईसाई-करण की प्रक्रिया बहुत आगे बढ़ चुकी है, जिस कारण वे उस भूभाग को प्राथमिकता दे रहे हैं। दूसरे अमृतामयीनन्दा मठ जो केरल में काफी सक्रिय है क्योंकि वहाँ भी ईसाई-करण बहुत बड़े पैमाने पर हो चुका था। तीसरे आशाराम बापूजी जो अपने ढंग से हिन्दुओं को हिन्दू धर्म के प्रति जोड़े हुए हैं। इसी प्रकार अनेक साधन-सम्पन्न धर्मगुरु एवम साधन-सम्पन्न हिन्दू संस्थायें इन दिशाओं में अपने-2 ढंग एवं अपनी-

अपनी प्राथमिकता के अनुसार कार्यरत हैं। एक नाम और याद आया, अम्बाला के जूना-अखाड़ा के स्वामी अवधेशानन्द जी। वनवासी कल्यान केन्द्र जो राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का एक अंग है, वह भी बड़े पैमाने पर आदिवासी क्षेत्रों में कार्यरत है। शबरी-कुम्भ (2006 गुजरात) के दौरान स्वामी असीमानन्द जी एवं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का योगदान असाधारण रहा।

मेरे 'ना' कहने का दूसरा कारण यह है कि ये समस्यायें सारे देश में चारों ओर फैली हुई हैं। अलग-2 व्यक्ति अलग-2 संस्थायें अपनी-2 जगहों पर अपना-2 काम बखूबी निभा रहे हैं, और इसी कारण इतना एड़ी-चोटी का जोर लगाकर भी ईसाई और मुसलमान अपने मंसूबों में पूरी तरह से कामयाब नहीं हो सके हैं, यद्यपि उनके पास साधन असीमित हैं और पिछली सदियों के दौरान उन्होंने हमसे हमारे साधन लूट लिये हैं। इन सब छोटे-बड़े धर्मगुरुओं के कारण आज भी, सदियों बाद भी, अनेकों झंझावतों को सहकर भी, हम अड़े हुए, अपने पैरों पर खड़े हुए हैं। जबकि विश्व की अन्य सभी संस्कृतियों को ईसाई एवं मुसलमानों ने समूल नष्ट कर दिया है।

जो लोग और जो संस्थायें हमारी इस असाधारण निहित शक्ति को पहचानने में अक्षम हैं, और केवल अपने ही लोगों की बुराई करते नहीं थकते, वे चाहे कितने ही बड़े समाज-सुधारक, विद्वान, विचारक, सन्यासी, स्वामी, इतिहासकार, धर्मगुरु, राजनेता, अर्थशास्त्री, शिक्षक, दिग्दर्शक क्यों न हों, चाहे उनके पास कितनी बड़ी-2 विश्वविद्यालयों की डिग्रियाँ या फिर बड़े-2 खिताब ही क्यों न हो, वे हिन्दू-समाज का ऐसा कुछ भला नहीं कर सकते जो स्थायी हो। हिन्दू समाज को अपना खोया हुआ गौरव वापस लौटाने के लिए, हिन्दू समाज की 'नाड़ी' की पहचान आवश्यक है। उसके साथ ही यह भी आवश्यक है - हिन्दू समाज में निहित शक्ति के प्रति अखण्ड विश्वास।

हाँ, तो लौट चलें उस प्रश्न पर कि मैंने 'ना' क्यों कहा आपके इस प्रश्न के उत्तर में कि क्या मैं स्वयं कोई योजना प्रस्तुत कर सकता हूँ भिक्षा, चिकित्सा, अथवा अनाथ व गरीबों के सहायतार्थ। मैंने ऐसा कहा इसलिए, कि ये समस्यायें सारे राष्ट्र में चहुँ-ओर फैली हैं और मैं व्यक्तिगत रूप से प्रत्येक जगह पहुँच नहीं सकता, न ही सभी समस्याओं का तुरंत कार्यकारी एवं फलदायी हल दे सकता हूँ। प्रकृति के भी कुछ नियम होते हैं, जैसे कि प्रत्येक व्यक्ति को, अपना-2 कर्म एवं कर्मफल का भोगी स्वयं बनना पड़ता है। मैं, किसी के व्यक्तिगत कर्म एवं कर्मफल में, किसी प्रकार का हस्तक्षेप करने का अधिकारी, अपने-आप को नहीं मानता (यह उपयुक्त स्थान नहीं है इस बात पर अधिक व्याख्या प्रस्तुत करने का)।

मेरा उद्देश्य एवं मेरी कार्य-प्रणाली भौगोलिक, क्षेत्रीय एवं व्यक्तिगत स्तर पर सीमित नहीं है। मेरी दृष्टि समस्त राष्ट्र पर है। मेरे दृष्टि में समस्या, जो सबको दिखायी देती है, वह उतनी महत्वपूर्ण नहीं है। क्योंकि जिसे सभी, या फिर कम से कम हमारे गुरु, शिक्षक, दिग्दर्शक देख सकते हैं, एवं उसके समाधान हेतु, अपने-2 स्तर पर, कुछ न कुछ कर सकते हैं, उसी दिशा में, यदि मैं भी प्रयत्नशील होऊँ, तो मेरा अपना योगदान क्या होगा, जिसे करने में, मैं अन्यथा सक्षम हूँ। जो सबको दिखायी नहीं देती, वह समस्या या समस्याओं की ऊपरी परत नहीं, बल्कि समस्या का मूलाधार होता है। मैं समस्या के उस मूल आधार पर कुठाराघात करना चाहता हूँ। यह सब जो 'मैं'-'मैं' कह रहा हूँ वह मैं नहीं, क्योंकि इस 'मैं' की भला पहुँच ही कहाँ तक? श्री नारायण चाहेंगे तो यह शरीर जो आपको इस 'मैं' के रूप में आज दिखता है, वह यह सब कर गुजरेगा। यदि श्री नारायण न चाहेंगे तो इस 'मैं' रूपी शरीर का विनाश हो जायेगा, इसके पहले कि यह

 ISBN 81-89746-03-0 पुस्तक क्रमांक 03 संस्करण 07

कुछ कर भी सके। आने वाला समय ही इस बात का निर्णायक होगा, क्योंकि उसकी शक्ति के आगे आज तक न कोई टिका है, न टिक पायेगा।

मानोज रखित, डिस्कवरी 10-11-2006

6-7-2006 "दोनों पुस्तकें 'राम मंदिर तुम्हें पुकारता' तथा 'धरती माता का...' मिल गई है। आप जिस हृदय से देश सेवा में जुटे हैं वह बहुत बड़ी यति है।" (यति - जितेन्द्रिय, सन्यासी, योगी - राजपाल हिंदी शब्दकोश)

डॉ रामतीर्थ अग्रवाल (60) (मनोवैज्ञानिक), 151-ए सनलाइट कॉलोनी-2, हरिनगर आश्रम, डी-डी-ए फ्लैट, मथुरा रोड, नई दिल्ली 110 014, फोन (011) 2634-6424

5-7-06 "आप द्वारा प्रेषित पुस्तक क्रमांक 03 (संस्करण जुलाई 2006) मिली। पढ़कर रोमांचित हूँ कि इस छोटी सी पुस्तक में आपने बाबरी मस्जिद बनाम राम जन्मभूमि पर से कोहरे का पर्दा छाँट दिया है। विषय वस्तु और उनके संदर्भ पूर्ण विश्वसनीय हैं, भाषा सहज, सरल, सब की समझ में आने वाली प्रवाह पूर्ण है जो हृदय में गहरे पैठ जाती है। शायद भारत की आम जनता को जगाने हेतु आप संकल्पित हैं। माँ जगत जननी आपके मनोरथों को परिपूर्ण करें। हो सकता कभी हम अपने पुराने गौरव को प्राप्त कर ही लें। राजहठ सबसे प्रबल आवेग रखता है और वर्तमान में भ्रष्टों की संस्थायें नाना प्रकार के प्रलोभन देकर आम आदमी को गुमराह किये है। आपके सब प्रयास प्रखरता से रंग दर्शाये और भारतीय क्षितिज पर उस सूर्य की चमक हो जो राम राज में चमकता था। मां कलपाजी कृपात्य होकर आपके मिशन को पूर्ण करें यही कामना है।"

श्री राम किशोर कपूर (वय 70+), 40 चौकसी नाथ मार्ग, शाहजहाँपुर उ प्र 242 001

7-8-2006 "पुस्तक क्रमांक 03 की दस प्रतियाँ प्राप्त हुईं। बन्धुवर आपकी पुस्तिकाओं के माध्यम से अधिकतम लोगों में जागृति लाने का प्रयास कर रहा हूँ। नारायणी माँ के आशिर्वाद से आपका कार्य सफल हो रहा है। 'माँ' का आशिर्वाद बना रहे। यही प्रार्थना करते हैं।"

श्री मुरारी पचलंगिया, 462 सरस्वती विहार, गुरुग्राम, हरियाणा 122 022, फोन (0124) 557-8665

13-2-2006 "आदरणीय श्री रविकान्त खरे (बाबाजी) द्वारा प्रेषित आपकी पुस्तक 'राम मंदिर तुम्हें पुकारता' मिली। इस पुस्तक का अध्ययन किया। राम मंदिर-बाबरी मस्जिद की वास्तविकता ज्ञान हुआ। इस पुस्तक में आपने अपने सभी विचारों को सप्रमाण प्रस्तुत किया है। इससे आपके विचारों को बल मिलता है। पुस्तक पूरी तरह तर्कसंगत बन गई है।

दुर्भाग्य की बात है कि हिन्दू बहुसंख्यक इस देश में जहाँ के नेता भी बहुसंख्यक हिन्दू ही हैं, अपने निजी स्वार्थ अथवा दलगत स्वार्थ को प्राथनिकता दे रहे हैं और धर्म निरपेक्षता का चादर ओढ़े हुए हैं। परन्तु वास्तव में वे धर्मनिरपेक्ष नहीं, बल्कि मुसलमानों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए हिन्दू विरोधी गतिविधियों में संलग्न हैं। वे अपने इतिहास, धर्म, संस्कृति - सबको तिलांजलि दे चुके हैं और आम जनता में भ्रम फैला रहे हैं। ऐसी स्थिति में बहुसंख्यक हिन्दुओं के इस देश में सोये हुए हिन्दुओं में जागृति का संचार करना प्रत्येक बुद्धिजीवीयों, लेखकों, पत्रकारों, शिक्षकों, विद्वानों, इतिहासकारों आदि का पुनीत कर्तव्य बनता है। आज वैचारिक क्रांति

की आवश्यकता है। आपकी पुस्तक इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी, सोये हुए हिंदुओं को जगायेगी और उनकी रगों में शक्ति का संचार करेगी, इसमें संदेह नहीं।"

श्री अभय कुमार ओझा, सहायक, व्यवहार न्यायालय, खगड़िया, बिहार 851 204

5-8-2006 "आप द्वारा प्रेषित 'राम मंदिर तुम्हें पुकारता' पुस्तक प्राप्त हुई, धन्यवाद। अन्य पुस्तकों की भाँति इसमें भी आपने खोजपूर्ण नये तथ्य प्रस्तुत कर नवचेतना जाग्रत की है। पुस्तक के अन्त में 'एक सन्देश आपके नाम' प्रेरणा दायक है। हमें राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की पंक्तियाँ स्मरण हो आयीं कि -

"समर शेष है, नहीं पाप का भागी केवल व्याध।
जो तटस्थ हैं, समय लिखेगा उनके भी अपराध।।"

कृपया सम्भव हो तो इसकी कुछ अन्य प्रतियाँ कम से कम 10 प्रेषित करने की कृपा करें।"

डॉ0 ओम प्रकाश उर्फ़ 'विवेकानन्द प्रकाश' ग्रा0 छोटीपुरवा पो0 इस्माइलपुर जि0 बाराबंकी 225301

'एक सन्देश आपके नाम' अब 'हाँ, आज मैंने शस्त्र उठाया है' के शीर्षक से प्रस्तुत की गई है। रामधारी सिंह 'दिनकर' जी अपनी इन दो पंक्तियों में बहुत कुछ कह गये हैं, पाठक ध्यान दें।

मानोज रखित, डिस्कवरी 9-11-2006

10-4-2005 "रामभक्तों और हिन्दू भारतीय समाज को एकता का ज्ञान कराता 'राम मंदिर तुम्हें पुकारता' मिली, आभारी हूँ। राम मंदिर तुम्हें पुकारता, यह पूरे दुनिया में फैले करोड़ों हिन्दु और भारतीय समाज में एक नई चेतना-एकता और मजबूत सत्य पर आधारित ज्ञानमयी मार्ग दर्शक है और बनेगी एक नई विचारधारा राममंदिर बनेगा के आगे कोई भी तुफान नही टिक पायेगा।"

सुश्री जया पटेल, अध्यक्ष, संघ मित्रा महिला विकास समिति, अम्बेडकर नगर समान, रीवा संभाग, म प्र

2004 "आप हिन्दुत्व के जलते हुए अंगारे हैं।"

अभिलाष सिंह गौड़ (वय 70-80), पोस्ट पचौमी, जिला बरेली, उ प्र 243 503, फोन 221 5104

श्रीकृष्ण बोले - हाँ, आज मैंने शस्त्र उठाया है

भगवान श्री कृष्ण सो रहे थे। दुर्योधन आये, और सिराहने पर रखे एकमात्र आसन पर, अपना अधिकार जमाया। अर्जुन आये, और भगवान के पैरों के पास, हाथ बाँधे खड़े रहे। आँख खुली तो स्वाभाविक ही था, सबसे पहले नज़र पड़ती, आँखों के सामने पैरों के पास खड़े अर्जुन पर। सिराहने पर बैठे दुर्योधन पर दृष्टि पड़ी बाद में, जब अर्जुन ने उनका ध्यान आकर्षित किया उस ओर।

ISBN 81-89746-03-0 पुस्तक क्रमांक 03 संस्करण 07

जिसकी जैसी भावना

दोनों चाहते युद्ध में सहायता श्री कृष्ण की।
अर्जुन ने माँगा निहत्थे कृष्ण को,
क्योंकि भगवान का रूप देखा उनमें।
दुर्योधन आनन्दित हुआ मन ही मन,
विशाल नारायणी सेना को पाकर,
क्योंकि एक ग्वाले का रूप केवल,
देखा था कृष्ण में उसने।

कुरुक्षेत्र की युद्ध भूमि में

भीष्म का भीषण तांडव देखा,
तो न रहा गया कृष्ण से।
भूले नहीं,
पर भुलाया उन्होंने,
अपना वचन,
कि मैं न उठाऊँगा शस्त्र,
इस युद्ध में।
उठा लिया उन्होंनें,
रथ का पहिया,
और दौड़ पड़े,
भीष्म पर वार करने।
भीष्म लड़ रहे थे दुर्योधन के पक्ष में,
चाहे बँधें हो अपने प्रण से,
पर दे रहे थे साथ आज अधर्म का।

भीष्म का विनय

अपना धनुष छोड़ा,
हाथ जोड़े,
मुस्कराये,
और भीष्म बोले।

अहोभाग्य मेरे,
जो भगवान आये,
शस्त्र उठाये,
वार करने मुझ पर।

तुमने तो कहा था
भगवन,
शस्त्र न उठाऊँगा,
इस युद्धभूमि में।
पर आज मैंने
विवश कर दिया प्रभु तुम्हें,
प्रण तोड़ने अपना।

श्री कृष्ण बोले

"तोड़ता हूँ
अब मैं,
सब अपने वचन,
शस्त्र सन्यास के
सब उपकरण।
धर्म रक्षा,
राष्ट्र रक्षा के लिए,
कर रहा हूँ
फिर मैं,
आयुध ग्रहण।"

मेरी पुकार

मेरा शस्त्र है यह कलम
जो पुकारता तुम्हें,
कि जागो मेरे हिन्दू राष्ट्र!
यह पुकार है हिन्दू गृहस्थ के लिए
यह पुकार है हिन्दू साधु के लिए
यह पुकार है हिन्दू सन्यासी के लिए
यह पुकार है प्रत्येक हिन्दू के लिए।

आपका प्रथम युद्ध क्या और किससे है?

आपका प्रथम युद्ध अपने आप से है, अपनी सोच से है, अपनी समझ से है, अपनी सुषुप्त अथवा जागृत अवस्था से है; अपने धर्म एवं अपने कर्तव्य के प्रति अपनी आस्था से है। पहले इन सबसे तो जूझिए, फिर सोचिएगा आपका युद्ध किससे है?

ISBN 81-89746-03-0 पुस्तक क्रमांक 03 संस्करण 07

यदि उस असत्य ज्ञान के सहारे जीते रहोगे,
जो आज तक तुम्हें पढ़ाया गया है,
तो अन्याय तुम्हें अन्याय न दिखेगा,
और सत्य एवं न्याय के पक्ष में खड़े होने की प्रेरणा
तुममें कभी न जगेगी।

जहाँ तक हमारा प्रश्न है

सच्चाइयों को आप तक पहुँचाना है कर्तव्य हमारा,
उनका प्रयोग करना है कर्तव्य आपका।

वह हिन्दू, जो तटस्थ ही रहना चाहता है, क्योंकि

आज हिंदू तटस्थ रहना ही पसंद करता है। कारण, जो कुछ उसके चारों तरफ हो रहा है, उसका मूल्य स्वयं उसे नहीं चुकाना पड़ता।

अनाचारों को अनदेखा करते रहना

अपने चारों तरफ होते हुए अनाचारों को अनदेखा करते रहना हिन्दू की प्रवृत्ति बन गई है। इसमें भी एक अजीब विरोधाभास है। उसकी यह उदासीनता उसका 'त्याग' है। अन्य शब्दों में कहा जाये तो, अपने धर्म के प्रति अपने 'दायित्व का त्याग'।

इसके साथ-ही, वह बन गया है धन के विषय में स्वार्थी। एक प्रकार से देखा जाये तो आप कह सकते हैं उसे 'भोगी'। कुछ ऐसा भोगी जिसकी सारी सोच अपने 'छोटे-से' परिवार की आवश्यकताओं के इर्द-गिर्द घूमा करता है।

हिन्दू 'ऐसा' कैसे बन गया?

यह 'त्याग' और यह 'भोग' उसे उपहार में मिला है, पिछली छः पीढ़ियों के दौरान, उस ईसाई-अंग्रेजी शिक्षा पद्धति से, जो हम पर जबरन थोपा गया था, हमारी अपनी प्राचीन हिन्दू शिक्षा पद्धति को, बड़े-ही योजनाबद्ध रूप से, मूल सहित उखाड़ फेंक कर। इस शिक्षा ने उसे अपने परिवार से जोड़ना कम, और तोड़ना ज्यादा सिखाया है।

पवित्र बाइबिल, निउ टेस्टामेंट, संत मैथ्यू 10:34 न सोचो कि मैं आया हूँ विश्व में शांति लाने के लिए--मैं आया हूँ शांति के लिए नहीं बल्कि तलवार लिए 10:35 क्योंकि मैं आया हूँ आदमी को अपने पिता के विरुद्ध खड़ा करने के लिए--पुत्री को माता के विरुद्ध--बहू को सास के विरुद्ध 10:36 और मनुष्य का शत्रु होगा उसका अपना परिवार 12:30 वह जो भी मेरे साथ नहीं वह मेरे विरुद्ध है

पवित्र बाइबिल, निउ टेस्टामेंट, संत ल्यूक 12:51--तुम समझते हो कि मैं आया हूँ इस धरती को अमन चैन देने? मैं तुम्हें बताता हूँ --नहीं। मैं आया हूँ बँटवारा करने 12:52 क्योंकि अब से घर में पाँच बटे होंगे-

-तीन दो के विरुद्ध--दो तीन के विरुद्ध 12:53 पिता होगा पुत्र के विरुद्ध--पुत्र होगा पिता के विरुद्ध--माँ होगी पुत्री के विरुद्ध--पुत्री होगी माता के विरुद्ध--सास होगी बहू के ख़िलाफ़--बहू होगी सास के ख़िलाफ़ 14:26 यदि एक व्यक्ति मेरे पास आता है और वह अपने पिता से घृणा नहीं करता--एवं माता से, पत्नी से, संतानों से, भाई-बहनों से, एवं अपने-आप से भी--तो वह मेरा शिष्य नहीं बन सकता

ISBN 0-8400-3625-4

गॉस्पेल ऑफ थॉमस, संत थॉमस 16 ईसा ने कहा संभवतः लोग सोचते हैं कि मैं आया हूँ विश्व में शांति स्थापना हेतु --वे नहीं जानते कि मैं आया हूँ इस धरती पर फूट डालने के लिए--आग, तलवार और युद्ध फैलाने के लिए--जहाँ पाँच होंगे एक परिवार में--वहाँ तीन होंगे दो के विरुद्ध और दो होंगे तीन के विरुद्ध--पिता होगा पुत्र के विरुद्ध और पुत्र पिता के--और वे डटे रहेंगे क्योंकि वे दोनों अपने आप में अकेले होंगे 56 जो अपने पिता से घृणा नहीं करेगा और अपनी माता से भी, वह मेरा शिष्य नहीं बन सकता। वह जो अपने भाइओं एवं बहनों से घृणा नहीं करेगा, और अपना क्रॉस नहीं ढोएगा जैसा कि मैंने किया है, वह मेरे योग्य न बन पायेगा
ISBN 81-85990-21-2

ईसाई शिक्षा एवं संस्कृति के दुःष्प्रभाव के परिणाम स्वरूप, आज हिन्दू की सोच अपने माँ-बाप के प्रति कुछ ऐसी बनती जा रही है - माना तुमने अपना पेट काट कर हमें पढ़ाया-लिखाया, बड़ा-आदमी बनाया, तो क्या? यह तुम्हारी जिम्मेदारी थी। तुमने हमें पैदा क्यों किया? जब किया, तो निभाया। कोई अहसान तो नहीं किया। अब मुझसे मत आशा करना कि मैं तुम्हारी जिम्मेदारी उठाऊँगा। और भूले से यदि पुत्र चाहता भी है जिम्मेदारी उठाना, तो उसकी पत्नी आड़े आ जाती है। वे दोनों भूल जाते हैं, कि एक दिन ऐसा भी आयेगा, जब उनकी अपनी सन्तानें भी कुछ ऐसा-ही सोचेंगी। अब जो माँ-बाप की ही परवाह न करे, वह हिन्दू धर्म की क्या परवाह करेगा।

हिन्दू समाज में बेटी को पराया धन माना जाता था। पराया धन का अर्थ हिन्दू की दृष्टि में अलग होता था, जबकी ईसाई की दृष्टि में कुछ और। हिन्दू पराये धन को अपने धन से भी ज्यादा कीमती मानकर उसकी परवरिश और रक्षा करता था, ताकि जब उस धन को, जिसकी अमानत है उसे सौंपने का समय आये, तो उसे गरिमा के साथ सौंपा जा सके। ईसाई की दृष्टि में पराया धन वह होता था (और आज भी वही होता है) जिसे छीन कर अपना बना लिया जाये। लौटाने (सौंपने) का तो प्रश्न ही नहीं उठता, उल्टे यदि आवश्यकता पड़े तो बेईमानी से उसे हड़प लिया जाये।

आज का हिन्दू, जो छः पीढ़ियों से ईसाई-अंग्रेजी शिक्षा का मानसिक-गुलाम बन चुका है, उसे लड़की का पराया धन होना समझ में नहीं आता। वह इसे हिन्दू समाज की एक बुराई के रूप में देखता है। उसका दोष ही क्या? बचपन से उसे जो शिक्षा स्कूल में मिली, उसने हिन्दू धर्म और समाज को नीची नजरों से देखना ही सिखाया। जो उसने सीखा, वही विरासत अपनी आने वाली पीढ़ियों को भी देकर जायेगा।

पराया धन माने जाने के कारण, बेटीयों को ऐसे तैयार किया जाता था कि वे जब अपने पति के घर जायें तो उस परिवार में इस प्रकार घुल-मिल जायें कि उन्हें यह न लगे कि

उन्होंने कुछ खोया है। बेटी जब ब्याह दी जाती थी, तो वह अपने पति के वृहद-परिवार का अभिन्न अंग बन जाती थी। उसके लिए पति का परिवार (जिसमें पति के माता-पिता, भाई-बहन, सभी शामिल होते थे) उसका अपना परिवार बन जाता था। इस प्रकार वह अपने पति के सम्पूर्ण परिवार को 'गढ़ने वाली' बनती, 'तोड़ने वाली' नहीं।

पर ईसा की मर्जी तो कुछ और ही थी जो आपने ऊपर पढ़ी। उनकी कही हुई बात को उनके मुख्य शिष्यों (मैथ्यू और थॉमस) ने जैसा स्वयं ईसा की जबान से सुना, वैसा ही लिपिबद्ध किया। ईसा ने स्वयं कहा, बड़े-ही स्पष्ट शब्दों में, शक की कोई गुंजाइश छोड़े बिना, कि वह शांति और प्रेम बाँटने इस धरती पर नहीं आये थे, बल्कि युद्ध-आगजनी के उद्देश्य से आये थे, और परिवारों को टुकड़ों-टुकड़ों में बाँट देने के लिए आये थे।

ईसा के मरने के बाद का, पिछले दो हजार वर्षों का इतिहास देखिए, युद्ध और आगजनी के सिवा क्या मिलता है? और इन दो हजार वर्षों में, जहाँ भी ईसा का प्रभाव बढ़ा, वहीं परिवारों के टुकड़े-टुकड़े हो गये। इससे बड़ा साक्ष्य आपको क्या चाहिए? चाहें तो पवित्र बाइबिल की एक प्रति खरीदें और स्वयं पढ़ कर देख लें।

हाथ कंगन को आरसी क्या! आपने रामायण-महाभारत तो पढ़ी ही होगी। वह आपका वास्तविक इतिहास है, जबकि ईसाई-अंग्रेजी शिक्षा-पद्धति ने आपको यही सिखाया कि वे काल्पनिक कहानियाँ थीं। उन्होंने तो आपको ऐसा सिखाया क्योंकि वे चाहते थे, कि आपकी नजर में, आपका अपना कोई इतिहास ही न रह जाये, जिस पर आप किसी प्रकार का भी गर्व कर सकें। जब आप अपनी-ही जड़ से कट जायें, तो आप कहीं न कहीं तो एक सहारा ढूढ़ेंगे। तब वह सहारा होगा, वह सब कुछ जो ईसाई है, जो अंग्रेजी है, जो पाश्चात्य है, जो आधुनिक है, जिसमें कुछ भी हिन्दू नहीं। ध्यान से देखेंगे तो आप पायेंगे कि आपके समाज का एक बड़ा-सा हिस्सा आपसे कट कर अलग हो गया है जो अपनी पहचान कहीं और खोजते हैं, पर हिन्दुत्व में नहीं।

कभी आपने अपने वास्तविक इतिहास रामायण-महाभारत में बहू का सास के प्रति दुर्व्यवहार और सास का बहू के प्रति दुर्व्यवहार देखा था? पर बचपन मैंने जितनी भी हिन्दी सिनेमायें देखी थीं, लगभग सभी में एक चीज अवश्य दिखती थी। गाँव का लड़का पढ़-लिख कर शहरी बन जाता है, बड़ा आदमी बन जाता है, और तब बहू अपने सास से अपने घर के बर्तन मँजवाती है, झाड़ू-पोंछा करवाती है, सास को अपने घर में पनाह देने की एवज में, और अपने दोस्तों से सास का परिचय घर की एक नौकरानी के रूप में कराती है। तब तो मैंने बाइबिल पढ़ी न थी। अब पढ़ी है तो यह भी जाना है कि ईसा का आविर्भाव इस धरती को किस दिशा में ले जाने के लिए हुआ था। यह भी देखा कि ईसा और उसके अनुचर कितना सफल हो चुके हैं इस दिशा में।

आप सोच में पड़ जायेंगे कि आप तो सर्वदा सुनते आये हैं कि ईसाई धर्म प्रेम, दया और मानवता की सेवा का धर्म है। तो फिर ये सब क्या बकवास है? बाइबिल को और गहराई

से पढ़िये। ईसा ने एक और बात कही थी। जो भी ईसाई 'न' बनेगा वह अनन्त काल तक नरक में सड़ेगा। अतः सबको ईसाई बनाओ (ताकि ईसा उन्हें स्वर्ग की सैर करा सकें)। अब सोचिये कि यदि वे आपको ईसा की सारी सच्चाई पहले ही बता देते तो क्या आप ईसाई बनने को राजी होते? स्वाभाविक है कि नहीं। तो यह ढकोसला खड़ा करना ही पड़ा कि ईसा प्रेम, दया के देवता हैं। उनकी फोटो भी देवतुल्य बनायी गई ताकि उसे देखकर आपमें श्रद्धा-भाव उमड़े।

कहाँ से आरम्भ हुई यह कहानी

गीता का उपदेश कुरुक्षेत्र की युद्धभूमि में ही क्यों

श्रीमद्भगवद्गीता के प्रथम अध्याय पर भाष्य लिखते हुए (पुस्तक क्रमांक 05) एक प्रश्न जो मेरे मन में उठा, वह यह था - भगवान श्री कृष्ण ने गीता का उपदेश कुरुक्षेत्र की युद्धभूमि पर ही क्यों दिया? यदि भगवान चाहते कि आने वाले युगों में लोग गीता को केवल मोक्ष एवं त्याग की दृष्टि से ही देखें तो वह अर्जुन को वन के किसी कुटिया में ले जाते।

धर्म और अधर्म पर टीका

धर्म की व्याख्या करने के पश्चात जब मैं अधर्म पर टीका करने लगा तो मुझे इस बात की अनुभूति हुई कि अधर्म को हमारे जीवन से संबंधित उदाहरणों के द्वारा स्पष्ट करना ही उचित होगा, ताकि लोग अधर्म को केवल जानें ही नहीं, बल्कि अच्छी तरह पहचानें भी।

आज अधर्म, धर्म की नकाब ओढ़े होता है

यह आवश्यक प्रतीत हुआ क्योंकि आज अधर्म, धर्म की नकाब पहने होता है। धर्म का मुखौटा पहने आज अधर्म अपने पर फैलाता जा रहा है। धर्म और अधर्म में भेद करना साधारण मनुष्य के लिए कठिन हो गया है। ऐसी परिस्थिति में यदि हम उदाहरण, अपने चारों तरफ के वातावरण से चुनें, तो सम्भवतः साधारण जनसमुदाय के लिए उसे पहचानना सहज हो जाये।

सत्य को असत्य एवं असत्य को सत्य का रूप देना

अब जब उदाहरण चुनने की बात आयी तो मुझे इतिहास की ओर रूख करना पड़ा। और जैसे-जैसे मैं डुबकी लगाता गया वैसे-वैसे ऐसे सब तथ्य सामने आते गए कि हैरान रह जायें। धन और मीडिया (समाचार पत्र, टीवी, इंटर्नेट, इत्यादि) के द्वारा, सत्य को असत्य का रूप, एवं असत्य को सत्य का रूप देना, आज कितना व्यापक हो गया है, इसका अनुभव आप को मेरे शोधों से होता रहेगा। धीरे-धीरे अधर्म के उदाहरण इतने अधिक

ISBN 81-89746-03-0 पुस्तक क्रमांक 03 संस्करण 07

जमा हो गए और उनका अंदरूनी चेहरा कुछ ऐसा दिखने लगा कि उन्हें श्रीमद्भगवद्गीता पर टीकाओं का हिस्सा बना कर रखना मुश्किल हो गया। तब आरम्भ हुई यह शृंखला।

जब अधर्म का हो बोलबाला,
और धर्म का दम घुटता हो,
तो उठती है एक आवाज़...

ललकार

अतीत

अपने अतीत को अनदेखा न करें क्योंकि
अतीत के गर्भ से ही वर्तमान जन्म लेता है और
वही वर्तमान हमारे भविष्य को दिशा देता है।

सहिष्णुता

अन्याय की सीमा को पार करने के बाद,
उसे सहते रहना कायरता ही कहलाएगी।
हम उसे सहिष्णुता कहने की भूल तो
नहीं कर सकते।

धर्म पिता

धर्म हमारा पिता है,
जो हमें हमारी सोच देता है,
हमारा विवेक देता है,
हमें सही पथ पर चलने की सीख देता है।
जब पिता बूढ़ा हो जाता है,
तो जवान संतानों का
क्या कर्तव्य बनता है?

अपने इतिहास को अनदेखा न करें

ठग रहा है वह अपने आप को,
जो अनदेखा करे अपने इतिहास को।
इतिहास वो दर्पण है जिसमें
चाहें तो देख सकते हैं हम,
अपने आने वाले कल की छवि।

न भूलें कि
जो अपने इतिहास से नहीं सीखते,
दोहराता है उनका इतिहास,
अपने-आपको, उनके लिए।

अब समय आ गया है कुछ करने का

आज आवश्यकता है
उन कर्मठों की
जो कहने में कम और
करने में ज्यादा विश्वास रखते हैं।

किसके लिए लिख रहे हैं हम ये सब

हमें तो तलाश है उनकी,
जिनके दिन या रात चाहे सड़क पर बीतते हों
या खेतों में मज़दूरी कर,
पर आज भी जलती जिनके हृदय में मशाल है।
जो हिंदू अपने को जानते हैं,
जो हिंदू अपने को मानते हैं,
और जिनकी साँस में बसती है हिंदुत्व की धारा।
जिनका खून हिंदू है,
जिनका ईमान हिंदू है,
जिनकी सोच हिंदू है!

कवित्व की आवश्यकता है हमारी ललकार में

वह कवि ही होता था,
जो सेना में उत्साह का संचार करता था।
क्योंकि युद्ध हमारे लिए,
शौर्य का प्रदर्शन हुआ करता था।
युद्ध के मैदान में हम उतरते थे,
अपनी आन के लिए।
आज वह समय फिर आ गया है।
अंतर केवल इतना है कि अभी भी
आवश्यकता नहीं कि हम वो शस्त्र उठायें,
जो संहारक होती हैं।
आज यदि आवश्यकता है

ISBN 81-89746-03-0 पुस्तक क्रमांक 03 संस्करण 07

तो उठ कर खड़े होने की,
ललकारने की उन्हें,
जिन्होंने दुरुपयोग किया है
आपके मान का,
आपके सम्मान का,
आपकी भद्रता का,
आपकी सहिष्णुता का।

ज्ञान आपकी शक्ति, अज्ञान बना अभिशाप रे

क्रांति की आवश्यकता देश में नहीं,
हमारी सोच में है।
पर हमारी सोच बदले कैसे,
जब सच्चाई का हमें भान नहीं।
मत भूलिए कि
ज्ञान बनेगी शक्ति आपकी,
और अज्ञान बना है
अभिशाप आपके लिए।

आपका पुरुषार्थ आज आपसे आपका कर्म माँगता है

आयेगा वह दिन
जब श्री नारायण स्वयं आएँगे,
अवतार लेकर,
पर तब तक,
आपको हाथ पर हाथ धरे बैठे नहीं रहना है।
आपका पुरुषार्थ आज आपसे,
आपका कर्म माँगता है।
धरती माँ का इतना तो,
ऋण बनता है आप पर!

1 - इतिहास साक्षी है

क्या व्यर्थ ही बहा था 1 लाख 80 हज़ार हिंदुओं का लहू, आततायी बाबर से श्री राम के मंदिर को बचाने की चेष्टा में?

सूरत से दिल्ली तक एक भी हिन्दू मदिर दिखाई न दिया

"18वीं शताब्दी में, एक ब्रिटिश भ्रमणकारी जिसने सूरत से लेकर दिल्ली तक भ्रमण किया, लिखते हैं - सूरत से दिल्ली तक उन्हें एक भी हिंदू मंदिर नहीं दिखाई दिया।"

एम वी कामथ, पृ 4

1,000 किलोमीटर और एक भी मंदिर नहीं। क्या हुआ उन मंदिरों का? क्यों हुआ ऐसा?

क्योंकि क़ुरान यही हिदायत देता है हर मुसलमान को कि वह मंदिर तोड़े

कुरआन सूरह 2 आयत 193 एवं सूरह 8 आयत 39 का भावार्थ "तब तक जारी रखो लड़ाई उनसे जब तक मूर्तिपूजा का नामों निशा न मिट जाए और इस्लाम सर्वत्र न फैल जाए।छ सूरह 60 आयत 4 का भावार्थ च्दुश्मनी और घृणा का बोलबाला रहेगा हमारे और उनके बीच तब तक, जब तक वे सभी केवल अल्लाह में ही विश्वास न करने लगें अर्थात तब तक, जब तक उन्हें जबरन मुसलमान न बना दिया जाए।"

ISBN 81-85990-75-1 पृ 165

क्योंकि पैग़ंबर मुहम्मद ने स्वयं मंदिर तोड़े और जो उन्होने किया वह सुन्ना बन गया जिसका अनुसरण करना हर मुसलमान के लिए एक कानून बन गया

"सुन्ना का अर्थ है मुसलमानों का कानून जो कि मुहम्मद की कथनी और करनी के आधार पर बना है और जिसे आधिकारिक/प्रामाणिक माना जाता है (क़ुरान के साथ)।"

ISBN 019-565432-3 पृ 1861

"जब तक पैग़ंबर मुहम्मद घटनास्थल पर नहीं उभरे, तब तक अरब राष्ट्र था ऐसा जहाँ अनेक संस्कृतियाँ पल रहीं थी साथ-साथ - मूर्तिपूजक मंदिर, ईसाई गिरजाघर, यहूदी प्रार्थना भवन, पारसी अग्नि मंदिर। जब वह मरे तब तक सारे गैर मुसलमान या तो (बलपूर्वक) मुसलमान बना दिए गए थे, या फिर अरब देश से बाहर निकाल दिए गए थे, या मार डाले गए थे और उनके पूजा के स्थल बरबाद कर दिए गए थे या फिर वे मस्जिद में बदल दिए गए थे। वस्तुतः सबसे निर्णायक घटना थी पैग़ंबर का प्रवेश काबा में, जो था अरब मूल निवासियों के धर्म का प्रमुख मंदिर, जहाँ उन्होने एवं उनके भतीजे अली ने अपने ही हाथों से 360 मूर्तियों को तोड़ा। इस्लाम का अपना बयान ही हमें बताता है कि उनके आदर्श व्यक्ति पैग़ंबर मुहम्मद ने अपवित्र किया काबा को और उसे मस्जिद में बदल दिया, इस प्रकार एक उदाहरण प्रस्तुत किया जिसका उत्साह से अनुकरण किया महमूद गज़नवी, औरंगज़ेब व तालिबान ने। वास्तव में मुहम्मद का आचरण उस मापदंड को परिभाषित करता है जिसके आधार पर यह निर्णय किया जाता है कि कौन एक अच्छा मुसलमान है।"

ISBN 81-85990-75-1 पृ 60-61

अर्थात अच्छा मुसलमान वही है जो मुहम्मद का पूरी तरह अनुसरण करता है।

हैमिल्टन लिखते हैं - बाबरी मस्जिद बना था गारे के साथ हिंदू मृतकों के रक्त और चर्बी से

"इस प्रकार जान बूझकर हिंदू मंदिरों को ध्वंस एवं अपवित्र करने का इतिहास हिंदुओं ने बहुत पहले ही भुला दिया है। उनकी मानसिक पीड़ा का कारण रहा है श्री राम मंदिर, जिसे ध्वंस एवं अपवित्र किया गया। क्या उन्हें दोष दिया जा सकता है - जैसा कि हैमिल्टन ने लिपिबद्ध किया - बाबरी मस्जिद बना था गारे के साथ हिंदू मृतकों के रक्त और चर्बी से। एम वी कामथ, पृ 4

कन्निंघम लिखते हैं - 1 लाख 80 हजार हिन्दू मारे गये राममंदिर की रक्षा करते हुए

"श्री राम जन्मभूमि मंदिर के बारे में गिरीश मुंशी लिखते हैं - दो (सूफ़ी) फ़क़ीरों के उकसाने पर बाबर ने अपने सेनापति को आक्रमण करने के लिए कहा। सेनापति का विरोध किया हंसबर के राजा विजय सिंह ने, मकरियाह के राजा संग्राम सिंह ने और भिटी के राजा मोहबत सिंह ने। ब्रिटिश इतिहासज्ञ कन्निंघम लिखते हैं - हिंदुओं ने एक जुट होकर सामना किया अपने श्री राम जन्मभूमि मंदिर के लिए। 1 लाख 80 हज़ार हिंदू मारे गए। मुसलमान मृतकों की संख्या उपलब्ध नहीं। अंत में मीर बाक़ी ने मंदिर को अपने तोप से उड़ा दिया।" एम वी कामथ, पृ 4

आज हिंदू अपने आप से पूछें, एवं, अपने मुसलमान साथियों से पूछें

हिंदू अपने आप से पूछें, एवं, अपने मुसलमान साथियों से पूछें कि क्या 1 लाख 80 हज़ार हिंदुओं का रक्त व्यर्थ ही बहा था? क्या यह बात समझ में नहीं आती है कि बाबर ने वहाँ मस्जिद बनाने के लिए मस्जिद नहीं बनाया था? यदि उसे केवल मस्जिद ही बनाना होता तो हिंदुस्तान भर में जगह की कमी नहीं थी। उसके लिए हिंदुओं के मंदिर को, और वह भी श्री राम के मंदिर को, तोड़ने की आवश्यकता नहीं थी। बाबर ने तोड़ा इसलिए कि कुरआन कहता है कि मूर्तिपूजकों के सभी मंदिर तोड़ दो। हिंदुओं को आज वहाँ मंदिर न बनाने देने का काड़ाण भी वही है।

बाबर की आत्मकथा

जैसा कि बाबर ने स्वयं लिखा था अपनी ही आत्मकथा में -

"इस्लाम की ख़ातिर, मैं भटका जंगलों में,
तैयार लड़ने हिंदुओं से,
वादा किया अपने आप से कि मरूँगा एक शहीद की मौत,
खुदा का शुक्र है कि घाज़ी मैं बन गया।"

ISBN 81-85990-75-1 पृ 168 (उद्धृत *बाबरनामा*, अनुवाद मिसेस ए एस बेवेरिज)

हिंदुओं को मारते हुए मरना इस्लाम में बड़े फ़क्र की बात हुआ करती है और वह शहीद कहलाता है। हिंदुओं को जो स्वयं अपने हाथों से मारता है वह इस्लाम में ग़ाज़ी का दर्ज़ा पाता है और मुहम्मद का दावा है कि वह सीधा स्वर्ग को जाता है।

आप अपने मन को बहलाते हैं, समाचार पत्रों में यह पढ़ कर कि कश्मीर में हिंदुओं का कत्ल आतंकवादियों ने किया। उन्होनें हिंदुओं का खुले आम कत्ल आतंक फैलाने के लिए नही किया। उन्होनें कत्ल इसलिए किया कि इस्लाम उन्हें कहता है कि मूर्तिपूजकों का कत्ल करो, तुम्हें जन्नत मिलेगा।

ताकि आपकी नज़र इस सच्चाई पर आकर न टिके, कि इन सब के पीछे इस्लाम, एवं केवल इस्लाम है, इसलिए हमारी हिंदू-विरोधी मीडिया ने इस नए नाम का ईजाद किया आतंकवादी। याद रखें, हमेशा केवल सही नाम का प्रयोग करें, ताकि आपके सामने सही छवि रहे, अन्यथा आपकी नज़र गुमराह हो जाएगी, और आपकी सोच भी।

यदि मुसलमान हिंदुओं को अपना भाई समझते हैं तो क्या उनका कर्तव्य नहीं बनता कि वे वापस कर दें श्री राम के जन्म की वह भूमि। और क्या माँगा है, हिंदुओं ने उनसे? वे हिंदू भाई जो मुसलमानों के बड़े हमदर्द बनते हैं, क्या उनकी इतनी बड़ी खोपड़ी में इतनी छोटी सी बात नहीं समाती? या वे अपने आप को बहुत बड़े दिल वाला सिद्ध करना चाहते हैं, कि चलो छोड़ दिया हमने राम जन्मभूमि भी, क्योंकि हमें उचित-अनुचित से कोई मतलब नहीं, हम तो हैं इन छोटी बातों से बहुत ऊपर!

कोई मुसलमानों से यह तो नहीं कहता कि वे ऋण अदा करें, उन 1,80,000 हिंदुओं के रक्त का जो बहा था, श्री राम के जन्मस्थान की रक्षा के लिए। हिंदू तो केवल इतना कहते हैं कि, दे दो आज हमें सिर्फ़ श्री राम के जन्म की वह भूमि का टुकड़ा, जो हमें 1,80,000 हिंदुओं के जान से भी ज़्यादा प्यारी है।

पाँडवों ने भी तो दुर्योधन से यही माँगा था, कि दे दो हमें केवल पाँच गाँव हम पाँचों के लिए, हम नहीं चाहते रक्तपात! पर उस दुर्बुद्धि दुर्योधन और उसके सलाहकार मामा शकुनि को वह भी गवारा न था। बिना युद्ध के, सुई की नोक के बराबर ज़मीन देने को भी तैयार न हुए वह। आज मुसलमानों की सोच भी तो यही है!

दुर्योधन दंभी बन गया था इतना, कि पाँडवों की विनम्रता को उसने पाँडवों की निर्बलता समझ ली। यही तो स्थिति है आज, हिंदुओं के विनम्रता की। पर एक बड़ा अंतर है यहाँ - पाँडव एकजुट थे और हिंदू बँटे हुए हैं। इसलिए मुसलमानों ने हिंदुओं की विनम्रता को उनकी कमज़ोरी जान लिया है। दुर्योधन ने इसे पाँडवों की कमज़ोरी मानी थी, पर मुसलमानों ने इसे हिंदुओं की कमज़ोरी जानी है।

यह जान लो हिंदुओं कि
जब तक तुम बिखरे रहोगे

ISBN 81-89746-03-0 पुस्तक क्रमांक 03 संस्करण 07

मूर्खों की भाँति,
तब तक तुम्हें निर्बल मान
कोई तुम्हारी
इज़्ज़त न करेगा।
यदि ऐसे ही जीना चाहते हो
कायरों की भाँति,
और इस भ्रांति में जीना चाहते हो
कि हमें तो शांति चाहिए,
तो यही मुबारक हो तुम्हें!
पर इतना जान लो कि
सच्ची शांति तो हासिल होती है
केवल उसे
जो शक्तिशाली होता है,
निर्बल तो केवल भ्रम में जीता है!

तुम लोगों ने भगवद्गीता को समझा ही नहीं, केवल स्वाँग करते हो समझने का। अरे जरा सोच कर देखो कि क्या आवश्यकता थी भगवान श्री कृष्ण को, कुरुक्षेत्र की युद्धभूमि में दुबके हुए अर्जुन को ललकारने की?

"हे पृथा के पुत्र अर्जुन, तुझे नामर्द नहीं बनना है। ऐसा तेरे लिए कतई योग्य नहीं है। हे परंतप, हृदय की इस तुच्छ दुर्बलता का त्याग करके अब तू युद्ध के लिए तैयार हो जा।"

श्रीमद्भगवद्गीता अध्याय 2 श्लोक 3

अरे, श्री राम का मन्दिर तो निमित्त मात्र है! प्रश्न यह है कि तुममें धर्म की रक्षा हेतु उठ खड़े होने की मानसिक इच्छा एवं शारीरिक योग्यता है, कि नहीं!

वह निर्बल
जो सत्य-असत्य में अंतर नहीं कर पाता,
वह दुबका हुआ
जिसे उचित-अनुचित में फ़र्क़ नहीं जान पड़ता,
वह भटका हुआ
जिसे न्याय-अन्याय की परवाह नहीं,
वह क्या करेगा अपनी रक्षा,
अपने धर्म की रक्षा,
अपने कुल की रक्षा,
अपने समाज की रक्षा,

अपने राष्ट्र की रक्षा,
इस मानव समुदाय की रक्षा?

वह सोचता है कि वह भगवान की साधना में लीन है, उसे तो भक्ति चाहिए, उसे तो भगवान चाहिए, पर उसे क्या मालूम, कि भगवान तो उसे तब तक हासिल न होंगे, जब तक उसने अपनी सांसारिक ज़िम्मेदारियों को पूरा न कर, उनसे ऊपर न उठा हो, और उसने यह न जाना हो, कि सांसारिक ज़िम्मेदारियाँ, केवल सीमित व्यक्तिगत परिवार के इर्द-गिर्द, ही नहीं घूमा करती।

जब दुर्योधन ने पाँडवों की उस जायज़ माँग को भी ठुकरा दिया, तब वही भगवान श्री कृष्ण बोले, पाँडवों अब समय आ गया शस्त्र धारण करने का। वह दिन दूर नहीं जब यही स्थिति हमारे सामने आ खड़ी होगी और आपको निर्णय लेना होगा। तब क्या आप (शांति प्रिय या कायर) चूहे की भाँति दुबक कर अपने बिल में जा घुसेंगे?

यह न भूलें कि यदि महाभारत न होता, तो भगवद्गीता न होती। इस भ्रम में न रहिए कि भगवद्गीता अस्तित्व में आई, लोगों को उस त्याग का एहसास कराने जो उन्हें इस जीवन रूपी युद्ध क्षेत्र से भाग खड़े होने की प्रेरणा देता है। श्री नारायण ने आपको, आपका कर्म त्यागने को नहीं कहा था। उन्होनें तो आपको, आपके कर्म का फल त्यागने को कहा था। पर आप तो बड़े विज्ञ की भाँति, कर्म को ही त्यागने हेतु उद्यत हो गए!

यदि आपको संसार त्याग कर, अपने धर्मगुरु के आश्रम में जाकर, जीवन बिताना है तो अवश्य बिताएँ। अपने धर्मगुरु से यह भी कहें कि आपको खिलाएँ, आपके परिवार को खिलाएँ। यदि वे कहते हैं कि, हमने तो संसार छोड़ दिया, तुम संसार में हो, इसलिए तुम हमें खिलाओ, तो यह स्पष्ट रूप से समझें कि आप अभी संसार में हैं, और आपके इर्द-गिर्द संसार में जो कुछ भी हो रहा है, उससे आप भाग नहीं सकते। आपको संसार में रहकर संसार से जूझना होगा, संसार के ही नियमों के अनुसार।

एह ई नेविल लिखते हैं - बाबर ने राममंदिर को ध्वंस कर दिया

अँग्रेज़ प्रशासक एच ई नेविल ने गेज़ेट में लिपिबद्ध किया "1528 ईस्वी में बाबर अयोध्या में आया और एक सप्ताह ठहरा। उसने ध्वंस कर दिया उस प्राचीन मंदिर को (जो राम के जन्मस्थान की पहचान कराता था) और उसके स्थान पर बनाया एक मस्जिद...वहाँ दो शिलालेख हैं, एक बाहर और एक प्रवचन मंच पर, दोनों पर तारीख़ें खुदी हैं 935 ए एच (अल हिज्र)"।

एम वी कामथ, पृ 4

स्वयं मुसलमान विद्वान कहते हैं राम मंदिर ध्वंस किया

"गिरीश मुंशी के एक अप्रकाशित शोध के अनुसार स्वयं मुसलमान विद्वानों के लेखों में अनेक प्रमाण मिलते हैं जो इस बात के साक्षी हैं कि श्री राम का मंदिर ध्वंस किया गया

ISBN 81-89746-03-0 पुस्तक क्रमांक 03 संस्करण 07

था। उनके नाम हैं - मिर्ज़ा जान, मोहम्मद असघर, मिर्ज़ा रज़ाब अली बेग सुरूर, शेख मोहम्मद अज़मत अली काकोर्वी नामी, हाजी मोहम्मद हुसैन, मौलवी अब्दुल करीम, अल्लामा मोहम्मद नज़मु घानी और मुंशी मौलवी हशमी। इसके अलावा कई यूरोपियन (इतिहासकारों) के नाम भी हैं (जो इस बात की पुष्टि करते हैं) - विलियम फिंच, ज़ोजेफ टाइफ़ेन्थालेर, मॉन्टगोमरी मार्टिन, एड्वर्ड थॉर्नटन और हांस बैकेर।" एम वी कामथ, पृ 4

मिर्ज़ा जान की हदिकाह-ए-शुहादा

"19वीं शताब्दी के मिर्ज़ा जान अपनी ऐतिहासिक पुस्तक हदिकाह-ए-शुहादा में लिखते हैं - जहाँ भी उन्हें हिंदुओं के भव्य मंदिर मिले...वहीं मुस्लिम सुलतानों ने मस्जिद व सराय बनाए, इस्लाम को बहुत ही उत्साह के साथ फैलाया और काफ़िरों (मूर्तिपूजक हिंदुओं) का दमन किया। इस प्रकार से उन्होनें फ़ैज़ाबाद एवं अवध (अयोध्या) को भी इस नारकीय गंदगी से साफ़ कर दिया क्योंकि यह उनकी पूजा का एक बहुत महत्वपूर्ण स्थान हुआ करता था एवं राम के पिता की राजधानी। वहाँ जहाँ एक बहुत भव्य मंदिर (राम जन्म स्थान का) हुआ करता था, वहीं उन्होने एक बड़ा मस्जिद बनवाया...क्या आलीशान मस्जिद बनवाया सुलतान बाबर ने!" ISBN 81-85990-52-2 पृ 96 (उद्धृत मिर्ज़ा जान)

औरंगज़ेब की पौत्री की सहिफ़ा-ए-चिहल नासाएह बहादुरशाही

"औरंगज़ेब की पौत्री 1707 ईस्वी में सहिफ़ा-ए-चिहल नासाएह बहादुरशाही में लिखती हैं - इस्लाम की फ़तह को नज़र में रखते हुए सभी कट्टर मुस्लिम सुलतानों को चाहिए कि वे इन मूर्तिपूजकों को अपनी अधीनता में रखें, जिज़िआ (हिंदुओं पर लगाया गया धार्मिक कर) वसूल करने में जरा भी ढील न दें, हिंदू राजाओं को जरा भी छूट न दें ताकि वे खड़े रहें अपने पैरों पर मस्जिद के बाहर तब तक जब तक ईद की नमाज़ न ख़त्म हो...शुक्रवार व सामूहिक नमाज़ों के लिए लगातार प्रयोग में लाते रहें उन मस्जिदों को जिन्हें इन मूर्तिपूजक हिंदुओं के मथुरा, बनारस व अवध के मंदिरों को तोड़ कर बनाया गया है।"

ISBN 81-85990-52-2 पृ 96-97 (उद्धृत मिर्ज़ा जान)

सौ वर्ष पहले महंत रघुबंस दास का न्यायालय में मुकदमा

इन बातों से क्या यह स्पष्ट नहीं होता कि श्री राम का मंदिर था वहाँ? सौ वर्षों से अधिक समय बीत चुका है, हिंदू शांति प्रिय ढंग से माँग करते रहे हैं उस जमीन की, ताकि वहाँ श्री राम का एक भव्य मंदिर बना सकें।

"1885 में महंत रघुबंस दास ने फ़ैज़ाबाद न्यायालय में एक मुकदमा दायर किया कि वह स्थान जो हमारे पूज्य श्री राम के जन्म का स्थान था, उस पर बलपूर्वक और अन्याय से

यवन आतातायियों ने कब्जा जमा लिया था, अतः अब यह न्याय की माँग होगी कि वह स्थान हिंदुओं को दे दिया जाय।" एम वी कामथ, पृ 4

यदि एक लुटेरे ने ज़बरदस्ती आपकी संपत्ति छीन ली

सोच कर देखिए कल यदि एक लुटेरे ने ज़बरदस्ती आपकी संपत्ति छीन ली तो क्या आज आप न्यायालय में जाकर न्याय नहीं माँग सकते, कि आप को आपकी संपत्ति वापस कर दी जाए? यही तो किया था हिंदुओं ने। और किस लिए होते हैं न्यायालय? किस लिए होती है सरकार? ताकि न्याय करे - ऐसा ही न? प्रजा राजा के पास न जाएगी, तो कहाँ जाएगी?

अंग्रेज़ जज - बड़े दुर्भाग्य की बात है यह मस्जिद बनया गया

पर अंग्रेज डरते थे और झंझट में नहीं पड़ना चाहते थे। उप-जज ने न्याय नहीं दिया, इस डर से कि दंगे और खूनखराबे हो सकते हैं। महंत रघुबंस दास ने इस पर अपील दायर की (सन 1886 में दर्ज अपील संख्या 27)।

"फ़ैज़ाबाद के जिला-जज ने 16 मार्च 1886 को अपना निर्णय सुनाते हुए कहा - कल मैं स्वयं दोनों पक्षों के लोगों के साथ उस स्थल पर गया...यह बड़े दुर्भाग्य की बात है यह मस्जिद ऐसी जगह पर बनाई गई जो हिंदुओं के लिए इतना पवित्र स्थान रहा है।"

एम वी कामथ, पृ 4 एवं डॉ कोएनराड एल्स्ट, पृ 161

यहाँ ध्यान दें कि अँग्रेज़ न्यायाधीशों ने भी इस बात से इन्कार नहीं किया कि वहाँ श्री राम का मंदिर हुआ करता था। पर जैसा कि आप आगे चलकर इस पुस्तक में देखेंगे, आज हमारे ही लोग किसी लोभ वश इस ऐतिहासिक तथ्य को झुठलाने में लगे हैं और उसके पीछे कितना बड़ा षड़यंत्र काम कर रहा है यह भी आप देखेंगे।

आपका क्या कर्तव्य है?

उसके पश्चात संभवतः आप अपने आप से यह पूछना चाहेंगे कि ऐसी परिस्थिति में आपका क्या कर्तव्य है? तटस्थ रहना, जानते बूझते अन्याय को अनदेखा करना या अन्याय का विरोध करना?

अपने ही इतिहास को न भूलें

धृतराष्ट्र एवं युधिष्ठिर लगातार दुर्योधन के अन्याय पूर्ण कार्यों को अनदेखा करते रहे और इस प्रकार से, परोक्ष रूप से अन्याय को प्रश्रय देते रहे। क्या आप वही नहीं कर रहे हैं? अंत में इसका परिणाम हुआ महाभारत का युद्ध, जिसे टाला जा सकता था यदि

 ISBN 81-89746-03-0 पुस्तक क्रमांक 03 संस्करण 07

अन्याय का तिरस्कार एवं न्याय की प्रतिष्ठा समय रहते की जाती। आप क्या करना चाहेंगे?

2 - अयोध्या में खुदाई के प्रमाण साक्षी हैं

प्रमाणों का परीक्षण करने देश के कोने-कोने से 40 पुरातत्वज्ञ आए, परीक्षण करने के पश्चात सभी एकमत हुए कि वहाँ मंदिर था

आप चाहें तो स्वयं पुष्टि कर सकते हैं

डॉ एस पी गुप्ता इलाहाबाद संग्रहालय के संचालक रहे हैं। सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय पर डॉ गुप्ता की टीकाओं से हमें बहुत कुछ जानने को मिलता है। उन टीकाओं का संक्षिप्त विवरण हम आपके लिए प्रस्तुत करते हैं। ISBN 81-85990-30-1 पृष्ठ 112-122

प्रॉफेसर बी बी लाल की खुदाइयाँ

"प्रॉफ़ेसर बी बी लाल जो भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण के मुख्य निर्देशक रहें हैं, उन्होने 1975 से 1980 के बीच, अयोध्या में बहुत खुदाई की - उस स्थान पर भी जहाँ जन्मस्थान-मस्जिद हुआ करता था।" ISBN 81-85990-30-1

3000 वर्ष पुराना नगर

"प्रॉफ़ेसर लाल ने वहाँ 14 खाइयाँ खोदीं, यह जानने के लिए कि वह जगह कितनी पुरानी थी। उन खुदाईयों से यह पता चला कि वह नगर कम से कम 3,000 वर्ष पुराना रहा होगा, संभवत: उससे अधिक। वहाँ उन खाइयों में बड़े-बड़े समानांतर चौकोर स्तंभों वाले, ईंट और पत्थरों का बना हुआ एक बहुत बड़ा ढाँचा पाया गया।"

ISBN 81-85990-30-1

हिन्दू मूर्तियाँ - यक्ष, यक्षी, कीर्ति मुख, पूर्ण घट्ट

"दरवाज़ों पर हिंदू मूर्तियाँ काढ़ी हुई पाई गईं। यक्ष, यक्षी, कीर्ति मुख, पूर्ण घट्ट, कमल के फूल इत्यादि सजावट की वस्तुएँ पाई गई। प्रॉफ़ेसर बी बी लाल की खुदाईयों से यह भी पता चला कि स्तंभों पर बना हुआ वह ढाँचा बार-बार मरम्मत किया गया, कम से कम तीन बार।" ISBN 81-85990-30-1

बाबरी मस्जिद बनने की तारीख से 1700 वर्ष पहले बनी किलेबंदी की दीवार

"प्रॉफ़ेसर बी बी लाल की खुदाईयों ने यह भी दिखाया कि वहाँ एक बहुत बड़ी दीवार क़िलेबंदी के लिए थी, जो बनाया गया था पकाए हुए ईंटों से और जिसकी उम्र रही होगी 3 शताब्दियाँ ईसा के पहले।" ISBN 81-85990-30-1

यहाँ ध्यान दीजिए, बाबरी मस्जिद बना था 16वी शताब्दी में, जबकी यह दीवार बनी थी 2,300 वर्ष पहले। अन्य शब्दों में कहा जाय तो वहाँ बाबर के पैदा होने के पहले का भी बहुत कुछ था, जिसे आज झुठलाने में जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय एवं अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के इतिहासज्ञ जी तोड़ कर लगे हैं।

बाबरी मस्जिद से पहले के बने हुए मंदिर के स्तम्भ

"यह एक जानी और मानी हुई बात है कि पुरातात्विक खुदाई में भाग्य का साथ भी आवश्यक होता है। कहा जाता है कि केवल कई इंचों के लिए कोई छुपा ख़ज़ाना तक खो देता है। अर्थात, यदि कई इंच और खुदाई की होती तो संभवतः ख़ज़ाना हाथ लग जाता। दक्षिण की तरफ़ प्रॉफ़ेसर बी बी लाल ने जो खाइयाँ खोदी थीं, उससे केवल 10-12 फीट की दूरी पर एक बहुत बड़ी खुदाई छूट गई जिसमें 40 से ज्यादह प्रतिमाएँ बाद में पाई गई। पर प्रॉफ़ेसर लाल को मिला था, 16वीं शताब्दी से पहले के तोड़े हुए मंदिर के स्तंभ, जो अन्य पुरातत्वज्ञों को नहीं मिल पाये थे।" ISBN 81-85990-30-1

हमारे न्यायालय इन प्रमाणों से अनभिज्ञ नहीं थे

"ये 40 से अधिक प्रतिमाएँ तब पाई गईं जब उत्तर प्रदेश सरकार के अधिकारी पूर्व एवं दक्षिण के खाइयों के बग़ल की ज़मीन को समतल कर रहे थे। बड़ी चर्चा रही इनकी समाचार पत्रों में 18 जून 1992 से।" ISBN 81-85990-30-1

यहाँ ध्यान दीजिए तारीख़ पर। जून 1992। बाबरी ढाँचा अभी गिरा नहीं था। हमारे न्यायालय इन प्रमाणों की उपलब्धि से अनभिज्ञ नहीं थे।

बाबर के पैदा होने से 4-6 शताब्दियों पहले की कलाकृतियाँ

"2 जुलाई 1992 को एक और पुरातत्वज्ञों का दल उस स्थान पर पहुँचा। इस दल में थे डॉ वाई डी शर्मा, जो सर्वेक्षण के उप मुख्य निर्देशक रहे थे, डॉ एस पी गुप्ता, जो इलाहाबाद संग्रहालय के संचालक रहे थे, और बहुत सारे वरिष्ठ पुरातत्वज्ञ भी वहाँ पहुँचे। उन्होने हिंदू मंदिरों की उन 40 से अधिक कलाकृतियों व पुरातात्विक अवशेषों का परीक्षण किया। उन्होने पाया कि ये वस्तुएँ 10वीं से 12वीं शताब्दी के बीच की थीं। इन वस्तुओं में थीं कई आमलका जो उन दिनों की समस्त उत्तर भारतीय मंदिरों में (कोनार्क और खजुराहो) आज भी देखने को मिलती हैं।" ISBN 81-85990-30-1

चक्र-पुरुष, परशुराम, मैत्री देवी, शिव व पार्वती की मूर्तियाँ

"एक और वैसा ही आमलका पाया गया एक बार फिर (1 जनवरी 1993 को) एक खाई में, जब उत्तर प्रदेश के सरकारी अधिकारी, फ़ैज़ाबाद के एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी की मौजूदगी में, मंदिर के चारों तरफ़ एक नया घेरा बना रहे थे। और भी मूर्तियाँ पाई गईं जो थीं चक्र-पुरुष, परशुराम, मैत्री देवी, शिव व पार्वती की, जो 10वीं से 12वीं शताब्दी के बीच की थीं।" ISBN 81-85990-30-1

ये मूर्तियाँ उस धरती के नीचे नहीं मिल सकती थीं यदि वहाँ मस्जिद के पहले मंदिर न रहा होता।

1ली से 3री शताब्दी के बीच की एक फ़र्श एवं 10 से16वीं शताब्दी के बीच की 3 और फर्श

"बाद के दिनों में, पूर्व के हिस्से में, पुरातत्वज्ञों की एक और टोली ने खुदाइयाँ की और उन्होने 10 फीट से अधिक ज़मीन खोदी, पूर्व व दक्षिण की तरफ़, जहाँ सरकारी अधिकारियों ने कुछ हिस्से को काटा था। इस दौरान पाया गया एक बहुत गहरा गड्ढा और अवशेष, कम से कम 3 ढूँसे हुए फ़र्शों की, जो थीं 10 से 16वीं शताब्दी के बीच की, और एक फ़र्श जो थी 1ली से 3री शताब्दी के बीच की।" ISBN 81-85990-30-1

1ली से 3री शताब्दी के बीच की दो दीवारें

"दो दीवारें पाई गईं जो 1ली से 3री शताब्दी के बीच की बनी थीं। प्रॉफ़ेसर बी आर ग्रोवर ने एक बहुत बड़ी और फैली हुई पके ईंटों की फ़र्श भी पाई।" ISBN 81-85990-30-1

मस्जिद, जिसे मुसलमानों ने नाम दिया 'जन्मस्थान-मस्जिद' का, अपने ही लिखित प्रमाणों में

"इन सभी खुदाईयों से एक और बात स्पष्ट हुई। वह यह कि जन्मभूमि स्थान पर हिंदू मंदिर बनाए गए थे कई बार, केवल पिछले 450 वर्षों को छोड़ कर, जब मुस्लिमों ने मंदिर तोड़ कर उस जगह बनाई एक मस्जिद, जिसे मुसलमानों ने नाम दिया 'जन्मस्थान-मस्जिद' का अपने ही लिखित प्रमाणों में।" ISBN 81-85990-30-1

अब आप अपने आप से पूछिए - जन्मस्थान किसका? यदि बाबर का नहीं, आपका और हमारा नहीं, उन कॉम्युनिस्ट-मार्क्ससिस्ट इतिहासज्ञों का नहीं जो बार-बार समाचार पत्रों में यह कहते नहीं थकते कि राम का नहीं - तो किसका जन्मस्थान? पैग़ंबर मुहम्मद का या फिर कार्ल मार्क्स का?

11वीं-12वीं शताब्दी का आलीशान मंदिर

"इन सभी खुदाईयों से एक और बात स्पष्ट हुई। वह यह कि अंतिम बार, जो आलीशान मंदिर पत्थरों से वहाँ बना होगा, वह रहा होगा 11वीं-12वीं शताब्दी का।"

9वीं-10वीं शताब्दी का प्रतिहार शैली का एक मंदिर

"इसके सिवा कुछ अन्य मूर्तियों के आधार पर निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है कि उसी स्थान पर 9वीं-10वीं शताब्दी का प्रतिहार शैली का एक मंदिर रहा होगा, जबकि गढ़वालों के समय वहाँ एक नए एवं भव्य मंदिर के बनाने की चेष्टा की गई होगी जिसे, वस्तुतः, एक प्रकार से जीर्णोद्धार कहा जा सकता है।" ISBN 81-85990-30-1

दो बार राम जन्मभूमि मंदिर तोड़ा गया - पहली बार मुहम्मद गोरी के उत्तराधिकारियों के द्वारा और दूसरी बार बाबर के द्वारा

पुरातत्वज्ञों ने कम से कम दो बार इस मंदिर को तोड़े जाने की बात नोट की है। एक बार 13वी शताब्दी जिसके बाद उसे फिर से बनाया गया, और उसके बाद 16वी शताब्दी में। पहली बार मुहम्मद गोरी के उत्तराधिकारियों के द्वारा और दूसरी बार बाबर के द्वारा।

ISBN 81-85990-52-2 पृ 95

प्रमाणों का परीक्षण करने देश के 40 पुरातत्वज्ञ आये

"देश के वरिष्ठ पुरातत्वज्ञों की राय जानने के लिए इन सभी विषयों पर, और उन्हें एक अवसर देने के लिए कि वे स्वयं इन प्रमाणों को देखें और इनको अपने हाथ में लेकर जाँचें और अपनी राय दें - अयोध्या के तुलसी स्मारक भवन में देश के कोने-कोने से 40 पुरातत्वज्ञ सम्मिलित हुए 10 से 13 अक्तूबर 1992 के बीच।" ISBN 81-85990-30-1

वे सब हमारे देश के कोने-कोने से आये

"उनमें सम्मिलित थे मद्रास से प्रॉफ़ेसर के वी रमन, धारवाड़ से प्रॉफ़ेसर ए सुन्दरा, बैंगलोर से डॉ एस आर राव, अहमदाबाद से प्रॉफ़ेसर आर एन मेहता, जयपुर से श्री आर सी अग्रवाल, सागर से डॉ एस के पाण्डे, नागपुर से प्रॉफ़ेसर अजय मित्र शास्त्री, बनारस से डॉ टी पी वर्मा, फ़ैज़ाबाद से प्रॉफ़ेसर के पी नौटियाल, पटना से प्रॉफ़ेसर बी पी सिन्हा, भोपाल से डॉ सुधा मलैइया, दिल्ली से प्रॉफ़ेसर के एस लाल एवं दवेन्द्र स्वरूप, इलाहाबाद से प्रॉफ़ेसर वी डी मिश्रा, रीवा से प्रॉफ़ेसर आर के वर्मा, एवं अन्य अनेक जिनमें सम्मिलित थे वाई डी शर्मा, के एम श्रीवास्तव और एस पी गुप्ता जिन्होने अयोध्या में खुदाई एवं परीक्षण का कार्य किया था।" ISBN 81-85990-30-1

परीक्षण के बाद वे सभी एकमत हुए कि वहाँ मंदिर था

"परीक्षण के बाद वे सभी एकमत हुए कि वहाँ जन्मस्थान पर निश्चयतः मंदिर था।"

ISBN 81-85990-30-1

बाबरी ढाँचा अभी गिरा नहीं था, उसके गिरने की आवश्यकता भी नहीं थी

बाबरी ढाँचा अभी गिरा नहीं था, उसके गिरने की आवश्यकता भी तो नहीं थी। न्यायालय की सुनवाई समाप्त हो चुकी थी, बाबरी ढाँचे के गिरने के 1 महीने पहले।

अब आप अपने आप से एक प्रश्न पूछिए - न्यायालयों के पास सारे देश के कोने-कोने से आए 40 पुरातत्वज्ञों के राय उपलब्ध थे। उनकी सारी सुनवाई भी 4 नवंबर 1992 को समाप्त हो चुकी थी।

पूछिए अपने आप से - फिर उन्होने न्याय क्यों नहीं दिया?

3 - न्यायालयों की अकर्मण्यता साक्षी है

पचास वर्षों तक हमारे न्यायालय क्या करते रहे? क्या उन्होने उपलब्ध प्रमाणों को देखा? यदि वे अपना दायित्व नहीं निभाते तो उन्हें कौन सजा दे?

दुनिया भर में सरकारें और न्यायाधीश स्वीकार कर रहे हैं

"आज दुनिया भर में, ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैड, अमरिका में, वहाँ की सरकारें और वहाँ के न्यायाधीश, वहाँ के आदि-निवासियों के अपने धार्मिक स्थानों पर उनके पूजा करने का अधिकार स्वीकार कर रहे हैं।" ISBN 81-85990-75-1 पृ 188

हमारी सरकार और न्यायाधीश कतराते क्यों हैं

तो फिर हमारी सरकार और हमारे न्यायाधीश इससे कतराते क्यों हैं? क्या उन्हें सच्चाई मालूम नहीं थी? या वे जान बूझकर सच्चाई से मुख मोड़े रहना चाहते थे? जनता अपने कर से सरकार का ख़ज़ाना भरती है, और उस ख़ज़ाने से इन न्यायाधीशों को वेतन मिलता है! आइए देखें कि हमारी अँग्रेज़ी ईसाई शिक्षा पद्धति की देन ये न्यायाधीश इस नमक का हक़ कैसे अदा करते हैं?

अयोध्या के मुस्लिम निवासियों ने शपथपत्र पर लिख कर दिया

"फ़ैज़ाबाद के न्यायाधीश ने 3 मार्च 1951 [(1)] को न्यायालय के लिखित प्रमाणों में लिपिबद्ध किया कि अयोध्या के मुस्लिम निवासियों ने शपथपत्र पर यह लिख कर न्यायालय को दिया कि कम से कम 1936 से उस ढाँचे का मस्जिद के रूप में प्रयोग नहीं किया गया, न ही वहाँ कोई नमाज़ अदा की गई। न्यायाधीश ने यह भी लिपिबद्ध किया है कि ऐसा कुछ भी उनके सामने नहीं लाया गया जो उन शपथपत्रों को झूठा सिद्ध कर सके।"

ISBN 81-85990-75-1 पृ 168-169

ध्यान दें, 41 वर्षों के पश्चात 1992 में बाबरी ढाँचा गिरा। अँग्रेज़ों के समय से, 1936 के बाद, उस जगह पर कभी नमाज़ न अदा की गई। जिस जगह पर 57 वर्षों से नमाज़ न अदा की जाए वह जगह मस्जिद नहीं रहती, वह एक स्मारक बन कर रह जाता है। 1949 में हिंदुओं ने उस ख़ाली ढाँचे को, जिसे आज हमारे समाचार पत्र और राजनीतिज्ञ बाबरी मस्जिद कहते नहीं थकते, हिंदू मंदिर के रूप में उपयोग में लाना आरम्भ किया।

57 वर्षों से मस्जिद न रहा, बल्कि 44 वर्षों से मंदिर बना

"वह ढाँचा जिसे हम बाबरी मस्जिद कहते हैं और जो पिछले 44 वर्षों से एक मंदिर बना रहा, उसे मंदिर का आवरण देना स्वाभाविक ही होता। इसीलिए हिंदू चाहते थे कि इस मस्जिदनुमा ढाँचे को, जो अब 57 वर्षों से मस्जिद न रहा, बल्कि 44 वर्षों से अब एक मंदिर बन चुका था, उसे मंदिर का चेहरा दिया जाए। क्या दोष था इसमें?"

ISBN 81-85990-75-1 पृ 148-149

क्या बड़े समाचार पत्रों ने अपना कर्तव्य निभाया या उन्होंने जानबूझ कर मुसलमानों को मिथ्या प्रचार द्वारा भड़काया, साथ ही हिन्दुओं के मन में आत्म-ग्लानी भरी?

बड़े समाचार पत्र जो जनमत तैयार करते हैं, क्या उनका यह कर्तव्य नहीं था कि वे इन तथ्यों को बार-बार जनता के सामने लाते कि अब वह मस्जिद न रहा था। इसके विपरीत, उन्होने जनता को बार-बार बाबरी मस्जिद का नाम लेकर यह एहसास दिलाया कि वह मस्जिद (इबादत अर्थात पूजा का स्थान) ही था।

उसे मस्जिद न कहें, बाबरी ढ़ाँचा कहें

उसे बाबरी मस्जिद कहते-कहते हमारे समाचार पत्रों ने और हमारे राजनीतिज्ञों ने जो छवि सबके मन में आँकी है, वह है एक मस्जिद की, जिसे ढहा दिया हिंदुओं ने। पर सत्य यह है कि हिंदुओं ने एक मस्जिद (पूजा का स्थान) नहीं, बल्कि पिछले 44 वर्षों से हिंदू मंदिर के रूप में प्रयोग किए जाने वाले एक ढाँचे को गिराया था, जहाँ पिछले 57 वर्षों से कभी नमाज़ नहीं पढ़ी गई थी।

अतः उसे मस्जिद का नाम देने की भूल न करें, क्योंकि मस्जिद के नाम से जुड़ी होती है छवि, एक पूजा के स्थान की। सही नाम का प्रयोग अत्यंत आवश्यक है। इसकी उपेक्षा न करें क्योंकि यह हमारी सोच को सही, या ग़लत दिशा देती है।

संदर्भ - आप चाहें तो स्वयं पुष्टि कर सकते हैं

सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय पर डॉ अरुण शोउरी की टीकाओं से हमें बहुत कुछ जानने को मिलता है, जिसके ऐतिहासिक तथ्य हम आपके लिए यहाँ प्रस्तुत करते हैं हमारे अपने शब्दों में। ISBN 81-85990-30-1 डॉ अरुण शोउरी, पृ रोमन 6-11

 ISBN 81-89746-03-0 पुस्तक क्रमांक 03 संस्करण 07

इलाहाबाद उच्च न्यायालय को इसके महत्व का ज्ञान था

हिंदुओं ने न्यायालय से भी अपील की। 4 वर्ष बीत गए। 1955 में इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने लिखा कि यह बड़े ही दु:ख की बात है कि 4 वर्षों तक इस तरह की समस्या अनिर्णीत रही। अर्थात इलाहाबाद उच्च न्यायालय को इस बात का ज्ञान था कि यह समस्या अत्यंत महत्वपूर्ण है, और इसे इस प्रकार अनिर्णित रखना किसी भी प्रकार से उचित नहीं।

उन्हें वेतन मिलता है जनता के दिए हुए कर से

1955 में इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने जब वह बात कही थी तो केवल 4 वर्ष ही बीते थे। देखते-देखते और भी 40 वर्ष बीत गए। न्यायाधीश भूल गए कि उन्हें वेतन मिलता है जनता के दिए हुए कर से। जब जनता न्याय माँगती है उनसे, तो उन्हें इसमें कोई रुचि नहीं। आया जुलाई 1992 और अब भी न्यायालय सुनवाई कर रही थी। शायद ऊँचा सुनते हैं इसलिए 42 वर्ष बीत गए पर जनता की आवाज़ उनके कानों तक न पहुँची!

सर्वोच्च न्यायालय अपनी ज़बान से मुक़र गई

जुलाई 1992 में कर सेवा आरंभ हुई तो अचानक सर्वोच्च न्यायालय की नींद टूटी। उन्होने उत्तर प्रदेश सरकार से कहा कि यदि वे कर सेवा रुकवा सकें तो सर्वोच्च न्यायालय इस मुकदमे को खुद अपने हाथों में ले लेगी और इसे पूरी तरह से निपटा देगी। कर सेवा तो ख़ैर रुक गई पर सर्वोच्च न्यायालय भी अपनी ज़बान से मुक़र गई। उन्होने गेंद फिर इलाहाबाद उच्च न्यायालाय की ओर फेंक दी, बोले जल्दी निपटाओ इसे।

न्यायाधीश गया छुट्टी मनाने और निर्णय गया खड्डे में

हिंदुओं ने सोचा कम-से-कम इस बार न्याय मिलेगा उन्हें। तय किया 6 दिसंबर 1992 को होगी कर सेवा। संयोग से इस बार इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने काम किया और उनकी सुनवाई समाप्त हुई 4 नवंबर 1992 को। उनके पास पूरा 1 महीना बाकी था निर्णय लेने को। उत्तर प्रदेश सरकार और दूसरों ने बार-बार अपील की, कि न्यायालय सुना दे अपना निर्णय, जो भी हो मंज़ूर उसे। पर एक न्यायाधीश चला गया छुट्टी मनाने और निर्णय गया खड्डे में।

कौन उन्हें सजा दे?

6 दिसंबर 1992 को वह ढाँचा गिर गया। उस ढाँचे को गिरने की आवश्यकता न होती यदि न्यायाधीश को छुट्टी अधिक प्यारी न होती। आज न्यायाधीश बाबरी ढाँचे को गिराने

वालों को सजा देना चाहते हैं। जिनकी अकर्मण्यता के कारण यह ढाँचा गिरा, उन्हें कौन सजा देगा?

ये न्यायाधीश दूसरों के लिए न्याय करते हैं, जब ये स्वयं अन्याय करें तो कौन इन्हें कटघरे में खड़ा करे? जनता न भूलें कि उन्हें इसका अधिकार है क्योंकि वे अपने 'कर' से उन्हें वेतन देते हैं। यदि जनता के 'कर' से मिलने वाला वेतन उन्हें मिलना बंद हो जाए तो वे छुट्टी मनाना बंद और कार्य करना आरंभ कर देंगे।

उचित न होगा कि हम राम भक्तों को दोष दें

"इस बात को ध्यान में रखते हुए कि 42 वर्षों के इस अंत हीन मुकदमेबाज़ी के उपरांत, जिस प्रकार से, मूर्खता भरे अहंकार के साथ, इलाहाबाद उच्चन्यायालय ने, पूर्व निर्धारित 6 दिसंबर की कर सेवा के, कुछ ही दिनों पहले, अपने निर्णय को एक बार फिर से ताक पर रख दिया - यह कतई उचित न होगा, कि हम अति-उत्साही राम भक्तों को, उनके न्याय की प्रक्रिया के प्रति निरादर, के लिए दोष दें - उस न्याय की प्रक्रिया के प्रति, जिसका यह दायित्व है, कि वह लोकतांत्रिक व्यवस्था की मर्यादा को, बनाए रखे। निश्चय ही, उन्होने निरादर प्रकट किया है, न्यायालयों का राजनीतिक खेलों के लिए, अनुचित प्रयोग के प्रति। और, उन्होने बिल्कुल सही बग़ावत की है, न्यायाधीशों के हिंदू समाज के प्रति, अवज्ञा के लिए - वह अवज्ञा, जो साफ़ झलकती है, उनके इस विवाद को सुलझाने की अनिच्छा से, वह भी ऐसा विवाद, जो राम जन्मभूमि जैसा महत्वपूर्ण हो।

ISBN 81-85990-75-1 डॉ कोएनराड एल्स्ट पृ 129

कौन था ज़िम्मेदार बाबरी ढाँचे के गिरने का?
वे राम भक्त?
या वे न्यायाधीश जिन्होनें न्याय की मर्यादा न रखी?
उस सर्वोच्च न्यायालय ने,
जिसने उँगली उठाई समूचे हिंदू समुदाय की तरफ़,
इसे एक शर्मनाक घटना बताते हुए,
क्या उन्हें वही उँगली स्वयं अपनी तरफ़ नहीं उठानी चाहिए थी?
यदि अपने गिरेबान में झाँक कर देखा होता उन्होने
तो आज यह समस्या,
समस्या न बनी रहती!

 ISBN 81-89746-03-0 पुस्तक क्रमांक 03 संस्करण 07

4 - ग्यारहवीं शताब्दी का श्री विष्णु-हरि का शिलालेख

जो स्पष्ट रूप से हमें बताता है कि यह मंदिर था श्री राम का

राष्ट्रपति के उस प्रश्न के उत्तर में यह एक अच्छा प्रमाण होता

"6 दिसंबर 1992 को जब वह ढाँचा गिरा तो उसके मलबे से बहुत कुछ मिला जिसमें एक बहुत ही महत्वपूर्ण शिलालेख था, जो एक अच्छा प्रमाण बन सकता था राष्ट्रपति के उस प्रश्न के उत्तर में जो उन्होनें सर्वोच्च न्यायालय से पूछा था। उस शिलालेख में 20 पंक्तियाँ थीं। शिला 5 फ़ुट लंबी, 2 फ़ुट चौड़ी, अढ़ाई इंच मोटी और बहुत ही भारी थी, जिसे 4 हट्टे-कट्टे कर-सेवक बड़ी कठिनाई से उठा पाए थे। वह शिलालेख संस्कृत में, 11वीं सदी की नागरी लिपि में थी। यह शिला उस मंदिर के दीवार पर लगाई गई होगी जिसके निर्माण का वर्णन इस शिलालेख में मिलता है - जिस मंदिर तोड़ कर उसके ऊपर यह मस्जिद बनाई गई होगी। 15वीं पंक्ति हमें स्पष्ट रूप से बताती है कि एक सुंदर मंदिर श्री विष्णु-हरि का, भारी पत्थरों से बनाया गया था। 17वीं पंक्ति हमें बताती है कि यह सुंदर मंदिर, मंदिरों की नगरी अयोध्या जो कि साकेत-मंडल में था - यहाँ ध्यान दीजिए साकेत उस ज़िले का नाम हुआ करता था जिसका अयोध्या एक अंग था - अर्थात यह लिखावट इसी अयोध्या के बारे में थी, जिसकी हम चर्चा कर रहे हैं यहाँ। 19वीं पंक्ति हमें बताती है भगवान श्री विष्णु, जिन्होने मानभंग किया राजा बलि का, व अंत किया दशानन रावण का। यह स्पष्ट रूप से हमें बताती है कि यह मंदिर था श्री राम का, जिन्होने अंत किया था रावण का।

ISBN 81-85990-30-1 डॉ एस पी गुप्ता, पृष्ठ 117-120, उद्धृत - प्रॉफ़ेसर अजय मित्र शास्त्री (द चेयरमैन ऑफ़ एपिग्राफ़िकल सोसायटी ऑफ़ इंडिया) और उनका प्रकाशन पुरातत्व में (ऑफ़िशीयल जर्नल ऑफ़ इंडियन आर्किओलॉजिकल सोसायटी) नंबर 23 (1992-1993)

"बाबरी तरफ़ के प्रॉफ़ेसर आर एस शर्मा एवं अथार अली ने कहा था कि जब तक, उन्हें उन दिनों का ऐसा कुछ लिखा हुआ नहीं दिखाया जाता, जो इस बात को दर्शाता हो कि वहाँ एक जमाने में राम मंदिर हुआ करता था, तब तक वे यह मानने को तैयार नहीं, कि वहाँ कोई हिंदू मंदिर रहा होगा। अब जब श्री विष्णु-हरि का शिलालेख मिला तो ये कहने लगे कि यह शिलालेख जाली है।"

इस पर डॉ एस पी गुप्ता कहते हैं कि "हम अब भी अपनी बात दोहराते हैं, कि आप बुलाइए विश्व के किसी भी कोने से किसी भी विशेषज्ञ को, और यदि परीक्षण के बाद वे कह दें कि यह शिलालेख जाली है, तो हम दो लाख रुपये देने को तैयार हैं। इस चुनौती का वे कोई उत्तर नहीं देते।" ISBN 81-85990-30-1 पृष्ठ 120

न किसी निरपेक्ष विशेषज्ञ को परीक्षण के लिए बुलाते हैं, अपितु समय-समय पर समाचार पत्रों में झूठा बयान देते रहते हैं, जिससे लोग झूठ को सच मानते रहें।

क्या वे अपनी ही कही हुई बात पर विश्वास करते हैं?

इस बात की पुष्टि करते हुए डॉ कोएनराड एल्स्ट हमें बताते हैं कि "यदि ये अपने आप को धर्मनिरपेक्ष कहने वाले, सचमुच अपनी ही कही हुई बात पर विश्वास करते, तो अवश्य ही वे विदेशों से निरपेक्ष पुरातत्वज्ञों को बुला कर इस बात का भाँडा फोड़ सकते थे, कि सब जाली हैं, पर उन्होने ऐसा नहीं किया। वह पूछते हैं ऐसा क्यों?

वह बताते हैं कि "यह मामला तब मंत्री अर्जुन सिंह के अधिकार क्षेत्र में था, जो इस बात की तुरंत व्यवस्था करा सकते थे, क्योंकि वह भी इन लोगों की तरह अपने आप को धर्मनिरपेक्ष गुट का मानते थे। पर हुआ यह कि कपिल कुमार, बी डी चट्टोपाध्याय, के एम श्रीमाली, सुविरा जायसवाल और एस सी शर्मा ने ज़ोर शोर से इसे जाली क़रार दिया।"

ISBN 81-85990-75-1 पृ 181-182

कब तक छुपाओगे सत्य को बादलों के पीछे?
एक दिन सूरज की रोशनी की तरह
बाहर आएगा वह अँधेरे को चीर कर!

5 - क्या था सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय?

3,000 घंटे सोचने के बाद सर्वोच्च न्यायालय ने निर्णय किया कि वे निर्णय नहीं करेंगे! जनता ने उन्हें जो दायित्व दिया उसका निर्वाह कौन करेगा?

मुस्लिम लीडरों का दावा

"मुस्लिम लीडरों ने दावा किया था कि यदि यह सिद्ध कर दिया जाए कि उस जगह पर मस्जिद के पहले एक मंदिर हुआ करता था तो वे वह जगह हिंदुओं को दे देंगे। इस बात पर चंद्र शेखर सरकार ने यह तय किया कि सारा निर्णय इस बात पर टिका होना चाहिए कि क्या वहाँ मस्जिद के पहले मंदिर था?

भारत के राष्ट्रपति ने यही प्रश्न सर्वोच्च न्यायालय से किया। छुट्टियों एवं गर्मी की छुट्टियों को छोड़ कर, सर्वोच्च न्यायालय के 5 न्यायाधीशों ने सप्ताह में 3 दिन, फ़रवरी से सितंबर 1994 तक, मुकदमे पर सुनवाई की और अंत में निर्णय लिया कि हम उत्तर नहीं देना चाहते।"

ISBN 81-85990-30-1 अरून शोउरी पृ रोमन 10

जरा सोचिए, 3,000 घंटे उन्होने बिताए इस बात पर और अंत में परिणाम लड्डू। पूछिए 3,000 घंटे कैसे? फ़रवरी से सितंबर तक 8 महीने होते हैं। 5 न्यायाधीश गुणा 8 महीने, गुणा 4 सप्ताह प्रति महीने, गुणा 3 दिन प्रति सप्ताह, गुणा 7 घंटे प्रति दिन, कुल 3,360 घंटे। इस में से माना कि 360 घंटे उनकी छुट्टियों के। बाकी रहे 3000 घंटे।

सर्वोच्च न्यायालय के 3 न्यायाधीशों का न्याय

भारत के राष्ट्रपति को उत्तर दिया सर्वोच्च न्यायालय के 3 न्यायाधीशों ने। उनके नाम थे मुख्य न्यायाधीश एम एन वेन्कटाचालिआह, न्यायाधीश जे एस वर्मा, न्यायाधीश जी एन रे।

"हम बड़े आदर के साथ जवाब देना अस्वीकार करते हैं और इसे आपको वापस भेजते हैं। पैरा 100 (11) उनके न्याय का। उन तीनों ने अपने इस न्याय पर नई दिल्ली में 24 अक्टूबर 1994 को हस्ताक्षर किए थे।" ISBN 81-85990-30-1 सुप्रीम कोर्ट जजमेंट पृ 64

सर्वोच्च न्यायालय के 2 न्यायाधीशों का न्याय

भारत के राष्ट्रपति को उत्तर दिया सर्वोच्च न्यायालय के 2 न्यायाधीशों ने। उनके नाम थे न्यायाधीश ए एम अहमदी, न्यायाधीश एस पी भरूचा।

"राष्ट्रपति को हम वापस करते हैं आदर के साथ, बिना उत्तर दिए। पैरा 165 उनके न्याय का। उन दोनों ने अपने इस न्याय पर नई दिल्ली में 24 अक्टूबर 1994 को हस्ताक्षर किए।" ISBN 81-85990-30-1 द सुप्रीम कोर्ट जजमेंट, पृ 88

क्या राजनयिक नेताओं ने अपना दायित्व निभाया?

राजनयिक नेता जो जनमत तैयार करते हैं, क्या उनका यह कर्तव्य नहीं था कि वे इन तथ्यों को बार-बार जनता के सामने लाते? यह न करके उन्होने जनता को बार-बार यही कहा कि हमें सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय का अनुसरण करना चाहिए। हमारे राज नेता चाहते हैं कि हम भागते रहें, इस मृगमरीचिका के पीछे, तब तक, जब तक हम थक हार कर बैठ न जाएँ।

सर्वोच्च न्यायालय ने निर्णय किया कि वे निर्णय नहीं करेंगे

भारत के राष्ट्रपति ने सर्वोच्च न्यायालय से क्या पूछा था? बस यही कि क्या वहाँ मस्जिद के पहले मंदिर हुआ करता था? सर्वोच्च न्यायालय ने क्या कहा - हम उत्तर नहीं देगे। कब कहा, 3,000 घंटे सोच-विचार करने के बाद।

इसे बड़े सुंदर ढंग से, पंजाब उच्च न्यायालय के, अवकाश प्राप्त मुख्य न्यायाधीश एम रामा जॉयस ने, (राष्ट्र के संविधान के धारा 143 (1) के अंतर्गत राष्ट्रपति के विशेष संदर्भ संख्या 1/1993 का उद्धरण देते हुए), कहा

"सर्वोच्च न्यायालय ने निर्णय किया, कि वे निर्णय नहीं करेंगे।"

ISBN 81-85990-30-1 मुख्य न्यायाधीश एम रामा जॉयस, पृ 96

44 साल और 80 करोड़ हिंदुओं की भावनाओं की क़ीमत

कितना सुंदर निर्णय था हमारे सर्वोच्च न्यायालय का। न्याय हो तो ऐसा। इतिहास के पन्नों पर सुनहरे अक्षरों में लिखा जाना चाहिए इसे। अब तक हमने देखी हमारे सर्वोच्च न्यायालय की मुस्तैदी, 44 साल और 80 करोड़ हिंदुओं की भावनाओं की क़ीमत, इन न्यायाधीशों की नज़रों में। और अब देखिए जब इनकी पीठ पर लात पड़ती है तो कितना दर्द होता है इन्हें।

जाके पैर न पड़ी विवाई सो क्या जाने पीर पराई

अभी की बात है, जब सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश ने कहा -

"जब समाचार पत्रों ने, कामवासना के कलंक के संदर्भ में, कई न्यायाधीशों का नाम उछाला, तो मैं कई रातों तक सो नहीं सका।"

सर्व्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश, द फ्री प्रेस जर्नल, मुंबई संस्करण, 29-3-2003, पृ 3

मज़े की बात तो यह है, कि तुरंत तहक़ीक़ात की गई। उन्होने 50 साल नहीं लिए, क्योंकि कालिख उनके मुँह पर आन पड़ी थी।

शासक व शासित की भावना में जी रहे हैं ये आज भी

पर जब प्रश्न उठता है 80 करोड़ हिंदुओं की भावनाओं की, तो 44 तो क्या उसके बाद और 8 वर्ष और बीत चुके हैं, पर सर्वोच्च न्यायालय तो यही सोचती - हम हैं सर्वोच्च, अत: हमारी मर्ज़ी, हम लें 52 साल या 100 साल, कौन पूछने वाला हमें? ये आज भी अपने आप को, अँग्रेज़ों की तरह, इस देश के शासक वर्ग का हिस्सा मानते हैं! यह है उनकी अँग्रेज़ी ईसाई शिक्षा पद्धति का नतीजा!

न्याय का समय पर न दिया जाना
अपने आप में अन्याय के समान होता है।
उन्हें कटघरे में कौन खड़ा करे
जो समूचे राष्ट्र के प्रति अन्याय करते हैं?

ISBN 81-89746-03-0 पुस्तक क्रमांक 03 संस्करण 07

6 - धर्मनिरपेक्षता की आड़ में

झूठ जिनकी विरासत है और जो झूठ बाँटते फिरते हैं

जानबूझ कर असत्य का प्रचार

24 दिसंबर 2002 को टाइम्स ऑफ़ इंडिया ने एक ख़बर छपी जिसमें उन्होने शीरीन रत्नागर को मुम्बई के नामी पुरातत्वज्ञ एवं जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय के सेवानिवृत पुरातत्व का प्रॉफ़ेसर बताया। शीरीन रत्नाकर ने पाठकों को विश्वास दिलाया कि वहाँ मस्जिद के पहले मंदिर होने के उपयुक्त पुरातात्विक (खुदाई के) प्रमाण नहीं है।

टाइम्स ऑफ़ इंडिया का उद्देश्य क्या है?

मैने अगले ही दिन टाइम्स ऑफ़ इंडिया को लिखा, बहुत सारे पुरातात्विक (खुदाई के) प्रमाणों का उल्लेख कर, पर टाइम्स ऑफ़ इंडिया ने उसे नहीं छापा, न मेरे पत्र का कोई उत्तर दिया। मेरे मन में प्रश्न उठा, आख़िर टाइम्स ऑफ़ इंडिया का उद्देश्य क्या है? पाठकों तक सच्चाई को पहुँचाना, या उसे छुपाना और पाठकों के मन में वहम फैलाना?

इसी प्रकार की कई और झूठ हमने टाइम्स ऑफ़ इंडिया को फैलाते देखा, जिनका विवरण हम अपनी अन्य पुस्तकों में देंगे उचित स्थानों पर। प्रत्येक बार हम उन्हें लिखते रहे और वे उसे अनदेखा करते रहे, उसके बाद हमने निर्णय लिया कि हम ऐसे समाचार पत्र को नहीं पढेंगे जो जान बूझ कर झूठ को फैलाता है और सच को दबाता है। प्रत्येक व्यक्ति जो ऐसे समाचार पत्र को ख़रीदता है वह एक मिथ्यावादी को परोक्ष रूप से सहायता करता है।

जनता का खा कर ये निर्लज्ज जनता को गुमराह करते हैं

अपने नाम और पद का लाभ उठाकर, शीरीन रत्नागर जैसे प्रॉफ़ेसर यदि साधारण जनता को गुमराह करते रहेंगे, तो जनता को एक दिन निर्णय लेने पर बाध्य होना पड़ेगा कि ऐसे प्रॉफ़ेसरों के साथ कैसा व्यवहार किया जाए, क्योंकि ये विश्वविद्यालयों के प्रॉफ़ेसर सरकार के पैसों पर जीते है, जो जनता के कर से आता है, और जनता का खा कर ये निर्लज्ज जनता को गुमराह करते हैं।

ये धर्मनिरपेक्ष अक्सर खुदाई का विरोध करते रहे

"बाबरी मस्जिद के पक्ष वाले, ये अपने आप को धर्मनिरपेक्ष कहने वाले, अक्सर खुदाई का विरोध करते रहे, जबकि हिंदू पक्ष बराबर इसकी माँग करता रहा।"

ISBN 81-85990-75-1 डॉ कोएनराड एल्स्ट पृ 182

पूछिए ऐसा क्यों? क्योंकि ये झूठे धर्मनिरपेक्ष (जो वास्तव में कॉम्युनिस्ट-मार्क्सिस्ट बुद्धिजीवी हैं, धर्मनिरपेक्षता की ख़ाल ओढ़े हुए) जानते थे कि जितनी खुदाई होगी, उतनी ही उनकी झूठ की पोल खुलती जाएगी।

बाबरी ढाँचा अभी गिरा नहीं था

"मुस्लिम लीडरों ने दावा किया था कि यदि यह सिद्ध कर दिया जाए कि उस जगह पर मस्जिद के पहले एक मंदिर हुआ करता था तो वे वह जगह हिंदुओं को दे देंगे। इस बात पर चंद्र शेखर सरकार ने यह तय किया कि सारा निर्णय इस बात पर टिका होना चाहिए कि क्या वहाँ मस्जिद के पहले मंदिर था?

चंद्रशेखर सरकार के अनुरोध पर बीमैक व विहिप इस बात के लिए सहमत हुए कि वे अपने-अपने पक्ष के ऐतिहासिक प्रमाण प्रस्तुत करेंगे (दिसंबर 1990 व जनवरी 1991) और उन पर बहस कर इस निर्णय पर पहुँचेंगे कि क्या जन्मभूमि-मस्जिद के पहले वहाँ मंदिर हुआ करता था।" ISBN 81-85990-75-1

ध्यान दीजिए 1990-1991 की बात है यह। बाबरी ढाँचा अभी गिरा नहीं था।

ये सभी बीमैक की चाकरी में थे

"प्रॉफ़ेसर हर्ष नारायण, प्रॉफ़ेसर बी पी सिन्हा, डॉ एस पी गुप्ता, डॉ बी आर ग्रोवर एवं श्री ए के चैटर्जी ने विहिप (विश्व हिंदू परिषद) का प्रतिनिधित्व किया। डॉ एस पी गुप्ता विहिप से विधिवत जुड़े हुए थे पर अन्य लोग नहीं। बीमैक (बाबरी मस्जिद ऐक्शन कमिटी) के लोग, आइसीएचआर (इंडियन काउंसिल ऑफ़ हिस्टॉरिकल रिसर्च - भारतीय ऐतिहासिक खोज परिषद) के प्रॉफ़ेसर इर्फ़ान हबीब के पास गए, जिन्होने सचमुच के इतिहासज्ञों की एक टोली जुटाई जिसका नेतृत्व प्रॉफ़ेसर आर एस शर्मा ने किया। इन लोगों ने इस बात का अच्छा प्रचार किया कि वे सब स्वतंत्र इतिहासज्ञ थे। बाद में यह बात सामने आई कि वे सभी बीमैक की चाकरी में थे।" ISBN 81-85990-75-1

अर्थात वे जो भी कह रहे थे वह, स्वतंत्र रूप से नहीं, अपितु अपने स्वार्थ से प्रेरित होकर, बीमैक से पैसा लेकर। यह तो है उनका चरित्र जो झूठ की बुनियाद पर टिका हुआ है। यह एवं बहुत सारी अन्य बातें उनके चरित्र के बारे में हम जान पाते है युरोपियन इतिहासज्ञ डॉ कोएनराड एल्स्ट से, जिन्होने भारत में आकर और यहाँ रहकर इन बातों पर खोज बीन की।

उन्होने जान बूझकर इस झूठ का प्रचार क्यों किया?

प्रश्न उठता है कि उन्होने आरंभ से जान बूझकर इस झूठ का प्रचार क्यों किया? इस झूठ को बड़े समाचार पत्रों के माध्यम से फैलाने की क्या आवश्यकता थी?

इसके पीछे छुपी एक बड़ी सोची समझी चाल थी। वे जानते थे कि जनता उस बात को याद रखती है, जो बात शुरू-शुरू में ज़ोर-शोर से कही जाती है। आरंभ में पाठकों की रुचि प्रत्येक नए विषय पर होती है, पर समय के साथ वे विषय पुराने पड़ जाते हैं और पाठकों की रुचि उनसे हट जाती है। उनकी जगह नए विषय पाठकों की रुचि को आकर्षित करते हैं। लोग वही याद रखते हैं जो उन्होने आरंभ में हो-हल्ले के साथ सुनी थी। बाद में, अगर कहीं समाचार पत्र के किसी छोटे से कोने में एक छोटा सा खंडन या विरोध छपता भी है, तो "उन्हीं" पाठकों की दृष्टि उस पर बहुधा पड़ती ही नहीं। इस बात का भरपूर लाभ उठाया उन्होने। जनता के मन पर यह छाप छोड़ दी कि वे सभी स्वतंत्र इतिहासज्ञ थे, और जो कुछ भी वे कह रहे थे, बिना किसी स्वार्थ के, केवल सत्य से प्रेरित हो कर के, जबकि यह सब वे बीमैक से पैसा लेकर कर रहे थे, सत्य को असत्य से ढाँकने के लिए, और इसलिए उन्होनें बेईमानी का सहारा लिया आरम्भ से ही।

जब एक ब्राह्मण कह रहा है तो संभवतः उसकी बात सच ही होगी

प्रॉफ़ेसर इर्फ़ान हबीब काफ़ी चालाक निकले। उन्होने स्वयं इस टोली का नेतृत्व नहीं किया। वे जानते थे कि मुस्लिम होने के कारण उनकी स्वतंत्र भावना के ढोंग पर संदेह किया जा सकता है। उन्होने ख़रीद लिया हिंदू नाम वाले कॉम्युनिस्टों को सहजता से जो पहले से ही कट्टर हिंदू-विरोधी रहे थे।

साधारण जनता इस बात को नहीं जानती थी। वे जब शर्मा नाम पढ़ते तो यही समझते कि जब एक ब्राह्मण [1] कह रहा है तो संभवतः उसकी बात सच ही होगी। वे क्या जानते कि यह ब्राह्मण के नाम की आड़ में छुपा, एक अ-ब्राह्मण, घोर नास्तिक (कॉम्युनिस्ट-मार्क्ससिस्ट) है, जो श्री राम तो क्या, भगवान तक के अस्तित्व में विश्वास नहीं रखता। इर्फ़ान ने शर्मा को, और शर्मा ने अपनी टोली को वैसे ही चुना। चोर-चोर मौसेरे भाई की कहावत तो आपने सुनी ही होगी?

[1] हाल ही में भागलपुर के एक प्रोफेसर ने मुझे संदेश भिजवाया कि आर एस शर्मा ब्राह्मण नहीं बल्कि एक भूमिहार है और ब्राह्मण अभी तक इतने नीचे नहीं गिरा है कि वह ऐसी ओछी हरकत करे। संदेश वाहक ने मुझे कुछ ऐसा बताया (जहाँ तक मुझे याद है) कि भूमिहार वे हुआ करते हैं जिन्होंने भूमि के टुकड़े के लालच में अपना ब्राह्मणत्व बेच दिया। एक भूमिहार ने कोई 35 वर्ष पहले मुझे बताया था कि भूमिहार परशुराम के वंशज हुआ करते हैं। अब भूमिहार जो भी हों, एक आम भारतीय इस बात को नहीं जानता, अस्सी प्रतिशत लोग यह भी नहीं जानते होंगे कि भूमिहार किस चिड़िया का नाम है। और उसे क्या मालूम कि कौन सा शर्मा भूमिहार है और कौन सा ब्राह्मण, जब अनेक शर्मा अपने आप को ब्राह्मण बताया करते हैं। शर्मा नाम से आम आदमी के मन में ब्राह्मण की छवि उभरती होगी। इसी कारण मैंने यह स्पष्टीकरण दिया था (1) "यह" शर्मा मार्क्ससिस्ट है (2) मर्क्ससिस्ट ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं करते। प्रश्न ब्राह्मणों के नीचे गिरने का नहीं है। 13-11-2006

उन्हें प्रमाणों को अध्ययन करने का समय ही नहीं मिला

"आरंभ से ही, दोनों पक्षों की सहमति से, ऐसा निश्चय किया गया था कि विहिप को, उनके प्रमाणों पर, बीमैक लिखित उत्तर देगी 10 जनवरी के पहले, पर उन्होने अभी तक यह किया नहीं था। उसके बाद और दो सप्ताह बीत चुके थे, 24 जनवरी को दोनों पक्ष मिले, अपने-अपने प्रमाणों पर बात करने के लिए। अब तो कम से कम उन्हें वह लिखित उत्तर देना था, पर नामी कॉम्युनिस्ट इतिहासज्ञ प्रॉफ़ेसर आर एस शर्मा ने इस बैठक में कहा, कि उन्हें और उनके साथियों को, विहिप के द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रमाणों को अध्ययन करने का समय ही नहीं मिला।" ISBN 81-85990-75-1 पृ 152

जैसे वकील तारीख पर तारीख लेते जाते हैं

यहाँ दो बातें ध्यान देने के योग्य हैं। पहली कि यह टालमटोल की नीति। समय पर (10 जनवरी) उत्तर न देना। उसके बाद और समय बीतने देना। बाद में (24 जनवरी) कहना कि हमें आपके प्रमाणों को पढ़ने का समय ही नहीं मिला, इतने व्यस्त थे हम! पर दूसरी बात इससे भी कहीं संगीन थी जिसमें साफ़ बेईमानी झलकती है, सुनिए उसकी कहानी।

वक्तव्य जारी किया - बहुत ज़ोर-शोर से प्रचार करवाया

24 जनवरी को जिस दिन उन्होने बैठक में कहा कि हमें आपके प्रमाणों को देखने का समय तक नहीं मिला, उसके एक सप्ताह पहले ही इसी प्रॉफ़ेसर आर एस शर्मा ने अपने 41 इतिहासज्ञ साथिओं के हस्ताक्षर के साथ एक वक्तव्य जारी किया था, जिसका उन्होने बहुत ज़ोर-शोर से प्रचार करवाया था। उन 42लों ने उस वक्तव्य में भारत की जनता को यह कहा था कि निश्चित रूप से, अवश्य ही, कहीं भी, कोई भी, प्रमाण नहीं है कि उस स्थान पर पहले कोई राम-मंदिर था। इसी बात पर प्रॉफ़ेसर आर एस शर्मा ने 'राम के अयोध्या का सांप्रदायिक इतिहास' (अँग्रेज़ी में) नाम की एक छोटी पुस्तक भी छपवाई थी।

ISBN 81-85990-75-1 पृ 152

कौन सा उनका असली झूठ था?

यहाँ प्रश्न यह उठता है कि यदि सचमुच उन 42ओं ने विहिप के दिए हुए प्रमाण पढ़े नहीं थे, तो किस आधार पर ज़ोर-शोर से उन्होने जनता को बताया था कि निश्चित रूप से, अवश्य ही, कहीं भी, कोई भी, प्रमाण नहीं है कि उस स्थान पर पहले कोई राम-मंदिर था?

इसी प्रश्न का दूसरा पहलू यह है कि यदि वे इतने अधिकार के साथ कह सकते थे कि निश्चित रूप से, अवश्य ही, कहीं भी, कोई भी, प्रमाण नहीं है कि उस स्थान पर पहले कोई राम-मंदिर था, तो फिर 24 जनवरी की बैठक में उन्होने क्यों यह बहाना प्रस्तुत

किया कि हम बहस के लिए तैयार नहीं हैं क्योंकि हमने आपके दिए प्रमाण अभी तक पढ़े ही नहीं हैं?

कौन सा उनका असली झूठ था? यह कि (1) निश्चित रूप से, अवश्य ही, कहीं भी, कोई भी, प्रमाण नहीं है कि उस स्थान पर पहले कोई राम-मंदिर था, या (2) कि इस वक्तव्य को जारी करने के बहुत पहले आपने हमें जो प्रमाण अध्ययन करने के लिए दिए थे उन्हें हमने पढ़े तक नहीं?

जनता के मन में घर कर जाएगी वह बात

ऐसा उन्होने क्यों किया? वे जानते थे कि जनता के मन में घर कर जाएगी वह बात जो पहले एक बार ज़ोर-शोर से प्रचारित की गई, और जनता उसे ही याद रखेगी। एक सप्ताह के पश्चात बैठक में वास्तव में क्या हुआ इस बात की जनता को कोई जानकारी तक न होगी क्योंकि समस्त बड़े समाचार पत्र उसे छापेंगे ही नहीं। यह एक सोची समझी साज़िश थी।

बीमैक के इतिहासज्ञ आए ही नहीं

"अगली बैठक निश्चित की गई अगले दिन 25 जनवरी के लिए। पर बीमैक के इतिहासज्ञ आए ही नहीं। उन्होने न तो ऐसे कोई लिखित प्रमाण उपस्थित किए जो दर्शाते हों कि राम मंदिर वहाँ कभी न था, न ही उन्होने कोई लिखित खंडन दिया विहिप के प्रमाणों का, न ही उन्होने उपलब्ध प्रमाणों पर आमने-सामने बैठ कर चर्चा की, वे इससे दूर ही रहे। इस प्रकार से भारत सरकार की चेष्टा व्यर्थ गई, एक समाधान खोजने की, उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर, आपसी चर्चा से।" ISBN 81-85990-75-1 पृ 153

इसे षड़यंत्र नहीं तो और क्या कहेंगे?

आप देख रहे हैं कि यह एक सोची समझी चाल का नतीजा है। जब प्रमाणों की बात आए तो पीछे हट जाओ। पर साथ ही बड़े समाचार पत्रों का सहारा लेकर झूठ को फैलाओ ताकि जनता झूठ को ही सच्चाई जाने, और ऐसा ही माने।

अब इस झूठ की परिसीमा भी देख लीजिए

"जब जन सभा में यह प्रश्न पूछा गया कि इतिहासज्ञों के वाद-विवाद का क्या परिणाम हुआ, तो प्रॉफ़ेसर इर्फ़ान हबीब (अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के इतिहासज्ञ) और सुबोध कांत सहाय (जो उस समय गृह मंत्री थे) ने कहा कि विहिप वाले भाग गए वाद-विवाद से। और उनकी समाचार पत्रों के साथ मिलीभगत देखिए, सभी बड़े समाचार पत्रों ने इस सरासर झूठ का खंडन छापने तक से मना कर दिया।"

ISBN 81-85990-75-1 पृ 170

यह तो है चरित्र हमारे बड़े समाचार पत्रों का

जनता को झूठ की जानकारी दी गई और सच को दबा दिया गया। यह है चरित्र हमारे बड़े समाचार पत्रों का। यह चरित्र उस ईसाई शिक्षा पद्धति की देन है जहाँ हम अपने बच्चों को भेजने में बड़ा गर्व अनुभव करते हैं। समस्या को, समस्या के रूप में देखना पर्याप्त नहीं, हमें उसकी जड़ तक पहुँचने की आवश्यकता है। अपनी आने वाली पुस्तकों में हम इस समस्या के जड़ तक आपकी यात्रा कराएँगे, धीरे-धीरे एक-एक कदम लेकर। अधर्म जब फैलता है चारों तरफ़ तो घोर अँधेरा कर देता है। तब आवश्यकता होती है किसी अर्जुन की जो अधर्म का नाश करे।

इतिहासज्ञों की बहस के बारे में अधिकतर लोग नहीं जानते

"अयोध्या में (मस्जिद के पहले मंदिर होने) के प्रमाणों पर इतिहासज्ञों की जो बहस हुई थी (1990-91 के दौरान) उसके बारे में अधिकांशतः लोग नहीं जानते। अधिकतर अँग्रेज़ी समाचार पत्र [1] एवं सरकारी टीवी निरंतर बीमैक (बाबरी मस्जिद ऐक्शन कमिटी) के पक्ष में रही थीं और उन्होने सच्ची ख़बरों को जन-साधारण तक पहुँचने नहीं दिया। उनके समाचार अपूर्ण हुआ करते थे। जैसे ही बीमैक की हार स्पष्ट हुई, उनकी ख़बरें क्रमशः धुंधली होती गई।" ISBN 81-85990-75-1 डॉ कोएनराड एल्स्ट, पृ 187

[1] अँग्रेज़ी समाचार पत्रों से तात्पर्य होगा अँग्रेज़ी समाचार पत्र एवं उनके भारतीय भाषाओं में संस्करण

शैक्षिक-कपट एवं राजनीति-प्रेरित-पाण्डित्य

"भविष्य के इतिहासज्ञ यह जानेंगे कि मस्जिद के पहले मंदिर न होने का तर्क, शैक्षिक-कपट एवं राजनीति-प्रेरित-पाण्डित्य का एक ज्वलंत उदाहरण थी। शैक्षिक, सांस्थानिक एवं मीडिया की शक्ति के द्वारा एक नई शैक्षिक-पत्रकारी सहमति तैयार की गई थी, जिसके द्वारा जाने-माने ऐतिहासिक सत्य को (कपट के द्वारा) झुठलाया गया, और उन लोगों के मन में इस भ्रम को फैलाया गया जो समाज में प्रतिष्ठावान एवं प्रभावशाली तो थे पर जिन्हें ऐतिहासिक सत्यों का प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं था। पर सत्य तो सत्य ही रहेगा और उसे निरंतर छुपाए जाने की कोशिश छुप न सकेगी क्योंकि नई पीढ़ी के विद्वान सारी बातों पर पुनः अनुसंधान करेंगे।" ISBN 81-85990-75-1 डॉ कोएनराड एल्स्ट, पृ 21-22

बाबरी ढाँचा अभी गिरा नहीं था

सोचिए 1990-1991 की बात है यह। बाबरी ढाँचा अभी गिरा नहीं था। उसके गिरने की नौबत भी न आती यदि इन बीमैक के विद्वानों(?) में थोड़ी भी ईमानदारी बची होती। पर ऐसा होता कैसे?

जो भगवान को मानते नहीं उनका ईमान क्या

ये कॉम्युनिस्ट-मार्क्ससिस्ट भगवान के अस्तित्व को तो मानते नहीं। उनके लिए भगवान एक ऐतिहासिक संकल्पना है जैसा कि लक्ष्मी लिओ ने मुझे लिखा था। जो यह मानते हैं कि भगवान इतिहास की वस्तु हैं, और ये लोग उस इतिहास को लिखने वाले हैं। जो भगवान को नहीं मानते उनका ईमान क्या! उन्हें मैं किस प्रकार की श्रद्धा दे सकता हूँ?

बीमैक के विद्वान प्रमाण छुपाते या प्रमाण नष्ट करते हुए पकड़े गये

"कम से कम चार बार विहिप के विद्वानों ने बीमैक के विद्वानों को प्रमाण छुपाते या प्रमाण नष्ट करते हुए पकड़ा। ये वे अवसर थे जिन पर ये चोरियाँ पकड़ी गई। कितनी और ऐसी चोरियाँ जो पकड़ में नहीं आईं उनका हमें ज्ञान तक नहीं। इन चार पकड़ी गई चोरियों का खंडन बीमैक के विद्वानों ने नहीं किया। न ही बीमैक के विद्वानों ने ऐसा कोई आरोप विहिप के विद्वानों पर लगाया।" ISBN 81-85990-75-1 डॉ कोएनराड एल्स्ट, पृ 17-18

सम्भवतः धन में बड़ी शक्ति होती है

इससे स्पष्ट होता है कि जहाँ एक तरफ़ विहिप के विद्वानों को चोरी का सहारा लेना नहीं पड़ा क्योंकि सच्चाई उनके साथ थी, वहीं दूसरी तरफ़ बीमैक के विद्वान बार-बार झूठ और चोरी का सहारा लेते रहे, अपनी झूठी बुनियाद को छुपाए रखने के लिए। सभी बड़े समाचार पत्रों ने भी उनका भरपूर साथ दिया।

संभवत: धन में बड़ी शक्ति होती है? कितना धन आया होगा अरब देशों से हवाला के जरिए, कुत्तों के सामने हड्डियाँ डालने के लिए? समय-समय पर ये बड़े समाचार पत्र 'सर्वे' करवाते हैं और 'स्टैटिस्टिक्स' का दुरुपयोग करते हुए यह प्रकाशित करते हैं कि 'सर्वे' ने यह पाया कि हमारे देश की जनता सबसे अधिक विश्वसनीय समाचार पत्रों को मानती है। इस प्रकार से वे अपनी छवि को स्वयं ही सौन्दर्य प्रदान करते जाते हैं। इस तकनीक को कहते हैं 'फेस-बिल्डिंग'। ईसाई चर्च ने इस तकनीक के प्रयोग में बड़ी महारथ हासिल कर ली है और ईसाई-अँग्रेज़ी कॉनवेंटों की पैदावार भी इसका प्रयोग बखूबी करते हैं।

देश का दुर्भाग्य यह कि हमारे न्यायाधीश भी

देश का दुर्भाग्य यह कि हमारे न्यायाधीश भी इन चोर-विद्वानों से अत्यंत प्रभावित रहे हैं। यदि ये चोर-विद्वान इन पेट्रो-डॉलर के भूखे समाचार पत्रों के द्वारा इस बात की घोषणा करते हैं कि बाबरी ढाँचे के नीचे मंदिर नहीं था, तो ये न्यायाधीश उससे एक कदम आगे बढ़ कर जानने की चेष्टा नहीं करते कि क्या वे उन्हें मूर्ख तो नहीं बना रहे हैं।

क्या वे अपने स्थान पर बने रहने के योग्य है?

भारतवर्ष के राष्ट्रपति ने उनसे यही प्रश्न पूछा था, पर इन न्यायाधीशों ने इतने सारे प्रमाणों के रहते हुए भी, 3000 घंटे समय नष्ट करने के बाद, यह जानने की चेष्टा नहीं

की कि सत्य क्या है। उनके आचरण से ऐसा लगता है कि उन्हें सत्य से कुछ लेना-देना नहीं है। जनता उनसे पूछे कि क्या वे अपने स्थान पर बने रहने के योग्य है?

बड़ी मात्रा में इतिहास में जालसाजियां की

"अयोध्या बहस ने हिंदुओं में एक ऐतिहासिक बोध को जगाया। अतः अब यह कुछ समय की ही बात है कि (अपने आप को) धर्मनिरपेक्ष (कहने वाले) इतिहासज्ञों के द्वारा तैयार किए जाली इतिहास का भाँडा फूट जाएगा। उनकी जीविका व प्रतिष्ठा अब दाँव पर लगी है।

राजनयिक व शासकीय स्वार्थों के प्रश्रय की वजह से, इन पुरुष और इन स्त्रियों ने अनेक वर्षों से वह मान्यता, पद एवं विशेष सुविधाएँ भोगीं, जो उनकी योग्यताओं की तुलना में असाधारण रूप से अधिक थीं। उससे भी बुरी बात यह है कि उन्होने अपने राजनीतिक उद्देश्यों एवं पेशे गत स्वार्थों की उन्नति के लिए बड़ी मात्रा में इतिहास में जालसाज़ियाँ की।

आज दाँव पर लगी है इन पुरुषों और इन स्त्रियों की न सिर्फ़ जीविका और प्रतिष्ठा बल्कि एक साधारण मानव के रूप में उनकी पहचान भी। यह स्वीकार करना कठिन होता है कि हम असत्य के आधार पर जीते रहे थे, उससे भी कठिन होता है यह स्वीकार करना कि हमने अपनी जीविका की नींव रखी थी झूठ पर।"

ISBN 81-85990-52-2 डॉ एन एस राजाराम, पृ 91-92

जब प्राध्यापक-प्राध्यापिकायें ही बेईमानों के सरताज होंगे

ऐसे बेईमानों को उचित सजा का प्रावधान हमारे आधुनिक न्यायशास्त्र में नहीं है। आज हमारे समाज में इसलिए बौद्धिक बेईमानी इतनी बढ़ गई है। जब समाज के कर्णधार ही बेईमानों की जात होगी तो बाक़ी प्रजा कैसी पैदा होगी?

जब प्राध्यापक और प्राध्यापिकाएँ ही बेईमानों के सरताज होंगे तो उनके पद चिह्नों पर चलने वाले छात्र-छात्राएँ कैसे बनेगें? यह प्रश्न आप स्वयं अपने आप से पूछ कर देखिए!

7 - इस सारे समस्या की जड़ कहाँ है?

जहाँ जड़ है वहीं हमें इसका हल खोजना होगा

तुलना श्री राम की हिटलर व मुसोलिनि से

अब उनके पद चिह्नों पर चलने वाली एक आदर्श छात्रा का उदाहरण देखिए।

 ISBN 81-89746-03-0 पुस्तक क्रमांक 03 संस्करण 07

"प्रॉफ़ेसर मंजरी काट्जू तुलना करतीं हैं श्री राम की हिटलर व मुसोलिनी से।"

पुस्तक समीक्षा, एम वी कामथ, द फ्री प्रेस जरनल में प्रकाशित, मुम्बई संस्करण, 30 मार्च 2003, स्पेक्ट्रम पृष्ठ 6 स्तम्भ 3

इस पर उन्हें मिलती है डॉक्टरेट की उपाधि। धन्य है वह विश्वविद्यालय जिसने दी उपाधि उनको डॉक्टर की, बनाया उन्हें प्रॉफ़ेसर।

एक पीढ़ी के बाद दूसरी पीढ़ी तैयार होती रहती है।

उन्हें डॉक्टर की उपाधि देने वाले एवं उन्हें प्रॉफेसर बनाने वाले भी तो ये प्राध्यापक एवं प्राध्यापिकाएँ ही हैं जिन्होनें झूठ विरासत में पाई है और जो झूठ बाँटते फिरते हैं। इस प्रकार से उनकी फ़सलें बढ़ती जाती हैं - एक पीढ़ी के बाद दूसरी पीढ़ी तैयार होती रहती है। सोचिए क्या होगा, आप के बच्चों का, जो सीखेंगे उनसे कि हमारे श्री राम थे, एक जानवर उन हिटलर व मुसोलिनी की तरह।

दोष वंश का नहीं, दोष शिक्षा का है

और यह मंजरी काट्जू हैं कौन? इनके दादाजी हुआ करते थे अध्यक्ष विश्व हिंदू परिषद के। वही विश्व हिंदू परिषद जो श्री राम मंदिर के लिए लड़ने को बना था! क्या बीती होगी उन पर? क्या उन्होने सोचा होगा कि एक दिन ऐसे भी नमूने पैदा होंगे उनके वंश में?

दोष वंश का नहीं, दोष शिक्षा का है। हम भेज देते हैं अपने बच्चों को ईसाई स्कूलों में और फिर दिल्ली के जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय जैसे कॉम्युनिस्ट-मार्क्ससिस्टों के गढ़ में। ईसाई और नास्तिक कॉम्युनिस्ट-मार्क्ससिस्ट उन्हें सिखाएँगे क्या? यही तो सीखेंगे, जो सीखा है हमारी प्यारी मंजरी काट्जू ने!

क्योंकि उसके पास कोई धर्म ही नहीं है

कॉम्युनिस्ट-मार्क्ससिस्ट को आसानी से पहचानना मुश्किल है। नेहरु ने उसे एक नया नाम दे दिया था - धर्मनिरपेक्ष, क्योंकि उसके पास कोई धर्म ही नहीं है। उसका धर्म होता है धन और सत्ता चाहे उसे कैसे भी हासिल किया जाए।

क्योंकि उसे स्वयं हिंदू समाज में ब्राह्मण के स्थान पर अधिकार जमाना है

धर्मनिरपेक्षता की आड़ में यह कॉम्युनिस्ट-मार्क्ससिस्ट बुद्धिजीवी हिंदू समाज में ब्राह्मण की छवि को सतत मलिन करने की चेष्टा में लगा रहता है, क्योंकि उसे स्वयं हिंदू समाज में ब्राह्मण के स्थान पर अधिकार जमाना है।

वे हर एक उस कोशिश में लगे रहते हैं कि

हिंदू समाज में ब्राह्मण हुआ करता था अन्य वर्णों का अध्यापक एवं दिग्दर्शक। उसी स्थान

की होड़ में परोक्ष रूप से लगे रहे हैं, ये आज के कॉम्युनिस्ट-मार्क्ससिस्ट बुद्धिजीवी एवं कॉम्युनिस्ट-मार्क्ससिस्ट प्राध्यापक-प्राध्यापिकाएँ। यही कारण रहा है कि वे हर एक उस कोशिश में लगे रहते हैं, कि किस प्रकार से ब्राह्मण का स्थान हिंदू समाज में एक अवांछित स्थान बना दिया जाए।

आरंभ की थी यह प्रक्रिया 16वीं शताब्दी में

ईसाई मिशनरी सेंट ज़ेवियर ने आरंभ की थी यह प्रक्रिया 16वीं शताब्दी में (इस विषय में विस्तार से हमारी अन्य पुस्तकों में) जिसे पूरे ज़ोर शोर के साथ आगे बढ़ाया 20वीं शताब्दी के कॉम्युनिस्ट-मार्क्ससिस्ट बुद्धिजीवियों ने।

वह अंदर ही अंदर, धीरे-धीरे कितना हिंदू-विरोधी बनता जा रहा है

कॉम्युनिस्ट-मार्क्ससिस्ट बुद्धिजीवी कहता है अपने आप को धर्मनिरपेक्ष, पर वह है नहीं धर्मनिरपेक्ष। वह उसका मुखौटा है। भगवान को वह मानता नहीं। हिंदू को वह अपना सबसे पहला शत्रु मानता है पर स्पष्ट रूप से कहता नहीं कभी।

इसलिए हम नहीं जान पाते कि वह प्रत्येक नई हिंदू पीढ़ी को कैसे थोड़ा और हिंदू-विरोधी बनाता जाता है। जो बनता है वह स्वयं भी नहीं जानता, कि वह अंदर ही अंदर, धीरे-धीरे कितना हिंदू-विरोधी बनता जा रहा है।

कॉम्युनिस्ट होने के लिए यह आवश्यक नहीं कि आप कॉम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य हों। आपकी सोच कॉम्युनिस्ट हो, इतना ही पर्याप्त है।

इन लक्षणों को अनदेखा न करें

यही सोच पहले आपको अ-हिंदू बनाता है और जैसे-जैसे इस सोच का प्रभाव आपके मानसपटल पर गहरा होता जाता है, त्यों-त्यों आप अधिकाधिक हिंदू विरोधी बनते जाते हैं। आप संभवतः लक्षणों को पहचान नहीं पाते। अपनी संतानों में ईश्वर के प्रति अविश्वास अथवा अवहेलना की भावना को देखिए। आप इसे अनदेखा करते जाते हैं। आप समझते हैं कि ये आज के बच्चे हैं, इसलिए ऐसा सोचते हैं। बड़े होंगे, बूढ़े होंगे तो स्वयं ईश्वर को मानने लगेंगे। इस ग़लतफ़हमी में मत रहिए।

ये मार्क्ससिस्ट बुद्धिजीवी इस बात का ढिंढोरा नहीं पीटते

वे आम कॉम्युनिस्ट की जानी-पहचानी ज़बान नहीं बोलते जैसे कि 'पूँजीपति' 'सामंतवादी' इत्यादि, पर इसका अर्थ यह नहीं कि उनकी सोच कॉम्युनिस्ट-मार्क्ससिस्ट नहीं। सभी धर्म भगवान को किसी न किसी रूप में मानते हैं। एक कॉम्युनिस्ट-मार्क्ससिस्ट है जो भगवान के अस्तित्व को नहीं मानता। पर वे इसका ढिंढोरा नहीं पीटते क्योंकि वे जानते हैं कि उन्हें इस हिंदू बहुल समाज में रहकर अपनी धाक जमानी है।

ISBN 81-89746-03-0 पुस्तक क्रमांक 03 संस्करण 07

उनके आचरणों को देखिए, जिनके पीछे उनकी सोच झलकती है

हमारे देश में ये अपने आप को कॉम्युनिस्ट-मार्क्सिसिस्ट न कहकर धर्मनिरपेक्ष कहते हैं, क्योंकि यह शब्द सुनने में अधिक आदरणीय लगता है। धर्मनिरपेक्ष कह कर ये यह जताना चाहते हैं कि वे धार्मिक सोच जैसी संकुचित मनोवृत्ति से ऊपर हैं! उनके आचरणों को देखिए, जिनके पीछे उनकी सोच झलकती है। उनकी सोच में आपको सभी धर्मों के प्रति समभाव न मिलेगा।

नकाब के पीछे छुपे उनके चेहरे को पहचानिये

बहुधा बुद्धिजीवी, कलाकार, चलचित्र निर्देशक, साहित्यकार, राजनीतिज्ञ, प्राध्यापक, इत्यादि होने के कारण उनकी बोली मँजी हुई होती है पर बोली पर न जाएँ। उनके आचरण को देखें और उनकी सोच को पहचानें। ये आपकी संतानों को ग़लत रास्ते पर ले जा रहे हैं। जैसे-जैसे आपकी संतानें बड़ी होंगी, उनकी सोच और गहरी होती जाएगी। उनकी यह सोच फैलती जाती है, प्रभावित करती है अन्य लोगों को, अनेक माध्यमों से, उदाहरण के लिए - पत्र-पत्रिकाएँ, टीवी सीरियल, सिनेमा, टीवी वार्तालाप एवं बहस टीवी पर, साहित्य, इत्यादि। अतः सोचें आपको क्या करना है।

आज हिन्दू क्षत्रिय का कर्तव्य

हिंदू ब्राह्मण को अपनी बेड़ियाँ काट कर एक बार फिर उठ खड़ा होना होगा। उसे हिंदू युवा वर्ग का शिक्षक एवं मार्गदर्शक बनना होगा। हिंदू क्षत्रिय को इसमें सहायता करनी होगी, वैसे ही जैसे श्री राम ने की थी विश्वामित्र की! आज हिंदू क्षत्रिय को उठ कर बेड़ियों में जकड़े ब्राह्मण को मुक्त कराना होगा, ताकि वह पुनः बन सके हिंदू समुदाय का शिक्षक एवं मार्गदर्शक।

यदि ब्राह्मण न होता तो मैं सारे हिंदुओं को ईसाई बना चुका होता

"यदि ब्राह्मण न होता तो मैं सारे हिंदुओं को ईसाई बना चुका होता", ऐसा लिखा था सेंट ज़ेवियर ने सोसाइटी ऑफ़ जीसस को 16वीं सदी में। समय गुज़रता गया, ज़ेवियर-पुत्रों ने ब्राह्मण को बेड़ियों में जकड़ दिया और आगे चलकर नेहरु-पुत्रों ने ब्राह्मण के मुँह पर कालिख मल दी। ब्राह्मण मुँह छुपा बैठा, ज़ेवियर-पुत्रों ने हिंदू को ईसाई बनाया और नेहरु-पुत्रों ने हिंदू को कॉम्युनिस्ट बनाया।

आज क्षत्रिय को अपना क्षात्र-धर्म निभाना होगा

आज यदि हिंदू फिर से हिंदू बनना चाहे तो उसे ब्राह्मण को उसका खोया सम्मान देना पड़ेगा। हिंदू इतिहास हमें बताता है कि क्षत्रिय ही ब्राह्मण का रक्षक हुआ करता था - भूल गए श्री राम को? आज उस क्षत्रिय को अपना क्षात्र-धर्म निभाना होगा। यदि क्षत्रिय चूकेगा

तो एक ब्राह्मण को परसा हाथ में लेकर परशुराम बनना पड़ेगा। इस बार वह परशुराम क्षत्रियों का नहीं, बल्कि ज़ेवियर-पुत्रों एवं नेहरु-पुत्रों का संहार करेगा। इस लिए हिंदू क्षत्रिय तुम्हें भी आज जागना होगा, हिंदू मर्यादा की रक्षा के लिए क्योंकि परसा उठाना ब्राह्मण की मर्यादा को नष्ट करेगा।

हमारे न्यायाधीश निर्णय लेने से कतराते क्यों हैं?

हमारे न्यायाधीश भी इसी अँग्रेज़ी-ईसाई शिक्षा पद्धति की देन है। यह हिंदू विरोधी मनोवृत्ति - यही कारण है कि ईसाई स्कूलों में शिक्षित और धर्मनिरपेक्ष (मार्क्ससिस्ट) प्रॉफ़ेसरों के शिष्य, हमारे ये आधुनिक न्यायाधीश, निर्णय लेने से इतने कतराते हैं क्योंकि यदि ईमानदारी से निर्णय लेंगे तो, उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर, उन्हें हिंदुओं के पक्ष में ही निर्णय लेना पड़ेगा। अतः वे आसान रास्ता चुनते हैं - निर्णय ही न लो - कोई हमें बेईमान तो न कह सकेगा। उनकी ईसाई शिक्षा उन्हें यह नहीं सिखाती कि अपने कर्तव्य के प्रति बेईमानी भी एक प्रकार की बेईमानी ही हुआ करती है।

क्या हम हिंदुओं के पास इतना भी धन नहीं?

नगरपालिका के ख़राब हालत स्कूलों को न गिनें, तो आप देखेंगे कि आज अधिकतर हिंदू बच्चे ईसाई स्कूलों में जाते हैं, चाहे वे कैथोलिक ईसाई स्कूल हों या प्रोटेस्टेंट ईसाई स्कूल। क्या हम हिंदुओं के पास इतना भी धन नहीं कि हम सारे देश में, प्रत्येक स्थान पर, एक अच्छे हिंदू विद्यालय की स्थापना कर सकें जहाँ हमारे बच्चे हिंदू संस्कृति सीखें, हिंदू जीवन मूल्यों के साथ चल कर और पल कर बड़े हो सकें?

हम क्यों कायल हों अंग्रेजी के इतना?

क्या यह आवश्यक है कि हम अँग्रेज़ी के बिना जी नहीं सकते? एक वर्ष पहले मैं योरप (वेनिस) गया था। कोई बिरला ही मुझे मिलता जो अँग्रेज़ी बोलता। उन्हें परवाह तक नहीं कि वे अँग्रेज़ी नहीं बोल पाते। वे अपने इटैलियन होने पर गर्व महसूस करते हैं, उन्हे अँग्रेजों व अँग्रेजी से कोई प्रेम नहीं। जापान में जाइए, चीन में जाइए, उन्हें भी अँग्रेज़ी नहीं आती। वे हम से कुछ कम तो नहीं किसी माने में। जर्मनी, फ़्रांस में रहने वाले लोगों को अँग्रेज़ी बोलनी नहीं आती पर वे अँग्रेज़ों से कुछ कम तो नहीं। उन्हे कोई नीची दृष्टि से देखता तो नहीं। तो हम क्यों कायल हों अँग्रेजी के इतना?

भाषा हमारी सोच व भावनाओं को दिशा देती है

आपके बच्चे जब अपनी मातृभाषा में सोचेंगे तो उनका मानसिक विकास बेहतर होगा। पराई भाषा में सोचने की चेष्टा से मानसिक योग्यताएँ कुंद हो जाती हैं। पराई भाषा में सोचने से व्यक्ति पराई संस्कृति का दास हो जाता है। भाषा का प्रभाव होता है हमारे

 ISBN 81-89746-03-0 पुस्तक क्रमांक 03 संस्करण 07

मस्तिष्क पर, भाषा हमारी सोच व भावनाओं को दिशा देती है, हमारी संस्कृति व हमारे जीवन मूल्यों को प्रभावित करती है।

पर हो अँग्रेज़ रुचि से, सिद्धांतों से, आचरण से, विचारों से

मैकॉले जिसने नींव रखी थी भारतवर्ष में वर्तमान शिक्षा पद्धति की, एवं वर्तमान न्याय-प्रणाली की, सन 1835 में, उसने लिखा था -

"हमें तैयार करनी है एक ऐसी फ़सल (हिंदुस्तानियों की), जो हो खून और चमड़ी से तो हिंदुस्तानी, पर हो अँग्रेज़ रुचि से, हो अँग्रेज़ सिद्धांतों से, हो अँग्रेज़ आचरण से, हो अँग्रेज़ विचारों से।" ISBN 81-85990-52-2 पृष्ठ 169

देखा जाये तो आज का पढ़ा-लिखा हिंदू वैसा ही बन गया है, जैसा कि चाहा था मैकॉले ने। जो पूछते हैं कि मुसलमान क्यों नहीं बना वैसा, उनके लिए है निम्नोक्त टिप्पणी -

मुसलमान और ईसाइयों के बीच छत्तीस का आँकड़ा रहा है। वे यूरेशिया में सदियों से एक-दूसरे के खून के प्यासे रहे हैं। इस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के कारण, वे ईसाइयों की 'जात' को अच्छी तरह पहचानते थे। उन्होंने अंग्रेजी-ईसाई-मिशनरी शिक्षा-पद्धति को भाव नहीं दिया, और मदरसों के बल पर चलते रहे। मुसलमान चूँकि मुट्ठी भर थे, उन पर समय बरबाद करना, अंग्रेजों ने बुद्धिमानी न समझी, और उन्होंने अपनी नजरें हिन्दुओं पर गड़ाई। अंग्रेज यह भी जानते थे कि, तुलनात्मक दृष्टि से, हिन्दू बहुत उन्नत था विद्या, बुद्धि, ईमानदारी, व विश्वसनीयता में। वे यह भी जानते थे, कि हिन्दू नमक-हरामी नहीं करता। अंग्रेज मुसलमानों के इतिहास से अच्छी तरह से वाकिफ थे, और वे भली भाँति जानते थे, कि नमक-हरामी की कला में वे, स्वयं ईसाई-अंग्रेजों से, कोई कम निपुण न थे। इन कारणों से, उन्होंने मुसलमानों पर यह पैंतरा आजमाना न चाहा। पर हिन्दू को ईसाई की 'जात' का कोई तजुर्बा न था। वह शिकार बन गया। अंग्रेजों ने प्राचीन हिंदू शिक्षा-पद्धति को जड़ से उखाड़ फेंका, बड़े ही योजनाबद्ध तरीके से (विवरण - पुस्तक 07)। हिन्दू के पास कोई चारा नहीं रह गया, इसके सिवा कि वह ईसाई-अंग्रेजी शिक्षा-पद्धति को अपना लेता, अन्यथा उसे मुसलमानों के स्तर पर पहुँच जाना पड़ता। वह नहीं जानता था कि ईसाई-अंग्रेजों की असली नीयत क्या है (विवरण - पुस्तक 07)। यह स्पष्टीकरण उन लोगों के लिए आवश्यक था, जो हिन्दू होकर, हिन्दू को कोसते हैं, कि हिन्दू क्यों अंग्रेज-जैसा बन गया, जबकि मुसलमान इस असर से अछूता-सा रह गया। ऐसे, विद्वान-हिन्दुओं में यह हीन-भावना इतनी कूट-कूट कर भर चुकी है, कि उन्हें हिन्दुओं में ही सारे दोष नजर आते हैं। उन्हें इस बात का एहसास तक नहीं होता है, कि वे स्वयं ठीक उसी प्रकर से सोच रहे हैं, जैसा कि अंग्रेजों ने चाहा था, कि वे अंग्रेजों जैसा ही सोचें, और आम हिन्दुओं को नीची नजर से देखें। उन्हें अपनी मानसिक-गुलामी दिखाई नहीं पड़ती, क्योंकि अब वे पढ़-लिख कर आम हिन्दू से बहुत ऊपर उठ चुके हैं! ऐसे व्यक्ति चाहे अपने बारे में कितनी ही ऊँची राय क्यों न रखते हों, हिन्दू राष्ट्र को उसका खोया हुआ गौरव नहीं लौटा सकेंगे, जब तक वे अपनी सोच को नहीं बदल पाते। 14-11-2006

हिंदू को हीन भावना से ग्रसित रखने की चेष्टा लगातार आज भी

उसकी थोपी गई ईसाई-अंग्रेज़ी शिक्षा पद्धति की पैदावार, प्रत्येक नई पीढ़ी के साथ अधिकाधिक क्रियाशील होती जा रही है एक विशेष उद्देश्य को अपने सामने रखकर। आजकल इस बात की चेष्टा निरंतर की जाती है कि एक साधारण हिंदू अपने अतीत की

ओर देखे तो उसे गौरवशाली कुछ न मिले, उसे केवल हिंदू धर्म की बुराइयाँ ही नज़र आयें। इसके लिए मीडिया का बखूबी प्रयोग हो रहा है। हिंदू को हीन भावना से ग्रसित रखने की चेष्टा लगातार की जा रही है।

अपने प्राचीन जीवन मूल्यों की ओर लौटें

हम यदि आज इन पश्चिम के हिमायतियों को निकाल फेंके और अपने प्राचीन जीवन मूल्यों की ओर लौटें तो न केवल हम अपना ही उद्धार कर सकते हैं, अपितु हम पश्चिम को भी दिशा दे सकते हैं। इसके लिए आवश्यकता है आज राष्ट्रीय भावना की, अपने अतीत के प्रति एवं अपनी परंपराओं के प्रति दृढ़ विश्वास की और उन्हें पुनः पाने की सतत चेष्टा की।

हमारे आज के दिग्दर्शक, हमें कहते हैं

हमारे आज के दिग्दर्शक, हमें कहते हैं कि, अपने बीते हुए गौरव को भूलकर, हमें अपने इस वर्तमान को सुधारने की चेष्टा करनी चाहिए। क्या वे चाहते हैं कि हम अपने वर्तमान को सुधारें उनकी तरह झूठा व बेईमान बनकर, जिसकी केवल कुछ ही झलकियाँ आपने देखीं इस पुस्तक में?

किस प्रकार जनता की नज़र अपने कारनामों पर पड़ने नहीं देते

आगामी पुस्तकों में पढ़िए इनकी बेईमानी का नंगा नाच। इनके साथ बड़े-बड़े नाम जुड़े होते हैं और उस नाम की आड़ में छुपी होती है उनकी बेईमानी, हिंदू समाज के विरुद्ध षड़यंत्र की कहानी। ये राजनीतिज्ञों को बदनाम करते रहते हैं (जो पहले से ही बड़े बदनाम हैं) और इस प्रकार जनता की नज़र अपने कारनामों पर पड़ने नहीं देते।

ये धूर्त दिग्दर्शक अपनी वर्तमान महत्ता खो बैठेंगे

आज का वह हिंदू जो अपने ऐतिह्य को न जानेगा, अपनी जड़ को न पहचानेगा, वह इनकी तरह ही बनेगा! हमारे आज के ये दिग्दर्शक मूर्ख नहीं हैं, बल्कि नंबरी धूर्त हैं। वे जानते हैं कि यदि हम अपने गौरवशाली अतीत को जानेंगे, तो हम उसे पुनः प्राप्त करने की चेष्टा करेंगे, और इस चेष्टा में ये धूर्त दिग्दर्शक अपनी वर्तमान महत्ता खो बैठेंगे।

कहाँ गई हमारी राष्ट्रीयता की भावना?

आज हम भारतीयों में राष्ट्रीय भावना की इतनी कमी है। कोई अँग्रेज़ी का समाचार पत्र उठा कर देख लीजिए। कोई समाचार न मिलेगा जिसमें गर्व झलकता हो हमारी राष्ट्रीय उपलब्धियों के प्रति। केवल बुराइयाँ ही पढ़ने को मिलती हैं।

ये पंक्तियाँ लिखी गई थीं सन 2002 में एवं उन दिनों के लिए ये पंक्तियाँ पूरी तरह से लागू होती थीं

ISBN 81-89746-03-0 पुस्तक क्रमांक 03 संस्करण 07

क्यों होता है ऐसा?

और हम आशा भी क्या कर सकते हैं जो ये ईसाई और कॉम्युनिस्ट-मार्क्ससिस्ट सिखाएँगे हमारे बच्चों को? ये समाचार पत्रों के संवाददाता एवं संपादक भी तो वहीं की पैदावार हैं। हमारे न्यायाधीश भी इसी शिक्षा पद्धति की देन हैं।

बुद्धिजीवी चांडाल, जिसकी अपनी कोई पहचान नहीं

"एक पीढ़ी अँग्रेज़ी शिक्षा की काफ़ी है, हमें अपने संस्कारों से तोड़ कर, एक ऐसे व्यक्तित्व को जन्म देने की, जो एक बुद्धिजीवी चांडाल की तरह होता है, जिसकी अपनी कोई पहचान नहीं होती, और जो न तो पूर्व का होता है, न पश्चिम का, न अतीत का न भविष्य का! हमारे देश की समस्त समस्याओं में से शिक्षा की समस्या सबसे कठिन व सबसे दुःखद है।" ISBN 81-85990-52-2 पृष्ठ 188 उद्धृत डॉ आनंद कूमारस्वामी

हिन्दू विद्यालयों की एक शृंखला सारे भारतवर्ष मे

क्या हम हिन्दुओं के पास इतना भी धन नही रह गया कि हम हिंदू संस्कृति एवं हिंदू जीवन मूल्यों के आधार पर विद्यालयों की एक ऐसी शृंखला सारे भारतवर्ष मे जाल की तरह बिछा सकें जिससे हिन्दू बच्चों को ईसाई स्कूलों में पढ़ने के लिए जाना न पड़े? सोच कर देखिए।

ये हमारे बच्चों के सोच की रक्षा करेंगे

हम हिंदुओं को मंदिर बनाने पर खर्च करना चाहिए क्योंकि ये मंदिर हमारी आत्मा को शांति देते हैं। पर हमें हिंदू विद्यालयों एवं हिंदू विश्वविद्यालयों की स्थापना पर भी धन खर्च करना चाहिए क्योंकि ये हमारे बच्चों के सोच की रक्षा करेंगे। हमारे बच्चे हिंदू संस्कृति व हिंदू जीवन मूल्यों से बहुत दूर चले जा रहे हैं। उनकी सोच, उनकी भावनाएँ अनुचित दिशाओं में चली जा रही हैं।

जिसका स्थायी प्रभाव हो

दूरदृष्टि के अभाव में, हमारे हिन्दू प्रमुख आज उन मुहिमों पर अपना ध्यान जमाये हैं जो उनके लिए निकटतम महत्व की हैं। उदाहरण के लिए शिव के त्रिशूल की दीक्षा या फिर परशुराम के परशु की दीक्षा। ये वस्तुएँ अपने-अपने ढंग से हिन्दू जागरण के लिए कार्य करेंगी। पर इनका कोई स्थायी प्रभाव न होगा। शिक्षा पद्धति एवं जीवन मूल्यों के प्रति समर्पण जो हमारे आंतरिक चरित्र को बनाती हैं उनकी ओर ध्यान देना बहुत ही आवश्यक है!

8 - आपको आश्चर्य तो होगा जानकर

कहाँ गई उन धर्मनिरपेक्षता के ठेकेदारों की आवाज़ जब सऊदियों ने मस्जिद मदरसा तोड़ा, जब पाकिस्तान सरकार ने मस्जिद तोड़ा, जब चीन की सरकार ने मस्जिद तोड़ा, जब इज़रायल सरकार ने मस्जिद तोड़ा, जब बर्मा के बौद्धों ने ढेरों मस्जिद मदरसे तोड़े?

तुलना कीजिये इन तथ्यों की उन सच्चाइयों से

हिंदुओं ने तो केवल एक मस्जिद के नाम का ढाँचा गिराया था, वह भी वर्षों के अन्याय को चुपचाप सहते रहने के बाद - अन्याय जो यवनों ने किया, अन्याय जो राष्ट्र की स्वतंत्रता के पश्चात धर्मनिरपेक्षता की आड़ में हमारे अपनों ने किया, अन्याय जो हमारी न्यायालयों ने किया अपनी अकर्मण्यता के कारण।

वह भी एक नाममात्र के मस्जिद के लिए जहाँ पिछले 57 वर्षों से न तो नमाज़ पढ़ी गई न उसका मस्जिद के रूप में प्रयोग किया गया, अपितु 44 वर्षों से वह इमारत हिंदू मंदिर के रूप में प्रयोग में लाई जाती रही और उस ढाँचे को एक हिंदू मंदिर का उचित स्वरूप देने के लिए गिराया गया।

यह तो दस वर्ष पुरानी बात है, अब तुलना कीजिए इन तथ्यों की, निम्न लिखित सच्चाइयों से, जो हाल ही की हैं।

सऊदियों ने मस्जिद व कुरान स्कूल को ढहा दिया

दो वर्ष ही बीते हैं। 12 दिसंबर 2001 की ही बात है।

"कोसोवा की शिया न्यूज़ ने सूचना दी कि सउदी वहाबी कर्मियों ने बुल्डोज़र लाकर ज़ाकोविका के मस्जिद व कुरान स्कूल को ढहा दिया।" विशाल शर्मा, पृष्ठ 5

विश्व के सबसे कट्टर मुसलमानों ने सोची समझी योजना के अनुसार

हमारे राम भक्तों ने तो जोश में आकर, सदियों के अन्याय का विरोध करते हुए, एक ढाँचे को गिराया जो मुस्लिमों के इबादत की जगह न रही थी, बल्कि हिंदुओं के पूजा का स्थान बन चुकी थी। पर यहाँ तो विश्व के सबसे कट्टर मुसलमानों ने, स्वयं बुल्डोज़र लाकर, सोची समझी योजना के अनुसार, एक वास्तविक मस्जिद एवं मदरसे को तोड़ा!

मुख्य मस्जिद को ढहा दिया राज्यपाल नूर मिसौरी ने

केवल डेढ़ वर्ष ही बीता है, जून 2002 की बात है।*"दक्षिण-पूर्व एशिया के स्वाधीन सुलु की राजधानी जोलो के मुख्य मस्जिद को ढहा देने की आज्ञा दी वहाँ के राज्यपाल नूर*

 ISBN 81-89746-03-0 पुस्तक क्रमांक 03 संस्करण 07

मिसौरी ने। यह मस्जिद उस द्वीप-प्रदेश का ऐतिहासिक चिह्न हुआ करता था जहाँ अतीत एवं वर्तमान के सभी परंपरागत नेता एवं नए सरकारी अधिकारी अपने धार्मिक संगठन का कार्य प्रारंभ किया करते थे।" विशाल शर्मा, पृष्ठ 5

क्या केवल हम हिंदुओं ने ठेका ले रखा है सब बलिदान करने का?

यहाँ हम देखते हैं कि एक प्रमुख मुसलमान अधिकारी एक बहुत ही महत्वपूर्ण मस्जिद को तोड़ने से न झिझका। तो फिर इतनी चिल्ल-पों क्यों? हमारे सर्वोच्च न्यायालय ने इसे राष्ट्रीय लज्जा की बात कहकर हिंदुओं को इतनी फटकार दी, पर न्याय न दिया, और 3,000 घंटे सोचने के बाद निर्णय न लिया, अपने वचन तक से मुक़र गए। अब कहाँ गई उनके अंतःकरण की आवाज़? क्या केवल हम हिंदुओं ने ठेका ले रखा है सब बलिदान करने का? ये न्यायाधीश जो हमें सीख देते हैं, उनके अपने आचरणों की झलक तो देखी ही है आपने इस पुस्तक में।

पाकिस्तान सरकार ने बनते मस्जिद को तोड़ा उपवन के लिए

कुछ ही महीनों पहले की बात है। *"इसी जनवरी में पाकिस्तान के समाचार पत्र द डॉन ने लिखा कि सरकारी अधिकारियों ने एक बनते हुए मस्जिद को तुड़वा दिया क्योंकि वह स्थान एक उपवन के लिए रखा गया था।"* विशाल शर्मा, पृष्ठ 5

यह सोच है हमारे आदरणीय? न्यायाधीशों की

मुस्लिम राष्ट्र पाकिस्तान में एक उपवन, एक मस्जिद से अधिक महत्व का हो सकता है, पर हम हिंदुओं के राष्ट्र में वह ढाँचा, जो 57 वर्षों से मस्जिद न रहा, हमारे श्री राम के जन्मस्थान से अधिक महत्व का हो गया! यह सोच है हमारे आदरणीय(?) न्यायाधीशों की।

क्योंकि वे चाहते थे इस सनातन सत्य को झुठलाने की

हमें संविधान न दिखाइए कि उसके अनुसार हम धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र हैं। वह संविधान जो इन्हीं हिंदू विरोधी लोगों ने लिखा या परिवर्तित किया, क्योंकि वे चाहते थे इस सनातन सत्य को झुठलाने की, कि जब तक मानव समाज की याददाश्त जाती है तब से यह भारत देश रहा है हिंदू राष्ट्र। कुछ अँग्रेज़ी पढ़े लिखे मैकाले-पुत्रों और मुस्लिम-ईसाई वोट के लोभी राजनीतिज्ञों की इच्छा से यह कुछ और नहीं बन जाएगा। यह रहेगा हिंदू राष्ट्र ही।

चाहे आपको शर्म आती हो

चाहे आपको शर्म आती हो यह कहने में, मुझे नहीं आती कि मैं हिंदू हूँ और यह मेरा देश है। हिंदू राष्ट्र जिसने पनाह दी मुसलमानों को, ईसाइयों को, और उन्हींने आगे चलकर छुरा भोंका हम हिंदुओं की पीठ पर, और इतिहास भी गवाह है इसका।

औरंगज़ेब ने जामा मस्जिद तोड़ा धन के लिए

औरंगज़ेब जिसने हिंदू मंदिरों को तुड़वाने का प्रण ले रखा था, जिसके कारण 18वीं सदी में सूरत से लेकर दिल्ली तक एक भी हिंदू मंदिर न बचा था, उसने क्या किया -

"औरंगज़ेब ने स्वयं गोलकुंडा के जामा मस्जिद को तुड़वा दिया। वहाँ का जागीरदार कर इकट्ठा करता रहा पर उसने उसे औरंगज़ेब के राजकोष में नहीं जमा कराया। उसने धन को ज़मीन में गाड़ दिया और उसके ऊपर एक आलीशान मस्जिद बनवा दिया। धन वसूल करने के लिए औरंगज़ेब ने जामा मस्जिद को तुड़वा दिया।" विशाल शर्मा, पृष्ठ 5

इन न्यायाधीशों के एवं इन राजनीतिज्ञों की सोच देखिए

जामा-मस्जिद का अर्थ है नगर की सबसे बड़ी एवं पुरानी मस्जिद जहाँ नमाज़ पढ़ी जाती है। डॉ हरदेव बाहरी, पृ 300

यहाँ हम देखते हैं कि धन जामा-मस्जिद से अधिक महत्वपूर्ण हो सकता है औरंगज़ेब जैसे कट्टर मुसलमान के लिए, पर एक ढाँचा जो 57 वर्षों से मस्जिद न रहा था, वह श्री राम के जन्मस्थान से अधिक महत्वपूर्ण हो गया, इन न्यायाधीशों के एवं इन राजनीतिज्ञों के लिए! यह तो है उनका विवेक वं उनका नीति ज्ञान, इस ईसाई शिक्षा पद्धति की सीख!

इब्न सऊद ने मदीना का प्रसिद्ध मस्जिद तोड़ा

"1920 में वहाबी शासन के इब्न सउद ने मदीना का प्रसिद्ध ज़नत उल बाक़ी मस्जिद को तुड़वा दिया।" विशाल शर्मा, पृष्ठ 5

ये आज के न्यायाधीश कहेंगे, चाहे उन्होने ने सदियों पहले गलती की हो, हम तो उसे नहीं दोहरा सकते, पर वे नहीं झिझकेंगे नई ग़लतियाँ स्वयं करने से, जो आज वे कर रहे हैं, हिंदू समुदाय के प्रति, अपने सतत अन्याय से।

चीनी सरकार ने मस्जिद तोड़ा तुर्किस्तान की माँग पर

दो वर्ष ही बीते हैं

"9-10-2001, चीनी सरकार के काराकाश ज़िले के अधिकारियों ने डोएंग मस्जिद तुड़वा दिया क्योंकि वहाँ के मुसलमान तुर्किस्तान की माँग करने लगे थे।" विशाल शर्मा, पृष्ठ 5

मुसलमान जहाँ भी रहते हैं चाहे चीन हो, कश्मीर या केरल

मुसलमान जहाँ भी रहते हैं उसे दार अल-इस्लाम (मुसलमानों का वतन) बनाने की उधेड़ बुन में लगे रहते हैं। भारत में वे पहले भी कर चुके हैं, और आज कश्मीर व केरल में भी यही हो रहा है। धीरे-धीरे वे हिंदुओं को काट कर फ़ेंके दे रहे हैं। चीन में भी उन्होनें वही चेष्टा की।

ISBN 81-89746-03-0 पुस्तक क्रमांक 03 संस्करण 07

"गुजरात में मुसलमानों को रहने व उनकी इबादत (पूजा) के लिए सिद्धराजा जयसिम्ह व उसके उत्तराधिकारी संरक्षण देते रहे। गुजरात के अनेकों नगरों में, मुसलमानों की संख्या और उनकी मस्जिदें बढ़तीं रहीं, जिसके साक्षी हैं अनगिनत शिलालेख, ख़ासकर खम्बाट, जूनागढ़ और प्रभासपतन, जिन पर तारीख़ें खुदीं हैं 1299 ईस्वी के पहले की, जबकि गुजरात मुसलमानों के आधिपत्य में आया 1299 ईस्वी के पश्चात, उलुघ ख़ान के आक्रमण के बाद। ऐसा लगता है कि दुकानदार, व्यापारी, नाविक और इस्लाम के धर्मप्रचारक संतुष्ट नहीं थे उससे, जो संरक्षण मिलता रहा उन्हें, हिंदू राजाओं के शासन-काल में। वे प्रतीक्षा करते रहे उस दिन की जब यह दार अल-हर्ब बन जाएगा दार अल-इस्लाम।" "दार अल-हर्ब" है काफ़िरों का वह राष्ट्र जिसके ख़िलाफ़ हर मुसलमान लड़ने को बाध्य है (कुरान और हदिस के अनुसार)। "दार अल-इस्लाम" है मुसलमानों का अपना वतन।

ISBN 81-85990-03-4 पृष्ठ 35-36

आवश्यकता से अधिक भले बनने की चाहत में

पर चीनी कॉम्यूनिस्ट चीनी मुसलमानों से ज़्यादा उस्ताद थे, हम हिंदुओं की तरह भले मानुष नहीं। हम भूल जाते हैं कि भला होना ही पर्याप्त नहीं, भले होने के पीछे ठोस कारण होना चाहिए। आवश्यकता से अधिक भले बनने की चाहत में हम अपना ही बुरा करते हैं।

मुसलमान ऐसा क्यों करते हैं?

मुसलमान ऐसा क्यों करते हैं यह जानना चाहें तो हमारी आगे की पुस्तकें पढ़िए जिनमें हम आपको बताएँगे कि क़ुरान व हदीस मुसलमानों को क्या सिखाते हैं।

भूल जाइए वह बकवास कि मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर करना। यह सत्य है हिंदुत्व के लिए, पर पूर्णतः असत्य है इस्लाम व ईसाईयत के लिए। उनके लिए सही कथन होगा मज़हब ही सिखाता है आपस में बैर करना। हालाँकि ईसाईयत में एक फ़र्क़ है, वह साथ ही साथ यह भी सिखाता है कि, करो कुछ और कहो कुछ और दिखाओ कुछ! बाईबल की सच्चाई बड़ी ढकी-छुपी सच्चाई है।

हमारे अदालत हमें इन बातों का पर्दाफाश करने की इजाज़त नहीं देते थे कुछ वर्षों पहले तक, जब चाँद मल चोपड़ा जी ने कलकत्ता उच्चन्यायालय में याचिका दायर की थी। पर आज समय बदल रहा है। हिंदू इतना लाचार तो आज नहीं, चाहे बँटा हुआ क्यों न हो! इसकी पूरी कहानी हम आपको बताएँगे आने वाली पुस्तकों के द्वारा, यदि आप जानना चाहेंगे तो।

तब तक सोचिए, ऐसा क्यों, कि सदियाँ गुज़र गई, पर वे बदले नहीं? कब तक आप अपने आप को धोखा देते रहेंगे, कि शायद वे बदल जाएँ? इतनी भलमनसाहत तो अच्छी नहीं, कि अपने पाँवों पर कुल्हाड़ी मार कर, दूसरों को अपने कंधों पर बिठाएँ!

बौद्धों ने बर्मा में ढेरों मस्जिद तोड़े

"बौद्धों ने बर्मा में ढेरों मस्जिद तोड़े। क्याइक्डोन - मस्जिद के अंदर का भाग व मुस्लिम स्कूल तोड़ा, मुसलमानों को निकाल दिया, यदि उन्होने बौद्ध धर्म स्वीकार न किया। गॉ बे - मस्जिद तोड़ा। नॉ बू - मस्जिद तोड़ा और सारे गाँव वालों को निकाल दिया। डे न्गा इन - मस्जिद तोड़ा। क्याउंग डॉन - मस्जिद तोड़ा पर गाँव वालों को रहने दिया। कनिन्बू - मस्जिद व मुस्लिम स्कूल तोड़ा।" विशाल शर्मा, पृष्ठ 5

और हमारे दिग्दर्शक कहते हैं हमें कि बौद्ध धर्म बड़े शांति और अहिंसा का धर्म है!

इज़रायेल सरकर ने बनता मस्जिद तोड़ा तनाव के कारण

"इज़राएल सरकार ने नाज़ारेथ में मस्जिद की नींव तुड़वा दी कारण यह मस्जिद ईसाइयों के धार्मिक स्थान के बहुत पास था जिससे ईसाइयों और मुसलमानों में तनाव बढ़ता जा रहा था।" विशाल शर्मा, पृष्ठ 5

क्या न्याय ईसाई के लिए अलग और हिंदू के लिए अलग?

क्या अंतर है अयोध्या और नाज़ारेथ में? ईसाई पोप नाज़ारेथ के पक्ष में और अयोध्या के विपक्ष में बोलते हैं। क्या न्याय ईसाई के लिए अलग और हिंदू के लिए अलग? यह कैसे धर्म गुरु हैं? बिना न्याय के आधार का धर्म?

सोनिया गांधी का युद्ध चलता ही रहेगा

जब बाबरी ढाँचा गिरा तब से 10 वर्ष बीत चुके हैं। उसके बाद भी विश्व के अन्य स्थानों पर कितने ही वास्तविक मस्जिद तोड़े गए। आज 25 जुलाई 2003 के समाचार पत्र बताते हैं, कि हमारी सोनिया गांधी कहती हैं, कि -

"जब तक बाबरी मस्जिद तोड़ने वालों को दंड नहीं मिल जाता तब तक हम चैन से नहीं बैठेंगे और हमारा युद्ध चलता ही रहेगा।" द फ्री प्रेस जर्नल 25-7-2003 पृ 1

अर्थात वे चाहती हैं कि लोग न भूल पाएँ इस झगड़े को। वे चाहती हैं कि लोग लड़ते रहें इस बात पर। वे हवा देना चाहती हैं इस समस्या को। वे हवा देना चाहती हैं इस समस्या को, जो दस वर्ष पहले बीत चुका है। उन्हें क्या मिलेगा इससे? मुसलमानों के वोट। वे बता रहीं हैं मुसलमानों को कि हम हैं तुम्हारे एकमात्र हमदर्द। चाहे सउदी अरब के मुसलमान तोड़ दें मस्जिद, चाहे पाकिस्तान, चीन, इज़राएल की सरकारें तोड़ें मस्जिद और कोई कुछ न कहे, पर हम हैं तुम्हारे साथ। हमारा सहारा लो, दस वर्ष पुरानी बात न भूलो, बस लड़ते रहो और हमें हमदर्द मान, अपना वोट देते रहो। इन्हें हम जनभक्त कहें या जनद्रोही? जनता ही बताए।

ISBN 81-89746-03-0 पुस्तक क्रमांक 03 संस्करण 07

उपसंहार

एक बार पुनः यह सिद्ध हुआ

इलाहाबाद उच्चन्यायालय के आदेश पर, ए-एस-आई (आकिऑलॉजिकल सर्वे ऑफ़ इंडिया - भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग) ने एक बार पुनः खुदाईयाँ की, और 25 अगस्त 2003 को अपना 574 पृष्ठों का रिपोर्ट इलाहाबाद उच्चन्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया। इस रिपोर्ट के अनुसार, उस विवादास्पद स्थान पर, एक पुरातन मंदिर का पाया जाना, एक बार फिर सिद्ध होता है। पर सुन्नी सेंट्रल वक़्फ़ बोर्ड ने इस पर विरोध प्रकट किया है।

कब तक चलता रहेगा यह खेल तमाशा

इस प्रकार यह खेल तमाशा चलता ही रहेगा, तब तक, जब तक न्यायालय सोचती रहेगी, और अपना निर्णय देने में, पहले की तरह टालमटोल करती रहेगी। न्यायालयों को बताएँ कि हम कर देते हैं अपने खून पसीने की कमाई से, जिसके बूते पर बैठे वे राज करते हैं उन न्यायालयों पर। उन्हें बताइए कि उनका भी कुछ कर्तव्य बनता है, उस जनता के प्रति, जिसका नमक खाते हैं वो।

प्रजातंत्र में हम वोट इसलिए देते हैं कि

प्रजातंत्र में हम वोट इसलिए देते हैं कि हमारी इच्छा का मान रखा जाये। हम किसी भी पार्टी को वोट नहीं देंगे क्योंकि किसी ने हमारी भावनाओं का मान नहीं रखा, ताकि ये राजनीतिज्ञ जानें कि वोट देना हमारी मजबूरी नहीं है। इस प्रक्रार हम अपना आक्रोश शांतिपूर्ण ढंग से एवं अवज्ञा का प्रदर्शन करते हुए भी कर सकते हैं। आवश्यक है कि हम सभी, बँट कर नहीं बल्कि एक जुट होकर, अपनी इच्छा-शक्ति का प्रदर्शन करें। और करोड़ों हिन्दू ऐसा तभी करेंगे जब उन करोड़ों तक यह बात पहुँचेगी। केवल तभी हमें इसमे सफलता मिल सकती है। यह विधि किसी काम न आयेगी यदि केवल कुछ ही व्यक्ति इसका प्रयोग करेंगे।

इन सभी राजनीतिज्ञों ने एक बात तो हमें स्पष्ट कर दी है, कि उनके वचन का कोई मूल्य नहीं। वह श्री राम जिन्होंने अपने नहीं, बल्कि अपने पिता के वचन का मान रखने के लिए, केवल अपना राज्य ही नहीं छोड़ा बल्कि 14 वर्ष का वनवास भी स्वीकार किया, उनका मंदिर ये राजनेता क्या बनायेंगे जिन्हें वचन का मोल ही नहीं मालूम।

हमें याद रखना चाहिए कि वोट देना हमारी मजबूरी नहीं है। अटल जी यदि अटल हैं कि उन्हें श्री राम से सत्ता अधिक प्यारी है तो इसका अर्थ यह तो नहीं कि आप सोनिया, मुलायम या लल्लू किसी को भी गद्दी पर बिठा देंगे? क्या यह आपकी मजबूरी है कि

आपको कोई भी राजा चलेगा? यदि ऐसी है मजबूरी तो श्री राम को भूल जाइए। ये राजा और ये रानी श्री राम के योग्य नहीं हैं। कब तक आप अलग अलग मोहरों को आजमाते रहेंगे? ये राजनीतिज्ञ वोट की कीमत तो जानते हैं पर वोट देने वाले की नहीं। अतः वोट देने वाले को उन्हें अपनी पहचान करानी होगी।

या फिर प्रत्येक हिंदू एक पोस्टकार्ड लिखे प्रधानमंत्री को कि उन्हें उसके वोट की आशा नहीं रखनी चाहिए यदि वे वोट देने वाले की भावनाओं की कद्र करना नहीं जानते।

कोई आपका मान नहीं करेगा तब तक जब तक

प्रत्येक हिंदू जब तक एकजुट न होगा तब तक ये सब राज करते रहेंगे प्रजातंत्र के नाम पर प्रजा का मान किए बिना। यह जानिये कि कोई आपका मान नहीं करेगा तब तक जब तक आपको स्वयं आभास न होगा अपनी छुपी हुई शक्ति का, वह शक्ति जो आती है एकजुट होने से।

आज का अर्जुन

आप अपने आप से पूछें

भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश कुरुक्षेत्र की युद्धभूमि में ही क्यों दिया, वन के किसी आश्रम में क्यों नहीं?

याद कीजिए

भूल गए हैं सम्भवतः, याद कीजिए गीता के इन निर्देशों को और फिर पूछिए अपने आप से - क्या ये कुछ कह रहे हैं आप से?

श्रीमद्भग्वद्गीता अध्याय 2 श्लोक 3

"हे पृथा के पुत्र अर्जुन, तुझे नामर्द नहीं बनना है। ऐसा तेरे लिए कतई योग्य नहीं है। हे परंतप, हृदय की इस तुच्छ दुर्बलता का त्याग करके अब तू युद्ध के लिए तैयार हो जा।"

श्रीमद्भग्वद्गीता अध्याय 2 श्लोक 38

"सुख दुख, लाभ हानि तथा जय पराजय को एक समान समझ कर युद्ध में लग जा। ऐसा करने से तुझे पाप भी नहीं लगेगा।"

ISBN 81-89746-03-0 पुस्तक क्रमांक 03 संस्करण 07

आज का अर्जुन

आज का अर्जुन वह प्रत्येक व्यक्ति है, स्त्री या पुरुष, जो अपने कर्तव्य को पहचानता है। वह कर्तव्य जो धर्म की रक्षा व अधर्म का नाश करने की प्रेरणा देता है।

आज का अधर्म

आज का अधर्म वह असत्य और अन्याय है जिसकी छवि आपने देखी इस पुस्तक में। आज अधर्मी है वह प्रत्येक व्यक्ति जो उस असत्य और अन्याय का प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से साथ दे रहा है।

याद रखें

जब तक आप में सत्य को पहचानने की इच्छा, उसे स्वीकार करने की मानसिक तत्परता एवं उसके पक्ष में खड़े होने की दृढ़ता न आयेगी, तब तक बहुत कुछ न बदल सकेगा।

आपको लड़नी होगी अपनी लड़ाई

अपने कर्तव्य को पहचानिये। समय को गुजरते जाने न दीजिए, इस आस में कि पहले कोई दूसरा खड़ा हो लड़ने के लिए, तब मैं जाऊँगा उसके पीछे। समय किसी के लिए नहीं ठहरता।

परिशिष्ट

आपका अगला कदम - ज्ञान आँखें खोलता है, आपको अपने कर्तव्य का बोध कराता है। आपको सही और गलत के बीच पहचान करने की योग्यता देता है, और सत्य के पक्ष में खड़े होने की क्षमता देता है। ज्ञान आपको सत्य की रक्षा करने के लिए कटिबद्ध करता है। परन्तु अधूरा ज्ञान आपकी क्षति भी कर सकता है। अधूरा ज्ञान आपको उत्तेजित कर सकता है, और आपको ऐसे कार्य की ओर प्रेरित कर सकता है जो हलचल तो मचा दे, पर कोई स्थायी समाधान न दे। अतः एक-एक कदम आगे बढ़ायें। अभी तो आपकी यात्रा आरम्भ हुई है। अनेक पड़ाव आने बाकी हैं।

प्रेरणा के स्रोत - अखिल भारत वैचारिक क्रांति मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष वयोवृद्ध आदरणीय श्री रवि कान्त खरे (जिन्हें लोग आदर से "बाबाजी" कह कर बुलाते हैं) 72 वर्ष की इस आयु में भी स्वयं उत्तर भारत के गाँव-गाँव में जाकर इन पुस्तकों का निःशुल्क वितरण करते हैं। उनके इस प्रयास की जितनी प्रशंसा की जाये वह कम है। उनके सहयोगी 82 वर्षीय श्री महेश चन्द्र भगत जी जहाँ भी जाते हैं, इन्हें लोगों तक पहुँचाते हैं।

बनवासी कल्यान परिषद की सुश्री शची रैरिकर अपने सहयोगियों के साथ "शबरी कुम्भ" (गुजरात

2006) में गईं, उस समय उपलब्ध पुस्तकों को लेकर, जिन्हें वहाँ आये हुए आदिवासियों ने बड़े आग्रह के साथ अपना धन देकर खरीदा। शची जी के इस योगदान का मैं अत्यंत आदर करता हूँ।

मुम्बई की एक गृहस्थ महिला ने पुस्तकें खरीदीं उन्हें अपने साहू समाज के लोगों के घर-घर तक पहुँचाने के लिए। यदि मैंने उनमे कुछ देखा तो वह थी उनकी अकृत्रिम सादगी। उन्होंने अपने उद्देश्य को बहुत ही सहज रूप में मेरे सामने रखा। उनके सामने कोई बहुत बड़े सपने नहीं थे। यदि कुछ था उनके पास तो (1) आत्मविश्वास (2) इस बात की प्रतीति कि आज समाज को इसकी आवश्यकता है (3) इस प्रयास के द्वारा वह अपने परिवार के लिए थोड़ा पैसा घर ला सकेंगी।

उनके इस प्रयास को मैं अत्यन्त सराहनीय मानता हूँ। आज यदि हमारे समाज में मातृ-शक्ति का पुनर्रुत्थान हो तो हमारे पावन धर्म को, एवं हमारी पावन संस्कृति को पुनर्जीवन मिल पायेगा। यह ईश्वर की महिमा है जो उन्होंने इस अनजान महिला को मुझ तक पहुँचाया। इन सबके पीछे ईश्वर की अदृश्य इच्छा है जो हम सभी घटकों को एक-एक करके साथ ला रहे हैं। हमें यह कार्य अपनी सफलता के लिए नहीं करना है, बल्कि इसे ईश्वर को समर्पित करते हुए करना है।

इनके अलावा अनेक ऐसे कर्मठ व्यक्ति हैं जिन्होंने इन पुस्तकों को अनेक प्रान्तों के विभिन्न व्यक्तियों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके नाम यहाँ अलग-अलग नहीं दिये गए हैं पर इसका अर्थ यह नहीं कि उन सभी के योगदान की महिमा इस कारण कुछ कम हो गई। पाठकों से निवेदन है कि इन सभी कर्म योगियों का अनुसरण करें एवं हमारे धर्म एवं संस्कृति की रक्षा हेतु कटिबद्ध हों।

आभार - मुम्बई के श्री आनन्द शंकर पाण्ड्या जी ने, एवं कैलिफ़ोर्निया के श्री नरेन्द्र देवदास ने, अपने खर्चे पर, भारतवर्ष के अनकहे इतिहास पर अँग्रेज़ी में लिखित पुस्तक क्रमांक 7 को, विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के पुस्तकालयों को भिजवाया।

श्री नेमीचन्द सिंघवी (नागौर, राजस्थान) एवं श्री त्रिलोकीनाथ गुप्ता (रायबरेली, उ प्र) ने पुस्तक क्रमांक 15 की एक-एक हजार प्रतियाँ अपने खर्चे पर छपवायीं, उन प्रतियों को अपने इलाके के लोगों में बाँट कर उनमें हिन्दू धर्म के रक्षार्थ जागृति लाने के पुनीत उद्देश्य से।

आप में से यदि कोई, किसी भी पुस्तक को, स्वयं स्थानीय रूप से छपवाना चाहें तो, प्रकाशक के स्थान पर मेरा नाम नहीं दे सकेंगे, एवं मेरे नाम से नियत की गई ISBN का प्रयोग नहीं कर सकेंगे। टाइपिंग में हुई, एवं प्रूफ रीडिंग में छूट गई, गलतियों का दायित्व भी आप पर ही होगा। आप चाहें तो, मैं आपको मुम्बई से छपवाकर भिजवा सकता हूँ। छपवाने एवं भेजने का खर्च आप मुझे अग्रिम भेज सकते हैं। पुस्तक लेखन, एवं प्रकाशन में, अनेक अन्य खर्च भी होते हैं, पर मैं उनकी माँग आपसे नहीं करूँगा, आप स्वेच्छा से यदि कुछ देना चाहेंगे तो वह स्वीकार्य होगा।

किसी भी प्रकार से, आर्थिक योगदान के इच्छुक व्यक्तियों से, मेरी प्रार्थना है कि धन का स्रोत स्वच्छ हो, जो मेरी दृष्टि में अत्यन्त आवश्यक है।

श्री आनन्द शंकर पाण्ड्या (मुम्बई); श्री नरेन्द्र देवदास (अमेरिका), श्री किरण अग्रहारा (अमेरिका), डॉ सत्यांशु कुण्डु (अमेरिका), श्री पन्ना लाल (अम्बाला); श्री चिराग गोधानिया (इंग्लैण्ड); श्री महेश चन्द्र (लखनऊ); श्री के राजगोपाल (कोयम्बटोर); श्री पी एस नायर (दुबई); श्री वसन्त पेंढारकर

 ISBN 81-89746-03-0 पुस्तक क्रमांक 03 संस्करण 07

(पुणे); प्रोफेसर रमेश दुदानी (मुम्बई) ने, अपनी-अपनी श्रद्धा के अनुसार, मेरे प्रयास में कुछ न कुछ, आर्थिक योगदान दिया है।

लेखन, प्रकाशन, संग्रहण तथा प्रेषण की प्रक्रिया मे अनेक प्रकार के खर्चे होते हैं। छपाई खर्च केवल उनका एक हिस्सा मात्र है। इन सब पर हुए खर्च का बोझ मैं स्वयं ही उठाता हूँ। इन सभी खर्चों का बोझ कुछ हद तक कम हो जाता है, इन सभी आर्थिक योगदानों से। अतः इन सभी व्यक्तियों के प्रति आभार प्रकट करना मेरे लिए स्वाभाविक ही है। हालांकि मैं जानता हूँ कि ये सभी व्यक्ति, बिन माँगे, सहायार्थ सामने आते हैं, ईश्वरीय इच्छा से प्रेरित होकर। अतः यह सब सामग्री ईश्वर को ही समर्पित है।

त्रुटियों के लिए क्षमा प्रार्थना - मेरे लेखन में यदि कोई त्रुटि पायें, तो समझें कि वह जानबूझ कर नहीं हुआ है, और उसे ठीक करने के लिए आप मुझे सदा तत्पर पायेंगे। प्रूफ-रीडिंग में भी गलतियाँ रह गई होंगी। कृपया गलतियों के बारे में मुझे सूचित करें। आभारी रहूँगा।

आपके पत्र पत्र लिखते समय कृपया लिखें कि आप तक मेरी पुस्तक कैसे पहुँची। पुस्तक क्रमांक अवश्य दें जो कवर पृष्ठ पर दर्शाया गया है। आपके पत्रों का, व्यक्तिगत रूप से उत्तर न भी दे सकूँ, तो क्षमा कीजिएगा। आप पत्र लिखते रहें, मैं पुस्तक लिखता और आप तक पहुँचाता रहूँगा।

अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद - आप में से यदि कोई व्यक्ति इस पुस्तक का किसी भी अन्य भारतीय भाषा में अनुवाद करने के इच्छुक हों तो कृपया मुझे लिखें. अनुवाद का सहज होना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि मेरा उद्देश्य इन्हें गाँव-गाँव तक पहुँचाना है. और सबसे महत्वपूर्ण यह है कि अनुवाद करते हुए मूलभाव में कोई परिवर्तन न किया जाये.

किस दृष्टि से देखा मैंने अन्य धर्मों को

मैं हिंदू पैदा हुआ - हिंदू हूँ - हिंदू ही मरना चाहूँगा। अपने इष्टदेव श्री सिद्धि विनायक गणपति को मैंने प्रत्येक स्थान पर पाया चाहे वह मंदिर रहा हो, या मस्जिद, या गिरजा। अपने पाकिस्तानी ड्राइवर मलिक के साथ मैं शारजाह के मस्जिद में गया और उसके बगल में बैठ कर अपने इष्टदेव को याद किया, जबकि उसने अपनी नमाज़ पढ़ी। तंज़ानियन-ओमानी हमूद हमदून बिन मुहम्मद के घर पर, उसके परिवार के साथ, एक ही बहुत बड़ी थाली में से, हम सभी ने एक साथ भोजन किया, उनके एक करीबी रिश्तेदार की मौत के बाद, मस्जिद से लौट कर। मुम्बई में एक कैथोलिक चर्च के "मास" के दौरान मैं गिरजे में मौजूद था। कैनेडा के एक प्रोटेस्टेंट चर्च में "सरमन" के समय मैं उपस्थित रहा। मुम्बई में यहूदियों के "सिनगॉग" एवं पारसियों के टेम्पल में मैं गया। कैनेडा में बौद्धों के एक मंदिर में मैंने मेडिटेशन किया। मैने यह सब किया एक हिंदू के रूप में जो यह मानता है कि (1) ईश्वर एक है (2) लोग उसे विभिन्न रूपों में अनुभव करते हैं और (3) प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्र है, अपने ढंग से उसे अनुभव करने के लिए।

अपने आप को भुलावे में रखा कि सभी धर्म समान हैं - एक हिंदू को यह "नहीं" सिखाया जाता कि केवल मेरा ईश्वर ही "सच्चा" ईश्वर है और बाक़ी सभी के ईश्वर "झूठे" ईश्वर हैं, जैसा कि

यहूदियों को सिखाया जाता है, ईसाइयों को सिखाया जाता है, और मुसलमानों को सिखाया जाता है। धरती के जिस किसी भी कोने में मैं रहा, मैंने सभी धर्मों को एक जैसा जाना, और माना। जाने कितने लोगों को मैंने नौकरी दी, पर कभी यह न सोचा कि वह हिंदू था, या मुसलमान था, या ईसाई था।

उन दिनों मेरी सोच धर्मों की भिन्नता की ओर न जाती क्योंकि मैं "अनजान" था। मैं जानता नहीं था कि विभिन्न धर्म क्या सिखाते हैं। मैं एक ऐसी काल्पनिक दुनिया में जीता रहा था जिसमें सभी धर्म "समान" हुआ करते थे। अभी भी मैंने उस कड़वी सच्चाई को न जाना था, क्योंकि मैंने इस बात की आवश्यकता कभी न महसूस की थी कि मुझे "स्वयं" विभिन्न धर्मों का अध्ययन करना चाहिए।

एक अज्ञानी के रूप में वस्तुतः मैं बड़ा "सुखी" था, उन ज्ञानियों पर पूर्णतया विश्वास कर जिन्होने मुझे उस "महान असत्य" का पाठ पढ़ाया था कि सभी धर्म "समान" हैं एवं "सभी धर्म प्रेम व शांति की शिक्षा" देते हैं। उन्होंने ऐसा क्यों किया? क्या वे स्वयं अज्ञानी थे, और उसी अज्ञान को, अपने अनुयायियों में बाँटते रहे थे? या फिर सत्य की प्रतीति थी उन्हें, पर किसी निहित स्वार्थ की पूर्ति हेतु वे असत्य को सत्य का रूप देते रहे थे?

फिर एक दिन हुआ सच्चाई से सामना - जीवन के पचास वर्ष बीत चुके थे, और तब जाकर मैं बैठा, विभिन्न धर्मों की शिक्षाओं का अध्ययन करने। मैंने पाया कि ये शिक्षाएँ बहुत ही स्पष्ट रूप से झलकती हैं, उन धर्मों के अनुयायियों की "सोच" में एवं उनके "आचरण" में। गहराई में गया तो मैंने जाना - किस प्रकार से प्रत्येक धर्म ने, मानव "इतिहास" एवं "वर्तमान" की घटनाओं को रूप दिया। मैंने देखा कि धर्म, इतिहास एवं वर्तमान की घटनाओं के बीच एक गहरा, और सीधा संबंध है। निष्कर्ष बहुत ही स्पष्ट था - हम इन जानकारियों को नज़र अंदाज तो कर सकते हैं, पर अपनी ही क्षति करके। जब तक मैं सत्य से अनजान रहा, तब तक बड़ा "सुखी" रहा। जब सत्य से सामना हुआ तो एक बवंडर उठा मेरी भावनाओं के क्षितिज पर। जब ज्वालामुखी शांत हुआ तब बहुत कुछ पीछे छूट चुका था।

किसी दल, किसी पंथ, किसी संस्था का सदस्य नहीं मैं - मैं "न" तो किसी संगठन का सदस्य हूँ, "न" किसी राजनैतिक दल का, "न" किसी धार्मिक पंथ का, "न" किसी सामाजिक संस्था का। मैं स्वतन्त्र ही भला हूँ। मैं किसी भी संस्था के बंधनों में अपने आपको जकड़ा हुआ पाना नहीं चाहता। "न" ही कोई अभिलाषा है मुझमें, राजनीति के दलदल में फँसने की। ख्याति की मुझे चाह नहीं, इसलिए जन सभाओं में भाग लेने की इच्छा नहीं, ख्याति प्राप्त लोगों से मिलने की उत्कंठा नहीं।

पारिवारिक पृष्ठभूमि - एक ऐसे परिवार में जन्मा था मैं, जहाँ "अध्यात्म एवं उच्च शिक्षा" का प्रचलन अनेक पीढ़ियों से रहा था। मेरे पिता स्वर्णपदक प्राप्त इंजीनियर थे। पितामह डॉक्टर थे। प्रपितामह शिक्षाविद् एवं लेखक थे। पितामह के पितामह, व्यवसाय त्याग कर, अपने जीवन के अंतिम काल में, संसार में रह कर भी, एक योगी बन गए थे। सभी के कुछ-कुछ अंश मुझे मिले। मातृपक्ष के पितामह एक जाने-माने शल्यचिकित्सक थे। अपने माता-पिता की प्रथम संतान होने के कारण, परंपरा के अनुसार, मेरा जन्म, मातृपक्ष के पितामह के घर, 25 जनवरी 1952 को बाँकुड़ा

 ISBN 81-89746-03-0 पुस्तक क्रमांक 03 संस्करण 07

(पश्चिम बंगाल) में हुआ था। इस प्रकार मैं एक "हिंदू बंगाली" परिवार में जन्मा, पला और बड़ा हुआ। श्री राम कृष्ण परम हंस देव का, अनन्य भक्त भी रहा था मैं।

शिक्षा एवं कार्य - विश्वविद्यालय की डिग्री एवं भारतवर्ष तथा विदेश से तीन प्रोफ़ेशनल योग्यताओं के आधार पर, मुझे कई देशों के निगमित क्षेत्र में उच्च स्तर पर, व्यापक प्रशासनिक कार्यभार सँभालने का अवसर भी मिला। इस बीच, 20 विभिन्न देशों के व्यक्तियों के साथ निकट संपर्क में कार्य करने का, एवं उन्हें जानने का भी, समुचित अवसर मिला। पचीस वर्षों तक अथक परिश्रम करने के पश्चात, अब मैंने कार्य निवृत्त होकर एकांत वास का आश्रय लिया है।

व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं की तृप्ति - श्री नारायण की दया से मेरे जीवन की "व्यक्तिगत" महत्वाकांक्षाएँ तृप्त हो चुकी हैं। अब मैं, अपने समय एवं परिश्रम के बदले में, कुछ भी नहीं चाहता। इस कारण, मैं कार्य में पूर्ण मनोयोग के साथ, एकांत ही चाहता हूँ।

किसके लिए है मेरा आज का यह कर्म - मेरा कार्य, केवल उन्हीं लोगों के लिए है जो इसकी महत्ता को पहचानने की योग्यता रखते हैं। मुझमें अब कोई इच्छा नहीं रही कि मैं उन व्यक्तियों को समझाने में अपना समय एवं अपनी ऊर्जा नष्ट करूँ जो मेरी बात को समझने की स्थिति तक अभी नहीं पहुँचे। ऐसे व्यक्ति, इन लेखों की महत्ता को तभी समझेंगे, जब पानी सर तक आ पहुँचेगा एवं डूबने की संभावना उन्हें बहुत ही "निकट" से दिखने लगेगी। फिर भी मुझे अपना दायित्व पूर्ण समर्पण की भावना के साथ निभाते जाना है, एवं उस कर्म को श्री नारायण को अर्पित करते हुए, आगे बढ़ते जाना है। आज यही मेरी "पूजा" है।

जो कर्म ईश्वर के निमित्त हो एवं ईश्वर को समर्पित हो,
उसे काल (समय) की परिधि में नहीं बाँधा जा सकता

संदर्भ सूची

क्रम - अंतर्राष्ट्रीय मानक पुस्तक क्रमांक ISBN [संस्करण] लेखक, शीर्षक

ISBN 0-8400-3625-4 [Pilot Books 1996] King James Version, *Holy Bible*

ISBN 019-565432-3 [2001] *The New Oxford Dictionary of English*

ISBN 81-7028-086-9 [2002] Hardev Baahri, *RaajPaal Hindi ShabdKosh*

ISBN 81-85990-03-4 [2000] Sita Ram Goel, *Hindu Temples: What happened to them Vol. II The Islamic Evidence*

ISBN 81-85990-21-2 [1995] Ishwar Sharan, *The Myth of Saint Thomas and the Mylapore Shiva Temple*

ISBN 81-85990-30-1 [1995] *The Ayodhya Reference: Supreme Court Judgment and Commentaries* (a) Arun Shourie, *Introduction* (b) *The Supreme Court Judgement* (c) Chief Justice M Rama Jois (Retd.), *On the Decision Not to Decide* (d) S P Gupta, *If Only the Court had Examined the Evidence*

ISBN 81-85990-52-2 [1998] N S Rajaram, *A Hindu View of the World - Essays in the intellectual Kshatriya Tradition*

ISBN 81-85990-75-1 [2002] Koenraad Elst, *Ayodhya: The Case against the Temple*

Mrs A S Beveridge, *Babur Nama* (Translation), Delhi, 1926, 1970 [as quoted in ISBN 81-85990-75-1 [2002] Koenraad Elst, *Ayodhya: The Case against the Temple*

M V Kamath, *Ayodhya: an unhappy refusal by Muslims*, The Free Press Journal, Mumbai, Editorial page, 17 July 2003

Manjari Katju, *Vishva Hindu Parishad and Indian Politics*, Orient Longman [Book Review by M V Kamath in The Free Press Journal, Mumbai edition, 30 March 2003, Spectrum p 6]

Vishal Sharma, *Babar's aberration haunts a millennium*, The Free Press Journal, Mumbai, July 17, 2003, Op-Ed page

The Times of India, Mumbai edition

The Free Press Journal, Mumbai edition

अन्य प्रकाशन

2003

01 Arise Arjun - Awaken my Hindu nation
02 Ayodhya Shri Raam Mandir - Facts that did not reach you all
03 राम मंदिर तुम्हें पुकारता

2004

04 Christianity in a different Light - Face behind the Mask
05 Gita Today - a different perspective
06 Judaism Christianity Islam Communism Hinduism
07 History of BhaaratVarsh in a new Light

2005

08 Popes Saints Cardinals Archbishops Bishops
09 Compact edition of Book 04
10 Volume II of Book 04
11 These documented Results of 4-Varn system can make you proud of your Hindu heritage
12 यदि सत्य का ज्ञान होता आपको - तो शायद आपकी सोच ही बदल जाती
13 Muslim BhaaratVarsh - expect this to happen to 'You' pretty soon
14 कुरआन मुसलमानों को क्या सिखाता है - और उसे जानना हिंदुओं के लिए कितना आवश्यक है

2006

15 मज़हब ही सिखाता है आपस में बैर करना - एक सनातन धर्म के सिवा
16 वे जो हिंदू देवी-देवताओं के बारे में इतनी गंदी-गंदी बातें कहते हैं - और आप हैं कि चुप्पी साधे बैठे रहते हैं (पुस्तक क्रमांक 08 का हिन्दी रुपान्तर - कुछ हिस्से)
17 **யூத மதம், கிறித்துவம், இஸ்லாம், கம்யூனிஸம், இந்துமதம்** (पुस्तक 06 तमिल में)
18 कहानी एक षड़यंत्र की - राम मंदिर के संदर्भ में (पुस्तक क्रमांक 02 का हिन्दी रुपान्तर)
19 हमारे बुद्धिजीवी, हमारी मीडिया, हमारे न्यायाधीष (पुस्तक क्रमांक 02 का हिन्दी रुपान्तर)
20 धरती माता का थोड़ा सा ऋण तो चुकाते जाइए - इस धरती से विदा लेने से पहले
21 Split edition of Book 04 (Part 1)
22 यहूदी धर्म, ईसाई धर्म, इस्लाम, कॉम्यूनिज़्म, हिंदू धर्म (खण्ड 1) (पुस्तक 06 का हिन्दी रुपान्तर)
23 Split edition of Book 01 (Part 1 Journey of Hindu society)
24 Split edition of Book 01 (Part 2 Frauds on Hindu society)
25 Religions Teach Hatred and Enmity - Sanaatan Dharm does not
26 पुस्तक क्रमांक 15 का मराठी रुपान्तर
27 आतंकवाद का एक अन्य पहलू, राष्ट्र का इस्लामीकरण

हिंदी में प्रकाशित पुस्तकों की सूचि -

"मज़हब ही सिखाता है आपस में बैर करना, एक सनातन धर्म के सिवा" पुस्तक क्रमांक 15 बाइबिल, कुरआन, वेद, उपनिषद एवं भगवद्गीता की कुछ झलकियाँ, जो आप में से अनेकों की सोच को बदल सकती है।

"कुरआन क्या सिखाता है मुसलमानों को और उसे जानना हिंदुओं के लिए कितना आवश्यक है" पुस्तक क्रमांक 14 कुरान की विस्तृत व्याख्या।

"यहूदी धर्म, ईसाई धर्म, इस्लाम, कॉम्यूनिज़्म, हिंदू धर्म" पुस्तक क्रमांक 22 लोकप्रिय धर्मों एवं पंथों की तुलना, एक नये दृष्टिकोण से, एवं नई व्याख्याओं के साथ (प्रथम खण्ड उपलब्ध है)।

"यदि सत्य का ज्ञान होता आपको तो शायद आपकी सोच ही बदल जाती" पुस्तक क्रमांक 12 ईसाई धर्म के सर्वोच्च धर्माध्यक्षों, ईसाई संतों, ईसाई धर्मगुरुओं के जीवन की वे सच्चाइयाँ जो आपको अचम्भे में डाल देंगी।

"वे जो हिन्दू देवी-देवताओं के बारे में इतनी गन्दी-गन्दी बाते कहते हैं, और आप हैं कि बस चुप्पी साधे बैठे रहते हैं" पुस्तक क्रमांक 16 ईसाई धर्माध्यक्ष, हिन्दू धर्म को किस दृष्टि से देखते हैं, और वे ऐसा क्यों करते हैं। ईसाई-अँग्रेज़ी शिक्षा-पद्धति में पढ़े पले-बड़े, मार्क्ससिस्ट सोच से प्रभावित, हमारी शिक्षा-पद्धति को दिशा देने वाले, किन गंदी नज़रों से हिन्दू धर्म कि ओर देखते हैं, और अपनी इस गन्दी सोच का कैसे प्रचार-प्रसार करते हैं, इसकी गाथा।

"धरती माता का थोड़ा सा ऋण तो चुकाते जाइए, जाने से पहले" पुस्तक क्रमांक 20 सनातन धर्म की रक्षा हेतु विद्यार्थियों, गृहस्थों, एवं सन्यासियों का दायित्व, आज के संदर्भ में।

"राम मंदिर तुम्हें पुकारता" पुस्तक 3 भावना+तर्क का संगम, "कहानी एक षड़यंत्र की" पुस्तक 18 "हमारे बुद्धिजीवी, हमारी मीडिया, हमारे न्यायाधीष" पुस्तक 19 तर्क प्रधान प्रस्तुति (अयोध्या से संबंधित वे सच्चाइयाँ जो आप सब तक नहीं पहुँची)।

"आतंकवाद का एक अन्य पहलू, राष्ट्र का इस्लामीकरण" पुस्तक क्रमांक 27 एक अलग नजरिए से देखें आतंकवाद के विषय को।

पुस्तक प्राप्ति के स्थान -

श्री रवि कान्त खरे (बाबाजी), DS-13 निराला नगर, लखनऊ 226 020 फोन 0522-2787083
श्री महेश चन्द्र लखनऊ मोबाइल 92355 52983
सुश्री शची रैरिकर इन्दौर मोबाइल 98935 67122
मानोज रखित मुम्बई 400 066 मो 98698 09012

PRINTED BOOK छपी हुई पुस्तक
वजन 100 ग्राम से कम डाक टिकट 1 रुपया

डाक टिकट

यहाँ चिपकायें

TO पुस्तक पाने वाले का नाम पता -

FROM पुस्तक भेजने वाले का नाम पता -

पुस्तक किसके अनुरोध पर भेजी गई -

ISBN 81-89746-03-0 पुस्तक क्रमांक 03 संस्करण 07